वर्ष-33, अंक-398

संपर्क भाषा भारती

वर्ष 1990 से प्रकाशित साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, दिसंबर—2023, RNI-50756

इस अंक में :

भारतीयता का मृदुल स्वर : मैथिली शरण गुप्त
कृष्ण बिहारी पाठक
समकालीन हिन्दी कहानियों में किन्नर विद्रोह
रामेश्वर महादेव वाढेकर
बबलगम जनता :
विनय विक्रम सिंह 'मनकही'
ज़िंदादिली की मिसाल : देवानंद
आकांक्षा यादव
कहानियाँ :
राजीव प्रकाश साहिर
तथा
श्यामल बिहारी महतो

60/-

आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

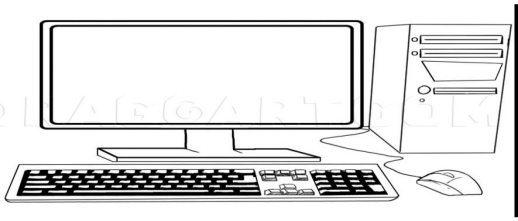

अपनी बात...

प्रिय समस्त!

डॉ गर्ग जी से पुत्र की यह कठिनाई देखी नहीं गई। उन्हों ने भरे मन से नोएडा का आवास बेच दिया। पुत्र ने कुछ पैसे का सहयोग किया तो पैंतीस-चालीस लाख का एक फ्लोर डिफेंस कॉलोनी में खरीदा। डॉ गीता आस्थाना से। डॉ गीता अस्थाना बीएचईएल में सीएमओ थीं। आजकल एस्कॉर्ट-फोर्टिस अस्पताल, दिल्ली में कार्य-रत हैं। डिफेंस कॉलोनी से उत्सव का गुरुग्राम तक सफर कुछ कम हो गया। पर परेशानी कम नहीं हुई। अंततः डॉ गर्ग जी को पुत्र उत्सव केलिए गुरुग्राम में ही शिफ्ट होना पड़ा। डिफेंस कॉलोनी से निकलते ही डॉ गर्ग का दिल्ली से संपर्क टूट गया। उनके सारे जानकार दिल्ली में छूट गए। जिस प्रिय पुत्र केलिए वे अपने संगी-साथी छोड़ कर गुरुग्राम के शहरी बीहड़ में बसे वह भी अच्छे कैरियर केलिए सिंगापुर जाकर बस गए। 'अभी बहू के भाई की शादी चेन्नई में थी। दिसंबर में। हम दोनों यहाँ से चेन्नई गए। उत्सव और बहू सिंगापुर से सीधे वहीं आगए थे। विवाह कार्यक्रमों के बाद हम उनके साथ ही सिंगापुर चले गए थे।' उन्हों ने मुसकुराते हुए बताया। टेबल पर आया सूप पी चुके थे, तभी फोन आया कि ड्राईवर आ गया है। मैंने भोजन कर के जाने को कहा किन्तु वे नहीं माने। कार में बैठने पर जब पैर छूए तो बोले 'फोन कर लिया करो!' अब डॉक्टर शेरजंग गर्ग जी की स्मृतियाँ ही शेष हैं.....उन्हें नमन!

इधर सुब्रत राय का बे-सहारा करके चला जाना : और ले जाना अपने साथ में तुगलकी 'सहारा' की फ़र्जी योजनाएँ.....और..... अंततः खुद को 'सहारा श्री' कहलवाने वाले धन-पशु जिसने गरीब निवेशकों को सब्ज़-बाग दिखला कर अरबों रुपये की विरासत खड़ी की प्राकृतिक न्याय के चलते दीर्घ कालिक पीड़ा प्राप्त करते हुए, खाली हाथ इस दुनिया से चला गया। 1980 का वह दौर मुझे याद हो आता है जब "सहारा' एक 8-10 पन्ने का टेब्लोइड अखबार हुआ करता था और सुब्रत राय का कारोबार एक चिट-फंड चलाने वाले निचले स्तर के कारोबारी के रूप में हुआ करता था जिसका अखबार महज़ एक मुखौटा था उसके कारोबार को छुपाए रखने को। समय चक्र कुछ ऐसा घूमा कि सामाजिक समता के नाम पर उत्तर प्रदेश में भ्रष्ट से भ्रष्ट सरकारों के बनने का दौर आया। सुब्रत राय के दिन फिर गए। गोरखपुर के इस जालसाज ने एक से एक शातिराना योजनाएँ आरंभ कीं। जाहिर है, इन योजनाओं के पीछे, भ्रष्ट राजनीतिज्ञों की काली कमाई का आश्वासन था। फिर क्या था, सुब्रत राय ने ड्राइंग रूम में बैठ कर अपने आकाओं की शाह पर ऐसे सब्ज़-बाग तैयार किए जिनमें राजनीतिज्ञों/अधिकारियों की धन और काम लिप्सा को संतुष्ट करना प्रमुख उद्देश्य रहा। उत्तर प्रदेश से परती खेतों, अनुपजाऊ ज़मीनों का सौदा कर के सहारा शहर बसाने का स्वप्न दिखा कर गरीबों से धन उगाहा गया। चिट फंड चलाने वाले और गरीबों के अथाह धन को हड़पने वाले इस धन पशु ने गरीबों के पैसों और भ्रष्टाचार के बल पर जहाज कंपनी खोल ली। राजनीतिज्ञों और अधिकारियों की कमाई को सही जगह खपाने का काम रियल-एस्टेट में आसानी से होता है, तो एक से बढ़ कर एक सहारा माल और सहारा बस्तियाँ बनने लगीं। सुब्रत राय, उस समय सरकार के 'सुपर बाज़ार' कोनसेप्ट (जिसे आधुनिक माल कहा जाता है) पर 'सहारा स्टोर' भी चलाना चाहता था जहां वह नमक, साबुन, दाल अरहर सब खुद उपजा कर बेचना चाहता था। वह, एनटीसी की तर्ज़ पर वस्त्र उद्योग में भी आना चाहता था। कंप्यूटर का युग देख कर उसने 1980-90 के दशक में पूरे-पूरे पृष्ठ का विज्ञापन देकर कंप्यूटर बनाने की इच्छा भी घोषित कर दी थी। सहारा टेब्लोइड अब बढ़ कर राष्ट्रीय सहारा बन गया जिसमें कमलेश्वर जैसों को इसने संपादक रखने की बात कर दी। उन दिनों मैं पत्रकारिता से अलग हट कर भेल में चला गया था। एक दिन मुझे कमलेश्वर जी के नाम से तार मिला, सुधेन्दु तुम्हारा इंटरव्यू राष्ट्रीय सहारा के लिए फलाने दिन गोपाला टावर, राजेंद्र प्लेस, नई दिल्ली में है, आ जाओ। उन दिनों भेल का हमारा कार्यालय राजेंद्र प्लेस में विक्रम टावर में हुआ करता था जो गोपाला टावर के समीप ही था। मात्र उत्सुकतावश दोपहर खाने के समय मैं वहाँ चला गया। मैं गलीच और अराजक हिन्दी पत्रकारिता में नहीं घुसना चाहता था। इसी के चलते बिहार की राजधानी पटना से, वहाँ के पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्रा द्वारा शुरू किए गए 'पाटलीपुत्र टाइम्स' में भी नहीं गया था। गोपाला टावर पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि कमलेश्वर जी राष्ट्रीय सहारा का एक भी अंक निकाले बिना यहाँ से चले गए हैं। मेरा उस इंटरव्यू में जाने का कोई अर्थ ही नहीं था। एक से बढ़ कर एक पाखंडी पत्रकारों का जमघट 'राष्ट्रीय सहारा' में लगा। मेरे मित्र रहे माधव कान्त मिश्र, शीलेश शर्मा और इलाहाबाद के निशीथ जोशी इस समाचारपत्र को धन्य-धन्य कर गए। इन सब की अपनी-अपनी अलग-अलग दास्तान है। खैर, मुख्य मुद्दे पर आते हुए, आज अखबार में पढ़ रहा हूँ कि सुब्रत राय की मृत्यु पर अमिताभ बच्चन से लेकर अखिलेश यादव और उन तमाम लोगों ने श्रद्धा सुमन फेंके हैं जिनकी राह में सुब्रत राय ने वेश्याओं के बदन फेंके थे। अमर सिंह तो पहले ही दिवंगत हो गए हैं। रामपुर का नकली नवाब जेल में है। अखिलेश के चाचा का बयान नहीं आया है। बहुजन वालों के यहाँ भी अभी चुप्पी है। सैफई का मुजरा स्थल सदा के लिए तवायफ़ों से महरूम हो गया। कुछ "सहारा श्री" का जयघोष करने वाले चाटुकार अभी भी उसका यश गा कर अपना ऋण चुकाएंगे। ये भूल कर के कि, कुत्तों के आगे उसने जो छीछड़े फेंके थे वे गरीबों की आशाओं के बदन के नुचे हुए लोथड़े थे। पर असली श्रद्धा के सुमन उन गरीबों की आहों में है जिनके 20 हज़ार करोड़ रुपये की वापसी अभी भी कल्पना में, अधर में है.....

निराला जी को स्मरण करते हुए, अबे सुन बे गुलाब.....

कहीं झरने, कहीं छोटी-सी पहाड़ी,
कही सुथरा चमन, नकली कहीं झाड़ी।
आया मौसिम, खिला फ़ारस का गुलाब,
बाग पर उसका पड़ा था रोब-ओ-दाब;
वहीं गन्दे में उगा देता हुआ बुत्ता
पहाड़ी से उठे-सर ऐंठकर बोला कुकुरमुत्ता-
"अबे , सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पायी खुशबु, रंग-ओ-आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा है केपीटलिस्ट!
कितनों को तूने बनाया है गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-घाम,
हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भागा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।
वरना क्या तेरी हस्ती है, पोच तू
कांटो ही से भरा है यह सोच तू
कली जो चटकी अभी
सूखकर कांटा हुई होती कभी।
रोज पड़ता रहा पानी,
तू हरामी खानदानी।

सादर,

सुधेन्दु ओझा
8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304
पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।
प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

संपर्क भाषा भारतीय

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

आशा शैली : शैलसूत्र त्रैमासिक पत्रिका —सम्पादन

इन्दिरा नगर-2, लाल कुआं, हल्द्वानी-263402 उत्तराखंड

फोन नंबर : 7055336168/9456717150

ईमेल : sha.shaili@gmail.com

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

दिसंबर—2023

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	सभा/समाचार		6-12
3	लघुकथा : असहज	नीना सिन्हा	12
4	भारतीयता का मृदुल स्वर : मैथिली शरण गुप्त	कृष्ण बिहारी पाठक	13-16
5	समकालीन हिन्दी कहानियों में किन्नर विद्रोह	रामेश्वर महादेव वाढेकर	18-21
6	कविता	सूर्य प्रकाश मिश्र	21
7	बबलगम जनता	विनय विक्रम सिंह 'मनकही'	23-24
8	कविता	प्रिय देवांगन 'प्रियू'	24
9	कविता	वाई वेद प्रकाश	24
10	कवितायें	केशव शरण	25
11	तगज्जल	रामानुज अनुज	27-28
12	कविता	विकास तिवारी	28
13	चिकित्सा और सामाजिक विज्ञान	डॉ रामरक्षा मिश्र 'विमल'	30-31
14	लघुकथा : सांत्वना	इन्दु सिन्हा 'इन्दु'	32
15	कविता	संघमित्रा राएगुरु	32
16	कविता	रवीन्द्र कुमार शर्मा /	33
17	कविता	डॉ वीरेंद्र प्रसाद	33
18	ज़िंदादिली की मिसाल : देवानंद	आकांक्षा यादव	35-37
19	स्वामी विवेकानंद जी को समर्पित...	गोवर्धन दास बिन्नाणी	39-40
20	हिन्दी : राष्ट्रभाषा और चुनौतियाँ	पद्मा अग्रवाल	42-43
21	कविता	डॉ राजीव गुप्ता/प्रिया देवांगन	44
22	किस्सा एक मुलाक़ात का	आशा शैली	45
23	कहानी : अंधा-धुंध, धुंध ही धुंध	राजीव प्रकाश साहिर	47-48
25	कहानी : प्यार का पहाड़ा	श्यामल बिहारी महतो	50-57
26	मनीषी साहित्य साधक : गणेश दत्त मिश्र 'मड़नेश'	शशिबिंदु नारायण मिश्र	59-64
27	माले की यात्रा	शील निगम	65-66
28	कविता	आलोक रंजन	66

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

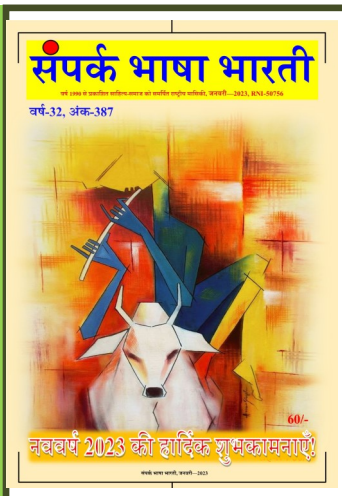

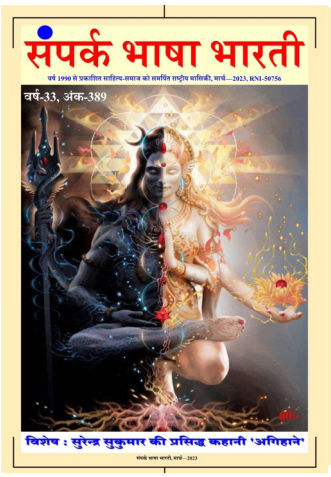

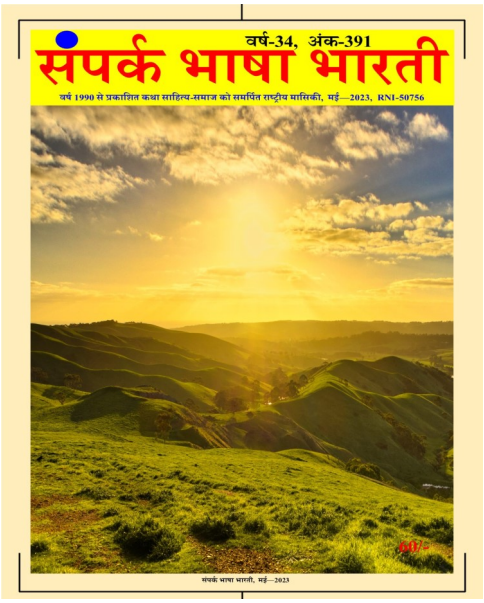

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

नवभारत निर्माण समिति, वाराणसी

"कीरति भनिति भूति भल सोई,
सुरसरि सम सबकर हित होई।"
- गोस्वामी तुलसीदास जी

यानी कीर्ति (यश), भनिति (साहित्य) और भूति (अस्तित्व) वही भली होती है जिसमें गंगा जी की तरह सबका भला निहित हो।

नवभारत निर्माण समिति, वाराणसी

भाषा, समाज, शिक्षा, विज्ञान एवं पर्यावरण, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तीकरण, साहित्य-कला-संस्कृति के व्यापक मूल्यों-सरोकारों को समर्पित सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था है।

2005 में स्थापित यह संस्था बीएचयू और वाराणसी-पूर्वांचल के कुछ युवा मित्रों की सामाजिक-सांस्कृतिक आदर्शों , स्वप्नों की पहल है।

स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक देश के सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक-वैज्ञानिक यानी संपूर्ण विकास में अपने हिस्से का योगदान करने और 'गिलहरी' प्रयत्नों के उद्देश्य से इसकी स्थापना हुई।

यह संस्था भारतीयता की वैचारिक भूमि पर जो कुछ भी मानवीय, सकारात्मक और प्रेरणास्पद है, उसको समर्पित सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था है।

"वसुधैव कुटुम्बकम" की सनातन सांस्कृतिक धारा के अंतर्गत जो भी मानवीय, सुंदर, मूल्यवान और सरोकार संपन्न है, वह हमारे लिए वरेण्य है।

साहित्य-समाज-कला-संस्कृति-विज्ञान-पर्यावरण जहाँ भी कुछ अच्छा, नया, जनहित, समाजहित, राष्ट्रहित में हो, मानवीय हो- वह सभी हमारे लिए प्रेरक है। हमारी चिंताओं, चिंतन और सरोकारों के अंतर्गत है।

संवाद में यकीन और यक़ीन की अलख जगाए रखना हमारी लोकतांत्रिक राह है।

वर्तमान में संस्था के 1000 से अधिक सदस्य-शुभचिंतक देश के विभिन्न भागों और विविध क्षेत्रों में सक्रिय हैं। समिति अपने सदस्यों, शुभचिंतकों की व्यक्तिगत साझेदारी युक्त संसाधनों-प्रयासों से सामर्थ्यभर
संचालित है।

गोमती देवी स्मृति पुरस्कार-सम्मान-

यह समिति अपने पुनीत सामाजिक-सांस्कृतिक-सरोकार संपन्न दायित्वों के अनुरूप स्त्री सशक्तीकरण, समाज-संस्कृति सरोकार एवं

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

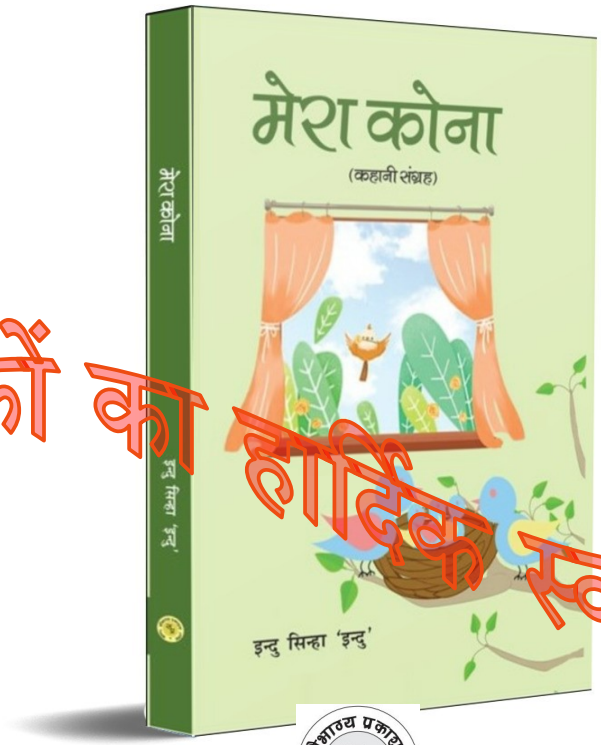

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

https://www.flipkart.com/mera-kona-stories-collection/p/itm39e77b17de76d?pid=9788195898510&lid=LSTBOK97881958985108NW7IW&marketplace=FLIPKART&q=saubhagya+prakashan&store=bks&srno=s_1_4&otracker=search&otracker1=search&fm=organic&iid=40ed51dd-c658-4cb0-a262-b686d49fe87d.9788195898510.SEARCH&ppt=hp&ppn=homepage&ssid=3r53gbaagg0000001700754761790&qH=5a6f1198bdf0f27d

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)

Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'

ISBN : 978-81-958985-1-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250/-

Genre : Prose /गद्य

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

स्वाभिमान की प्रतीक धर्मपरायणा समाजसेविका स्व. गोमती देवी जी (1942-1982) के आदर्शों और उनके स्वप्नदर्शी उम्मीदों की स्मृति को संजोए रखने के लिए

विविध क्षेत्रों की 7 विभूतियों को "गोमती देवी उत्कृष्टता सम्मान" से सम्मानित करती है।

आपको सादर सूचित हो कि पद्मश्री प्रो. राजेश्वर आचार्य जी (शास्त्रीय संगीत विभूति), पद्मश्री प्रो. कमलाकर त्रिपाठी जी (प्रख्यात चिकित्सक),

प्रो. सीमा सिंह जी (कुलपति, राजर्षि टण्डन ओपन विवि, प्रयागराज), पद्मश्री श्री चंद्रशेखर सिंह जी (कृषि विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), सुश्री सुतापा सान्याल, पूर्व डीजीपी (प्रथम महिला) उत्तर प्रदेश, प्रोफेसर (डॉ.) कीर्ति सिंह जी (आइ सी ए आर के संस्थापक), अंतरराष्ट्रीय एथलीट डाॅ तृप्ति सिंह जी एवं विशेष भृगुवंशी (भारतीय बॉस्केटबॉल टीम के कप्तान) जी, आईपीएस विकास वैभव (लोक प्रशासन के क्षेत्र में योगदान के लिए), प्रख्यात अकादमिक एवं वैज्ञानिक डॉ आर एन साहा, शास्त्रीय गायिका पूर्णिमा श्रेष्ठ, केका घोषाल आदि को उनके उल्लेखनीय योगदानों के लिए विविध श्रेणियों में सम्मानित-पुरस्कृत किया जा चुका है।

भारत सरकार के वरिष्ठ मंत्री (कैबिनेट) डॉ. महेंद्र नाथ पाण्डेय जी एवं केंद्रीय विदेश एवं शिक्षा राज्यमंत्री डा. राजकुमार सिंह रंजन सिंह जी भी बतौर अतिथि हमारे कार्यक्रमों में सम्मिलित हो चुके हैं।

प्रतीक संवेदना : पत्रकारिता-साहित्य-संस्कृति का अर्द्धवार्षिक आयोजन

हमारे द्वारा भाषा-समाज-साहित्य-कला-संस्कृति-पत्रकारिता के व्यापक सरोकारों को समर्पित पुस्तिका "प्रतीक संवेदना" का भी प्रकाशन किया जा चुका है, जिसके तीन महत्त्वपूर्ण संग्रहणीय अंक प्रकाशित हुए और जिसका हम पुनर्प्रकाशन करने जा रहे हैं।

बनारस लिट् फेस्ट : काशी साहित्य-कला उत्सव -

विगत दो दशक से अधिक समय से हम समाज-शिक्षा-स्वास्थ्य-साहित्य-कला-संस्कृति, विज्ञान-पर्यावरण विषयक आयोजनों, गोष्ठियों, व्याख्यानों को समय-समय पर करते रहे हैं।

समिति की औपचारिक स्थापना 2005-06 काल से अब तक अनेक आयोजन कर चुके हैं।

बनारस के साहित्य-कला प्रेमियों के सुझाव-आग्रह पर विधिवत रूप से 11- 12 फरवरी, 2023 को काशी हिंदू विश्वविद्यालय के स्वतंत्रता भवन में "बनारस लिट् फेस्ट : काशी साहित्य कला उत्सव-2023" का सफल आयोजन किया गया, जिसमें समाज-शिक्षा-साहित्य-संस्कृति के विविध विधाओं और अनुशासनों के अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों ने भागीदारी की और अपने विचारों- रचनाओं से साहित्य-कला संसार को समृद्ध किया।

प्रख्यात विद्वान, व्याख्याता, समालोचक डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल, साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कवि-लेखक-समाजवैज्ञानिक बद्री नारायण, कथाकार-उपन्यासकार त्रिलोकनाथ पांडेय, समीक्षक, कथाकार डॉ. बलराज पांडेय, फिल्म समीक्षक अजित राय, मीडिया-विश्लेषक विनीत कुमार, दर्शनशास्त्री डॉ देवब्रत चौबे, वरिष्ठ समीक्षक डॉ रामसुधार सिंह, कवि और रंग निर्देशक व्योमेश शुक्ल, उपन्यासकार श्याम बिहारी श्यामल, कवि प्रकाश उदय, सुमन केसरी, युवा कथाकार शुभम नेगी, युवा समीक्षक

डॉ प्रभात कुमार मिश्र, डॉ समीर कुमार पाठक और अन्य अनेक प्रसिद्ध लेखक-अध्येता-विचारक हमारे इस आयोजन में शामिल हुए।

प्रख्यात शास्त्रीय गायक पद्मभूषण पंडित साजन मिश्र, सुपरिचित अभिनेता रघुबीर यादव, अभिनेता फैजल मलिक, पार्श्व गायिका पूर्णिमा श्रेष्ठा, युवा लोक और शास्त्रीय गायिका मैथिली ठाकुर, केका घोषाल आदि की भी सक्रिय भागीदारी रही।

प्रख्यात समाजशास्त्री प्रो. आनंद कुमार, पद्मश्री प्रो. राजेश्वर आचार्या, पद्मश्री डॉ. रजनीकांत, प्रो. ए के त्यागी (कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ), वयोवृद्ध लोकप्रिय कवि पंडित हरिराम द्विवेदी, पद्मश्री अशोक चक्रधर, गीतकार बुद्धिनाथ मिश्र, युवा लेखक दिव्य प्रकाश दुबे आदि अनेक शब्दशिल्पियों, बुद्धिजीवियों, संस्कृतिकर्मियों ने काशी साहित्य-कला उत्सव को अपनी उपस्थिति एवं शब्दों-विचारों से गरिमा प्रदान की।

हम इस आयोजन की निरंतरता बनाए रखने की सभी शुभचिंतकों, साहित्य-कला प्रेमियों की सदिच्छा का सम्मान करते हैं।

"बनारस लिट् फेस्ट- 2024", 10-11-12 फरवरी को आयोजित किया जाएगा, जिसमें इसके विशिष्ट रचनात्मक स्वाद, विचार-कला और निकष के साथ साहित्यप्रेमियों, लेखकों, सिनेमा और रंग कलाकारों, विचारकों-समीक्षकों एक साथ लाया जाएगा।

इस महत्त्वपूर्ण आयोजन में आपका सहयोग-समर्थन-भागीदारी और आपका स्नेह-आशीष अपेक्षित है।

साहित्यरसिक पाठकों, कला-संस्कृति प्रेमियों, सुधी श्रोताओं, बुद्धिधर्मियों के आग्रह, अनुराग, सहभागिता, प्रेरणा-प्रोत्साहन और समिति पर भरोसा के लिए नवभारत निर्माण समिति परिवार आभारी है। यह एक बड़ी परंपरा बन जाए इसकी भी सार्थक कोशिश करेंगे।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

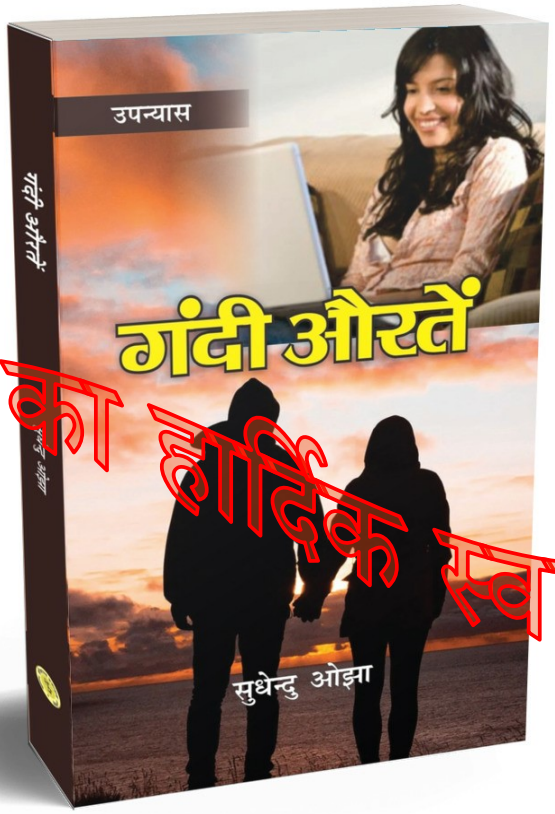

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book is Available on Flipkart

https://www.flipkart.com/gandee-auraten-novel/p/itm6f1eeda838a9b?pid=RBKGU97YEBBYMHYE&lid=LSTRBKGU97YEBBYMHYEO6G004&marketplace=FLIPKART&q=sudhendu+ojha&store=bks&srno=s_1_3&otracker=search&otracker1=search&fm=Search&iid=2a214206-4e0e-4e82-a87d-ba5c89d559b5.RBKGU97YEBBYMHYE.SEARCH&ppt=sp&ppn=sp&ssid=fd8oomya740000001700755314154&qH=9461c80229ba37b7

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-9-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 188

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

विश्व जनचेतना ट्रस्ट भारत का पाँचवाँ वार्षिकोत्सव,स्मारिका विमोचन,कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह हुआ सम्पन्न

लखनऊ विश्व विद्यालय द्वितीय परिसर के ज्यूरियस हॉल, प्रशासनिक भवन में साहित्यिक व सामाजिक संस्था विश्व जन चेतना ट्रस्ट भारत का पाँचवाँ वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह विगत 30 नवम्बर को आ. सुशीला धस्माना 'मुस्कान की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। प्रारम्भ दीप प्रज्वलन, सरस्वती बन्दन व स्वागत गीत से हुआ। संतोष कुमार 'प्रीत' ने संस्था के उदभव व विकास के बारे में प्रकाश डाला। तदोपरांत संस्था की स्मारिका पुस्तक का विमोचन व विभिन्न प्रांतों से आए 28 कवि, कवियित्री को शाल, शील्ड, अभिनंदन-पत्र, सम्मान-पत्र, देकर सम्मानित किया गया। समारोह में आ. राहुल शुक्ल साहिल', राजेश मिश्र 'प्रयास' डॉ. शरद श्रीवास्तव 'शरद', आ. गीतांजलि वार्ष्णेय 'सूर्यांजलि' इंजी.हेमन्त कुमार 'सिंघई', आ. शैलबाला कुमारी के प्रतिनिधि जे. आर. सैनी को मधु स्मृति सम्मान-2023 से सम्मानित किया गया। वहीं आ. नीतेन्द्र कुमार सिंह परमार 'भारत', पं. सुमित शर्मा ' पीयूष' आ. ओम प्रकाश फुलारा 'प्रफुल्ल' को साहित्य प्रेरणा सम्मान- 2023 से गौरवान्वित किया गया। आ. शरद कुमार श्रीवास्तव 'शरद' जी को राष्ट्रीय प्रवक्ता, आ. सुशीला धस्माना 'मुस्कान' राष्ट्रीय अध्यक्ष संरक्षक मण्डल, आ. संतोष कुमार 'प्रीत' को राष्ट्रीय अध्यक्ष, आ. नीतेंद्र सिंह परमार 'भारत' को राष्ट्रीय कार्यक्रम संचालक नियुक्त करते हुए सभी को नियुक्ति-पत्र प्रदान किए गए। आ. दिनेश अवस्थी जी को शब्द रत्न पुरस्कार -2023 से सम्मानित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि आ. बंशीधर सिंह विभागाध्यक्ष विधि संकाय लखनऊ विश्व विद्यालय , विशिष्ट अतिथि आ. अमृत बिसारिया(दुबई), सारस्वत अतिथि के0एस0 परिहार व संचालन डॉ. शरद कुमार श्रीवास्तव जी ने किया।

द्वितीय सत्र भोजनावकाश के बाद में प्रारम्भ हुआ जिसमें पं. सुमित शर्मा 'पीयूष'ने "सच बात मेरे मन की सुनाता हूँ लाड़ली, बताता हूँ लाड़ली ", संतोष कुमार 'प्रीत' ने "अक्षरों का ले सहारा, हृदय का उदगार लिखना ", गीता गंगवार ने "हार हो सामने वीर हटते नहीं, दूर हो लक्ष्य कर्मठ थकते नहीं ", सुशीला धस्माना 'मुस्कान' ने "धरा राम की है उन्ही की रहेगी, ध्वजा राम की देखो छूती शिखर है ", नीतेंद्र परमार भारत ने द्वितीय सत्र का संचालन करते हुए "बढ़ रहीं कुछ खास नस्लें, अब हमारे देश में ", राजेश मिश्र प्रयास ने "अटल

विश्वास सा सहचर कोई अभिराम आ जाता ", तीर्थ देव शर्मा 'सरल'ने "श्रीराम प्रभु की महिमा, सब जानते हैं जानेगें, सीता माँ की त्याग लीला, को कैसे पहचानेंगे ",ओम प्रकाश फुलारा 'प्रफुल्ल' ने "मुर्दो को पदवी मिलती है", ब्रजमोहन श्रीवास्तव 'साक्षी' ने " प्रेम ही प्यार का एक सन्देश है, प्रेम ही धर्म ग्रंथो का उपदेश है ", अमृत बिसारिया जी ने"स्वाद को स्वाद आए थोड़ा नजाकत से ", डॉ. शरद कुमार श्रीवास्तव ने "जिंदगी तो मुस्कराना चाहती है ", प्रसन्नबदन चतुर्वेदी ने "पत्थर हुआ इंसान, अब इंसानियत दिखती नहीं "अरविन्द कुमार मिश्रा ने निर्वस्त्र बनाकर नारी को, खुले गीधजन घुमा रहे हैं " राहुल शुक्ल 'साहिल' ने "दिल भी खुशनुमा रात रंगीन है "डॉ. आलोक कुमार यादव ने "चलो फिर गैर से रिश्ता निभाकर देख लेते हैं ", कंचन सिंह परिहार ने "हरि बिनु कौन यहाँ प्रभु तेरा "निशा श्रीवास्तव ने "प्रेम नहीं आसां होता है, पूछे कोई मीरा से "रोहित मिश्रा ने "हिन्दोस्ता हमारा, हिन्दोस्ता हमारा "अभिलेखा श्रीवास्तव ने "दीवारों से मिलकर रोना अच्छा लगता है ",आयोजक मण्डल के डॉ. आलोक कुमार यादव, गीता गंगवार, एडवोकेट संजय सिन्हा, बशीधर सिंह विभागध्यक्ष विधि संकाय को नीतेन्द्र सिंह परमार 'भारत' ने मध्य प्रदेश के खजुराहो मंदिर के प्रतीक देकर सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में विषम परिस्थितियों के कारण संस्था के संथापक दिलीप कुमार पाठक सरस जी नह आ पाए जिसकी कमी सभी साहित्यकारों ने महसूस किया।

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता वरिष्ठ शायर प्रसन्नबदन चतुर्वेदी, संचालन नितेन्द्र परमार भारत व धन्यवाद ज्ञापन एड0 संजय सिंह के द्वारा किया गया।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

असहज

"परेशान सी हो, सावित्री?"

"थकान है। बड़े आदमी के आउट हाउस में रहना आसान नहीं होता। दो कमरे मिले हैं, बदले में दिन भर काम के लिए पुकार होती रहती है। सोचा था, 'एक-दो घर और झाड़ू-पोंछा का काम लेकर पति की रुपए-पैसों में हाथ बँटाऊँगी। पर...

अरे हाँ ! तू भी तो पास की कोठी के आउट हाउस में ही रहती है न? पर थकी और पकी नहीं लगती कभी! राज क्या है?"

"आसान है। कोठी के छोटे-मोटे काम उचाट भाव से बेहद हड़बड़ी में सुबह-सवेरे सबके जगने से पहले ही आधा-अधूरा काम निपटाकर भाग छूटती हूँ - पहला फार्मूला। घर के कामों के लिए उनके पास महरी है ही। और दूसरा फॉर्मूला - अपनी बारह साल की बेटी को स्कूल पहुँचाने और लाने, कोचिंग पहुँचाने और लाने के बहाने कोठी से चार-पाँच घंटे गायब रहती हूँ। शेष वक्त में, अपने घर के कामों में खुद को व्यस्त दिखाती हूँ। किसी ने बुलाया, तो बेटी को ट्रेनिंग है। हर बीस-पच्चीस मिनट पर पूछती रहती है, 'मम्मी क्या कर रही हो? जल्दी आओ!' मैडम ने छुट्टी दे दी तो बेहतर, वरना बेटी कोठी में धमक जाती है और कीमती सामानों को छूकर, हिला-डुला कर देखती है। कभी बिस्तर पर, कभी सोफे पर बैठती रहती है। इससे बचने के लिए मुझे तत्काल छुट्टी दे दी जाती है", एक विद्रूप सी मुस्कान चेहरे पर फैल गई।

"हद है! उसे दी गई गलत सीख कल को तुम्हारे लिए भी मुसीबत खड़ी कर सकती है। यह भी तो हो सकता है कि परेशान होकर मैडम आउट हाउस खाली करवा लें।"

"नहीं करवा सकतीं। साहब के दफ्तर जाते-आते दौड़-दौड़ कर उनके लिए गेट खोलती हूँ। चापलूसी भरी बातें करती हूँ। उनका लैपटॉप, बैग कोठी में पहुँचा देती हूँ। उनकी उपस्थिति में दिखावे के लिए बगीचे में भी थोड़ा परिश्रम भी कर देती हूँ। उनकी नज़रों में मैं मेहनती हूँ। मैडम के विचारों से मेरी सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। मालिक मेहरबान तो स्टाफ भाग्यवान", कहते ठठाकर हँस दी।

"तिकड़मों की उम्र ज्यादा लंबी नहीं हो सकती, अनिष्ट होना तय है", कह सावित्री अपने रास्ते चली गई। उसे अधिक समझाना व्यर्थ प्रतीत हुआ।

नीना सिन्हा

भारतीयता का मृदुल स्वर : मैथिलीशरण गुप्त

कृष्ण बिहारी पाठक

मैथिलीशरण गुप्त की सृजनात्मकता में राष्ट्रभक्ति, इष्टभक्ति की स्तरीयता का स्पर्श करती है। वहाँ व्यक्ति और राष्ट्र के बीच का संबंध भक्त और भगवान के संबंधों की उच्च भूमि पर प्रतिष्ठित है। तुलसीदास के विराट मानस में उनके पूज्य रामसिया हैं तो मैथिलीशरण गुप्त के विशाल मानस में भारतमाता। उधर तुलसीदास -

मांगत तुलसीदास कर जोरे ।बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥

कहते हुए अपने मानस में अपने इष्टदेवता की छविछाप बसाये रखने की प्रार्थना करते हैं तो इधर मैथिलीशरण भी मानस रूपी भवन मे भारतीयता को प्रतिष्ठित कर उसकी आरती उतारते हैं। यह गाकर -

मानस भवन में आर्य्जन जिसकी उतारें आरती।

भगवान् ! भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।।

भारत भारती के मंगलाचरण में आया भारती शब्द यहाँ आकर्षित है। भारती यहाँ भारतीयता का ही स्वर है जिसकी गूँज यह कवि अपने हृदय से उच्चार कर जन जन के हृदय तक सुनना सुनाना चाहता है। कवि का संपूर्ण रचनाकर्म भारतीयता की इसी गूँज की अनुगूँज है, ध्वनि की प्रतिध्वनि।

भारतीयता की ध्वनि को सुनाना उस युग की पहली आवश्यकता बन गई थी। यह आवाज जितनी अंग्रेजी सरकार को सुनाना आवश्यक थी उतनी ही भारतीय मनीषा को भी। कालजयी कृति भारत भारती में गुप्त जी ने भारतीयता के ही मंत्र का उच्चारण किया था, जिसे सुनकर विदेशी शासन के कान खड़े हो गए थे।

भारत-भारती के स्वर संवाद में एक आह्वान था, यह आह्वान एक ओर भारतीय मनीषा को सचेत कर रहा था तो दूसरी ओर विदेशी सत्ता को सतर्क। राजभक्ति और राष्ट्रभक्ति के संदर्भों में यह कृति अपने समय से आगे बढकर बोल रही थी। आगे इसलिए कि राष्ट्रभक्ति और राजभक्ति की पारस्परिकता को लेकर आधुनिक कालखंड के तीन क्रमिक युगों में एक गतानुगतिकता का मेल बनता है।

भारतेंदु युग की स्थितियाँ ऐसी नहीं थीं कि सीधे-सीधे विदेशी सरकार की नाक के नीचे भारतीयता का आह्वान किया जा सके। ऐसे में युगीन साहित्यकारों ने राजभक्ति और राष्ट्रभक्ति के बीच संतुलन का रास्ता अपनाया। द्विवेदी युग में राजभक्ति की बजाय राष्ट्रभक्ति की ओर झुकाव होने लगा और अंततः छायावाद में राजभक्ति को पूर्णतः तिरस्कृत कर राष्ट्रभक्ति के पुरस्करण का युग आया।

मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग में होते हुए भी राजभक्ति बरक्स राष्ट्रभक्ति के समीकरण में राजभक्ति को पूर्णतः तिरस्कृत कर राष्ट्रभक्ति को पुरस्कृत करने वाले विरल रचनाकार थे। 'मातृभूमि तू सगुण मूर्ति सर्वेश की' कहकर वे मातृभूमि में ही ईश्वर की छवि देखने वाली भारतीयतापरक दृष्टि का परिचय देते हैं।

मैथिलीशरण गुप्त ने जिस युग परिवेश में साहित्य संसार में प्रवेश किया वह युग भारतीय अस्मिता की खोज के लिए तत्पर था।गुप्त जी

का रचना संसार इस तत्परता की तृप्ति का संसार है। उनके संपूर्ण लेखन में भारतीयता की खोज और पहचान एक दूसरे को काटते छूते चलतीं हैं। अज्ञेय ने तो यहाँ तक कहा है कि अकेली भारत - भारती ने इस दिशा में वह काम कर दिखाया जो अन्य ग्रंथ और अन्य कवि न कर सके, न कर सकेंगे। वे लिखते हैं -

" भारतीयता की खोज में प्रवृत्त करने का काम जैसा 'भारत भारती' ने किया वैसा किसी दूसरी रचना ने नहीं किया। भारत भारती ने जिस तरह समाज के हर वर्ग के मर्म को छुआ, संवेदन के हर स्तर को झकझोरा और भावना-मूलक, बौद्धिक, आध्यात्मिक सभी प्रकार के सरोकारों को पुष्टि दी, वह अद्वितीय है। "1

गुप्त की भारत भारती में भारतीयता के वे पारंपरिक सांस्कृतिक अनुष्ठान गूँज रहें हैं जो वाल्मीकि, व्यास, कालिदास और भवभूति आदिक कविर्मनीषियों ने आहूत किये थे।इस तरह भारत भारती किसी व्यक्ति समाज के अपनी परंपरा, संस्कृति और भाषा से जुड़े रहने का उपक्रम भी है।

भारतीयता की खोज प्रकारांतर से भारतीय मनीषा की शक्ति और सामर्थ्य की खोज भी है। यह आवश्यक इसलिए थी कि अपने अतीत गौरव से विस्मृतप्रायः भारतीय मनीषा बिना लड़े ही स्वयं को विदेशी सत्ता के सामने पराजित घोषित कर चुकी थी। भारत भारती ने विस्मृत शक्ति को स्मरण दिलाने का ही कार्य किया था।

विगत, विस्मृत उत्कर्ष को वापिस लौटाने का या स्मरण दिलाने का आग्रह कवि ने अपनी रचनात्मकता में बारंबार किया है। कभी वह कहता है 'नर हो न निराश करो मन को' या कभी नहुष की पौराणिक कथा में संकेतित करता है गिरने के साथ-साथ गिरकर उठने का सत्य भी बराबर अस्तित्वमान रहता है।

भारत भारती का महत्व जिन दो बातों से और भी अधिक बढ़ जाता है उनमें प्रथम तो यह है कि जनमानस के जागरण, परिष्करण और प्रसंस्करण की दृष्टि से भारत भारती आज भी उतनी ही संगत और प्रासंगिक है जितनी इसके निर्माण के समय। दूसरी बात जिस पर गौर किया जाना चाहिए वह यह कि भारत भारती गाँधी जी के स्वातंत्र्य संग्राम युग से पहले की कृति है। गाँधी जी के विचार संस्कार का इस कृति पर न कोई प्रभाव है, न प्रेरणा। यह कवि की अपनी वाणी है, अपना स्वर है।

गुप्त जी की रचनात्मकता में बहुत स्पष्टता से यह बात उभरती है कि भारतीयता का आग्रह केवल राजनीति दासता से मुक्ति का आग्रह नहीं वरन इससे कहीं अधिक सामाजिक - सांस्कृतिक - वैचारिक दासता से मुक्ति का आग्रह भी है। राजनीतिक दासता से मुक्ति के लिए जहाँ वे पुरुषार्थ और आशा का संचार करते हैं वहीं सांस्कृतिक सामाजिक चेतना के लिए रूढ़ियों, कुरीतियों और जड़ बंधनों को तोड़ने का उपक्रम भी।

भारतीयता का मूल स्वर समदृष्टि और समभाव का था। स्त्री-पुरुष, चर - अचर, जड़ चेतन के प्रति समभाव। कालांतर में स्त्रियों की उपेक्षा बढने लगी थी, गुप्त जी ने भारत भारती में इस विषमता की ओर ध्यान खींचा है -

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

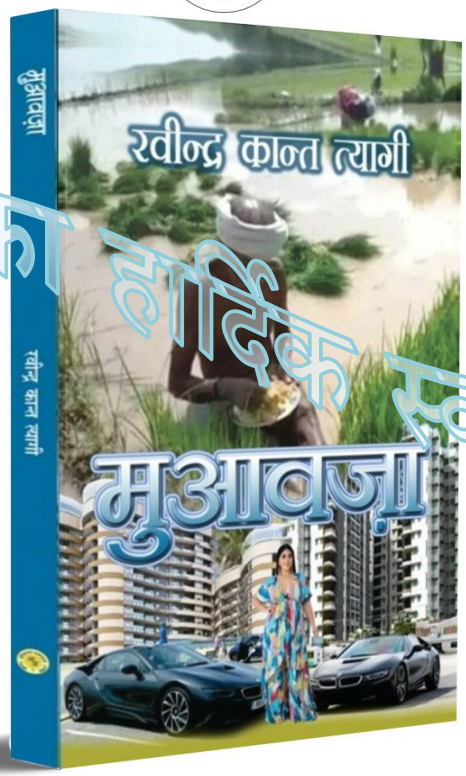

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

"ऐसी उपेक्षा नारियों की जब स्वयं हम कर रहे।

अपना किया अपराध उनके शीश पर हैं धर रहे।।" 2

स्त्री - पुरुष की समता के साथ साथ हिंदू-मुस्लिम सद्भाव और सांप्रदायिक सौहार्द्र का वातावरण भी गुप्त जी ने निर्मित किया है तो इसकी प्रेरणा में भी भारतीयता ही प्रबल है। भेदभावमूलक भिन्नता से सदैव खिन्नता ही उपजती है -

" सब बैर और विरोध का बल-बोध से वारण करो।

है भिन्न में खिन्नता ही, एकता धारण करो।।" 3

भारत की राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक दशा - दुर्दशा का संज्ञान करता हुआ कवि निराश हताश होकर चुप नहीं बैठता है, वह कलम उठाता है और कर्म की इबारत लिखता है।

सृष्टि में होने वाली उत्थान - पतन की चक्रीयता से भी वह अभिज्ञ है पर भारतीय परंपरा में निहित आशावादिता और कर्मनिष्ठा को विस्मृत, उपेक्षित किये जाने की चिंता उसके लिए सबसे ऊपर है।भारत भारती, निराशा में आशा के संचार की कविता है, किंकर्तव्यविमूढ़ता में कर्तव्य प्रेरणा की कविता है।

पारस्परिक प्रेम, सौहार्द्र और समरसता, न्याय, बंधुत्व और समता, कर्म, पुरुषार्थ और क्षमता आदि भारतीयता के नित्यगुण हैं और इन गुणों की पुनर्स्थापना, पुनर्प्रतिष्ठा ही भारत भारती में कवि का ध्येय रही है। भारत भारती की भूमिका में कवि ने इसी ध्येय वाक्य को दोहराया है

"हम लोग क्या सदा अवनति में ही पड़े रहेंगे? हमारे देखते-देखते जंगली जातियाँ तक उठ कर हमसे आगे बढ़ जायें और हम वैसे ही पड़े रहें, इससे अधिक दुर्भाग्य की बात और क्या हो सकती है।.. क्या सचमुच हमारी यह निद्रा चिर निद्रा है?.. संसार में ऐसा कोई भी काम नहीं जो समुचित उद्योग से सिद्ध न हो सके। परंतु उद्योग के लिए उत्साह की आवश्यकता है। " 4

मैथिलीशरण जो ब्रज को छोड़कर बोलचाल की भाषा सदा सर्वदा के लिए अपनाते हैं तो इसके पीछे भी भारतीय दृष्टि ही है। बोलचाल की भाषा सहजता के साथ सार्वजनीनता का भी स्पर्श करती है।

सहजता और सार्वजनीनता के विशेषक भारतीयता से गहरे से जुड़े हुए हैं यह कहने की आवश्यकता नहीं है। बोलचाल की यह भाषा जो खड़ी बोली थी रचनाकारों से संस्कार पाते हुए परिनिष्ठित होते हुए राष्ट्रभाषा का मानक बनी।

पुरानी भाषा के उपभोगधर्मा सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर व्यावहारिक एवं उपयोगी मूल्यों को समुन्नत करने का संस्कार इस खड़ी बोली के साथ लगा हुआ था। गुप्त जी के हाथों से निखरकर खड़ी बोली में श्रुतिमाधुर्य और सरलता आई, पुरानी भाषा के साथ - साथ रीतिकालीन सामंतीय संस्कृति भी विलीन और मंद होने लगी और इस तरह से भाषागत संदर्भों में भी स्वाधीन चेतना स्पंदित होने लगी।

गुप्त जी के संपूर्ण रचनाकर्म की अंतर्वर्ती प्रक्रिया को गंभीरता से देखने पर यह बहुत स्पष्टतया दिख जाता है कि उन्होंने क्रमशः हिंदू राष्ट्रीयता को भारतीय राष्ट्रीयता में और फिर भारतीय राष्ट्रीयता को मानवतावाद और विश्ववाद का औदात्य प्रदान किया है। भारतीयता के प्रवर्तन - संवर्धन की दृष्टि से यह बडी बात है। भारतीय दृष्टि सदा से ही वसुधैव कुटुंब और विश्व मानवतावाद की पक्षधर रही है। साकेत में तो राम का संदेश मानों किसी घोषणा पत्र के समान भारतीय दृष्टि और दृष्टिकोण को ही परिभाषित कर रहा है -

" मैं आया, जिसमें बनी रहै मर्यादा,

बच जाय प्रलय से, मिटै न जीवन सादा;

मैं यहाँ एक अवलम्ब छोड़ने आया,

गढ़ने आया हूँ, नहीं तोड़ने आया।

मैं यहाँ जोड़ने नहीं, बाँटने आया,

जगदुपवन के झंखाड़ छाँटने आया।

सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,

इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।"5

साकेत में राम का यह संदेश केवल रामकथा के संदर्भों तक ही सीमित नहीं है वह पराधीन भारत के संदर्भ में भी व्यंजित होता है।राजनीतिक दासता के साथ-साथ सांस्कृतिक उपनिवेशवाद की ओर बढ़ती भारतीय मनीषा के लिए ऐसे ही संदेश की आवश्यकता थी जो गुप्त जी ने साकेत में राम के मुख से कहलवाया है।

भारत भारती या साकेत ही क्यों, गुप्त जी का समग्र वाङ्मय भारतीयता के मंत्रों का मुखर उच्चारण है।

अनेकता में एकता, विखंडन में समन्वय, हिंसा के स्थान पर अहिंसा, विरोधों में अविरोध तथा शोषण के स्थान पर सहानुभूति भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषताएं हैं जिन्हें गुप्त जी ने अपने सृजन दर्शन का आधार बनाया है और जिनसे उनकी कविता में जीवन का, और निर्माण का मृदुल स्वर गूँजा है। यह सत्वगुणपूर्ण मृदुल स्वर भारतीयता का ही स्वर है जो सदा सर्वदा हमें जाग्रत रखेगा, मुग्ध करेगा।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

रामेश्वर महादेव वाढेकर

समकालीन हिंदी कहानियों में चित्रित किन्नर विद्रोह

साहित्य के क्षेत्र में दलित विमर्श,आदिवासी विमर्श,स्त्री विमर्श,किसान विमर्श,बाल विमर्श,वृद्ध विमर्श,वेश्या विमर्श, मुस्लिम विमर्श,अल्पसंख्याक विमर्श, किन्नर विमर्श आदि परिस्थिति के अनुरूप निर्माण हुए।इनमें से किन्नर विमर्श पर तत्कालीन समय बहुत चर्चा हुई,वर्तमान में भी हो रही है। किन्नर समुदाय का प्राचीन काल से शोषण होता आया हैं,आज भी जारी है। वे वर्तमान में अधिकार से वंचित हैं, प्रावधान होने के बावजूद! सिर्फ़ उनपर साहित्य लिखकर कोई मतलब नहीं,उनके भाव को समझना पढ़ेगा।समाज में उन्हें सम्मान देना होगा, तब विमर्श की चर्चा सफल होगी।

हिंदी साहित्य में किन्नर समाज पर अनेक विधा में लिखान हुआ हैं,वर्तमान में भी लिखान जारी है। परन्तु कहानी के माध्यम से किन्नर समुदाय की समस्या पर बेहतरीन चर्चा हुई। कहानी में किन्नर अत्याचार सहता नहीं, विद्रोह करता है। अनेक कहानियां किन्नर की त्रासदी पर लिखी गई। जिनमें प्रमुख कहानियां हैं, 'संज्ञा'-किरण सिंह, 'कुकुज नैस्ट'-कमल कुमार,'कबीरन'-सूरज बडत्था, 'मन मरीचिका'-विमलेश शर्मा,'खलीक अहमद बुआ'- राही मासूम रज़ा,'बीच के लोग'-सलाम बिन रज़ाक,'त्रासदी'-महेन्द्र भीष्म, 'लेग'-लवलेश दत्त,'बिन्दा महराज'-शिवप्रसाद सिंह,'ई मुर्दन के गांव'-कुसुम अंसल,'हिजड़ा'-कादंबरी मेहरा, 'इज्जत के रहबर'-पद्मा शर्मा, 'कौन तार से बिनी चदरिया'-अंजना वर्मा,'रतियावन की चेली'-ललित शर्मा,'संकल्प'-विजेन्द्र प्रताप सिंह, 'खुश रहो क्लिनिक'-चांद दीपिका आदि। कहानियों के माध्यम से रचनाकारों ने किन्नर समाज की त्रासदी समाज के सम्मुख रखी। सिर्फ़ त्रासदी बताने से कुछ नहीं होगा, उनके साथ प्रेम भाव से बर्ताव करने की आवश्यकता हैं। उन्हें समझना जरूरी हैं। सिर्फ़ किन्नर समाज पर लिखा साहित्य पढ़कर कुछ नहीं होने वाला, वे विचार आचरण में लाने की नितांत आवश्यकता है। आज भी किन्नर समुदाय पर अत्याचार होता है। उन्हें न्याय नहीं मिलता।यह परिस्थिति बदलनी चाहिए।

समकालीन कहानियों में किन्नर समुदाय का संघर्ष चित्रित हैं,साथ ही विद्रोह! कहानियों के किन्नर पात्र अन्याय सहते नहीं,विद्रोह करते है समाज से।उन विद्रोह को हम निम्न कहानियों से समझने की कोशिश करते हैं।

मनुष्य की हीन मानसिकता प्रति विद्रोह

किन्नर समुदाय के प्रति समाज का देखने का दृष्टिकोण कल भी हीन था, आज भी हीन है। किन्नर को बहुत से लोग मनुष्य नहीं,जानवर समझते हैं। संघर्ष जन्म से जुड़ा है उनके साथ।उनका अपमानित होना तय है समाज से।उन्हें ज्यादा वेदना हीन मानसिकता से होती है समाज से। वर्तमान में पढ़े-लिखे किन्नर अन्याय सह नहीं रहें,विद्रोह कर रहे हैं। यह समय की मांग भी है।

हीन मानसिकता पर किरण सिंह 'संझा' कहानी से प्रहार करती है। 'संझा' नामक पात्र से किन्नर समुदाय का विद्रोह दिखाया। कहानी में पिता वैद्य जी 'संझा' को बहुत पढ़ना चाहता है,पढ़ाते भी है। किंतु 'संझा' की मां उसके भविष्य को लेकर चिंतित रहती है। कुछ वर्ष

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

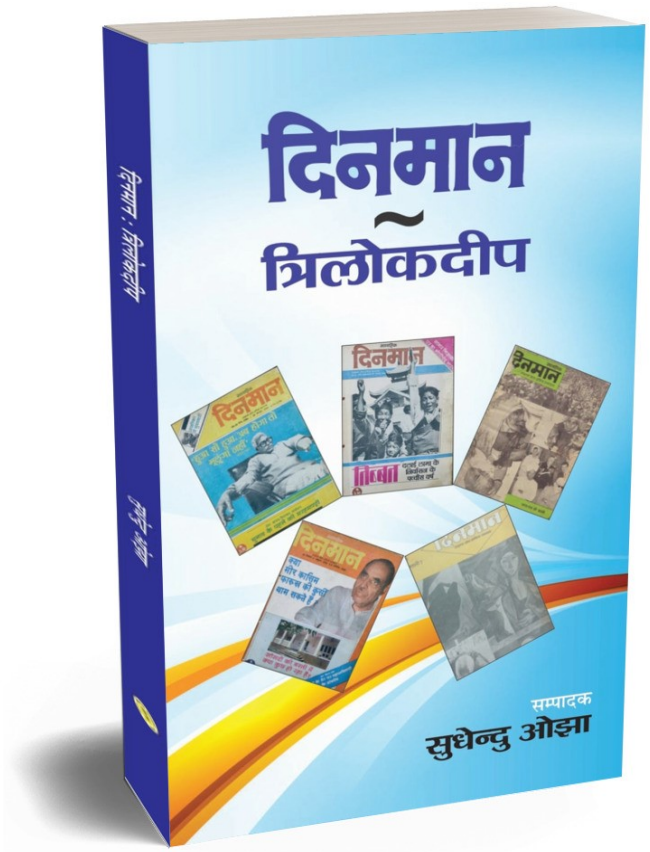

Book is Available on Flipkart

https://www.flipkart.com/dinman-trilokdeep/p/itmc3e2c1c3c4a48?pid=RBKGU9QVP6HGXMGA&lid=LSTRBKGU9QVP6HGXMGAOH8ANX&marketplace=FLIPKART&q=sudhendu+ojha&store=bks&srno=s_1_8&otracker=search&otracker1=search&fm=Search&iid=2a214206-4e0e-4e82-a87d-ba5c89d559b5.RBKGU9QVP6HGXMGA.SEARCH&ppt=sp&ppn=sp&ssid=fd8oomya740000001700755314154&qH=9461c80229ba37b7

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

पश्चात मां का देहांत होता है। कालांतर से समाज के कई मनुष्य को 'संझा' किन्नर है,समझ आता है।वे उसके तरफ हीन नज़र से देखते है।एक दिन उसे नग्न करने की कोशिश की जाती है समाज के मनुष्य से। तब 'संझा' मनुष्य की हीन मानसिकता प्रति विद्रोह करती हैं, "न मैं तुम्हारे जैसी मर्द हूं,न मैं तुम्हारी जैसी औरत हूं। मैं वो हूं,मुझमें पुरुष का पौरुष है और औरत का औरतपन ।तुम मुझे मारना तो दूर,अब मुझे छू भी नहीं सकते।"1

वर्तमान में 'संझा' की तरह किन्नर हीन मानसिकता का विरोध कर रहे हैं। होना भी चाहिएं। किन्नर समुदाय प्रति मनुष्य ने मानसिकता बदलनी होगी, तभी किन्नर सुकून से जीएगा।

सरकार प्रति विद्रोह

किन्नर समुदाय प्राचीन काल से अधिकार से वंचित रहा। खुद की पहचान समाज में नहीं थी,वर्तमान में भी नहीं। आज संविधान होने के बावजूद उनके अधिकार का हनन होता है,समाज से। वर्ष 2014 तक उनका लिंग निश्चित नहीं था, प्रगति तो बहुत दूर!उन्हें वोट का अधिकार नहीं था,लोकतंत्र के देश में। किन्नर समुदाय के लिए सरकार की ओर से योजना न के बराबर। योजना की घोषणा वर्तमान में होती है, किंतु योजना सिर्फ़ कागज़ पर। ऐसी कई समस्या कमल कुमार ने 'कुकुज नैस्ट'कहानी में प्रस्तुत की हैं। कहानी में किन्नर सरकार प्रति विद्रोह करता है, "सरकार हमें पहचान पत्र देती है क्या? वोट देने देती है क्या?पर हम इस देश में रहते हैं न!इसी देश के नागरिक हुए न!"2

इक्कीसवीं सदी में किन्नर समुदाय संघर्ष कर रहा है,अधिकार के लिए। किन्नर समुदाय के लिए संविधान में प्रावधान होने के पश्चात सरकार कुछ नहीं करती। समाज नहीं स्वीकारता। किन्नर समुदाय शिक्षित हो,यह न समाज को लगता है,न सरकार को। किन्नर समाज की समस्या पर चिंतन करने की आवश्यकता है,तभी उनमें बदलाव संभव है, अन्यथा नहीं!

अत्याचार प्रति विद्रोह

किन्नर से जन्मत: जुड़ी समस्या है अत्याचार।अत्याचार मूलतः परिवार से शुरू क्षहोता है,समाज से नहीं। वर्तमान परिस्थिति में किन्नर अत्याचार में जल रहा है,कानून होने के बावजूद!यह देश के लिए शर्म की बात है।देश स्वतंत्र हुआ,किंतु किन्नर समाज नहीं। उन्हें संविधान ने बहाल किए मूलभूत अधिकार नहीं मिले। समाज आज भी किन्नर का शोषण कर रहा है शारीरिक एवं मानसिक।तब भी वे किसी को बता नहीं पाते।

किन्नर समुदाय के संघर्ष पर अनेक रचनाकार ने लिखा। वर्तमान में लिखान शुरू है। किन्नर समुदाय पर लिखित सूरज बडत्था की 'कबीरन'कहानी बहुत चर्चित रही। उन्होंने 'कबीरन' कहानी से किन्नर की त्रासदी बया की है।'कबीरन' को परिवार के सदस्य आश्रम में भेजते है,समाज के कारण।वहां वह सुरक्षित नहीं रहती।उस पर बलात्कार होता है। वह अत्याचार नहीं सहती, समाज से विद्रोह करती है,"पर मैं किसे बताती कि मेरे साथ...कौन विश्वास करता कि हिजड़े के साथ बलात्कार हुआ। कहीं किसी कानून में लिखा है कि हिजड़े के साथ बलात्कार की क्या सज़ा है। समाज न तो हमें स्त्री मानता है, और न ही पुरुष।"3

किन्नर वर्तमान में सुरक्षित नहीं है। खुलेआम उनपर बलात्कार हो रहे हैं। मानसिक शोषण जारी है। दोषी व्यक्ति के खिलाफ़ तकरार दाखिल की, तो भी न्याय नहीं मिलता। उन्हें ही दोषी ठहराया जाता है। समाज ने किन्नर के साथ इन्सान के रूप में पेश आना चाहिए,तभी समाज में सही समानता स्थापित होगी।

परिवार प्रति विद्रोह

किन्नर का साथ न परिवार देता है,न समाज।वह ज़िंदगी बेवारीस बनकर गुज़ारता है। ज़िंदगी का सबसे बड़ा दुख है परिवार से दूर रहना।वह भी कायम का।यह दुरभाग्य किन्नर के जीवन में आता है।सब रिश्तें होने के बावजूद उनसे कोई रिश्ता नहीं रखता।वह सबके लिए मरा हैं।

किन्नर समुदाय के पारिवारिक समस्या पर लिखित महत्वपूर्ण कहानी है 'बिन्दा महराज'। शिवप्रसाद सिंह की यह प्रसिद्ध कहानी रही। कहानी में 'बिन्दा महराज' के माता-पिता का देहांत जल्द होता है।'बिन्दा महराज' अकेली जीती है,संघर्ष करके।वह चचेरे भाई की बेटी 'करीमा' से बहुत प्रेम करती है। किंतु उन्हें प्रेम के बदले चचेरे भाई से अपमान मिलता है। चचेरे भाई उसे घर से निकाल देते है।'बिन्दा महराज' क्षरोती नहीं,हार भी नहीं मानती। चचेरे भाई से विद्रोह करते हुए कहती है," था ही कौन अपना,जो पैरों में रेशमी बेड़ियां डालकर रोक रखता। मां-बाप एक प्राण-हीन शरीर उपजा कर चले गए।मर्द होता तो बीवी-बच्चे होते,पुरुषत्व का शासन होता, स्त्री भी होता तो किसी पुरुष का सहारा मिलता।"4

वर्तमान में किन्नर को परिवार में रखा नहीं जाता,अपमान की वजह से।एक तो उसे मार दिया जाता है,या किन्नर समुदाय में छोड़ा जाता है। दोन्हों जगह उसका शोषण ही। समाज किन्नर की ज़िंदगी नरक बना रहा है। किन्नर मनुष्य ही तो है। उसके शरीर में जो शारीरिक बदलाव होते है,वह नैसर्गिक। आज के युग में परिवार, समाज को मानसिकता बदलने की जरूरत है,तभी किन्नर का जीवन बर्बाद होने

से बचेगा...!

रुढ़ि-परंपरा प्रति विद्रोह

शोषण का दूसरा नाम है किन्नर समाज। जन्म से लेकर मृत्यु तक किन्नर का शोषण होता है परिवार एवं समाज से। परिवार,समाज की त्रासदी से मुक्ति पाने हेतु वे किन्नर समुदाय में शामिल होते है,इच्छा न होने के बावजूद। वहां भी उनका शोषण रूढ़ि-परंपरा के नाम जारी रहता है। वे वहां भी रहना नहीं चाहते,किंतु मजबूरी में रहना पड़ता है। कहीं बार भागने की कोशिश करते है,किंतु सफल नहीं होते। परिणाम अत्याचार ज़्यादा बढ़ता है। दुख भुलने हेतु नशा करने लगते है। वे आज भी जी रहे है,किंतु मृत्यु की अवस्था में।

किन्नर समुदाय के रुढ़ि-परंपरा पर प्रहार करने वाली महत्वपूर्ण कहानी है 'कुकुज नैस्ट'।कमल कुमार कहानी के माध्यम से रूढ़ि- परंपरा प्रति विद्रोह करते है। मनुष्य के जान से बढ़कर कोई परंपरा महत्व पूर्ण नहीं। किन्नर समुदाय में लिंग काटने की परंपरा प्राचीन है। वर्तमान में भी दिखाई देती है। किन्नर का लिंग काटते समय अनेक की जान जाती है। लिंग काटने की परंपरा पर कमल कुमार भाष्य करते है,"बिना किसी डाक्टरी सुविधा के,तेज चाकू से एक ही वार से काट दिया जाता है। उसके चार लोग हाथ-पैर को पकड़े रहते हैं।दर्द से कई बच्चों की मौत भी हो जाती है। लिंग काटकर उन्हें कई दिनों सीधा लिटा दिया जाता है।उस पर कई किलों तेल लगाकर डाल दिया जाता है।"5 आज भी यह परंपरा प्रचलित है। कुछ स्वार्थी लोग किन्नर समुदाय से बिजनेस करना चाहते हैं। इसलिए वे लालदिखाकर कई किन्नर का लिंग काटते हैं,घर पर। परिणाम अनेक की मृत्यु हो रही हैं। परंपरा, बिजनेस के नाम लिंग काटा जाता है,वह बंद होना चाहिएं।इसके साथ ही किन्नर समुदाय की दूसरी प्रथा प्रचलित है वह भी बंद हो।

निष्कर्ष

वर्तमान में परिवार और समाज से किन्नर लढ़ रहा है,हक्क के लिए। समाज में वह पुरुष एवं स्त्री के मध्य बिंदु पर खड़ा है।अपूर्णता के कारणवश समाज उन्हें स्वीकारता नहीं। किंतु शोषण निरंतर करता है। किन्नर समुदाय में परिवर्तन लाना है,तो सरकार ने ध्यान देने की जरूरत है। इसके साथ ही गैर-सरकारी संगठन सहकार्य की आवश्यकता है।

किन्नर समुदाय प्रति समाज की मानसिकता बदलनी जरूरी है,साथ ही उन्हें हरक्षेत्र में प्रतिनिधित्व मिले। तब वे इन्सान के रूप में खड़े होंगे समाज में। ज़िंदगी में संघर्ष कम होगा। वे मुक्त रूप में जिएंगे,समाज में...!

तरकुल का शैतान

हँसा ठहाका मार कर सड़ा हुआ नबदान
नकली चूना छींट कर हाँफ गया श्रमदान

बड़े सबेरे लीप दिया मुनिया ने मड़ई
ले आई है गड़ही से चोखे की गरई (एक प्रकार की मछली)
बापू गये सिवान पर बुला गये परधान

कहँर रही है माई जिद पर है बीमारी
तुलसी की पतई पर सारी जिम्मेदारी
ओझा काका झाड़ गये हैं तरकुल का शैतान

खेत मिलेगा पट्टे पर देगा पटवारी
फिर कुछ दिन रुक जायेगी माई की साड़ी
माटी के बल पर जूझेगा माटी का भगवान

पोयेगी रोटी फिर झटपट जूठ मलेगी
तब जाकर मुनिया अपने स्कूल चलेगी
याद करेगी जोर शोर से भारत मेरा महान

सूर्य प्रकाश मिश्र

सौभाव्य प्रकाशन

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

विनय विक्रम सिंह 'मनकही'

बबलगम जनता

जनता तो बेचारी, बबलगम के जैसी है। चाहे जितना कूँचो-चबाओ, बिना आह, बिना घटे-बढ़े, दाँतों के बीच से निकल, येन-केन प्रकारेण सन्तुलन का नया रूप गढ़ लेती है। कभी-कभी फुलाये जाने पर, गुब्बारे जैसा फूलकर फटती भी है, किन्तु फिर दाँतों के सामने आत्मसमर्पण कर देती है। इतने सालों से चबाये जाने के कारण, अब वह रसहीन, रङ्गहीन, गन्धहीन व स्वादहीन हो चुकी है। बस लार का गीलापन उसे नर्म बनाये रखता है।

जनता (बबलगम) में खुद के दाँत नहीं होते, पर अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये, वह सदैव दाँतों पर ही निर्भर है, और ये दाँत विशिष्ट और गरिष्ठ श्रेणी के होते हैं, जो जानवरों का चारा तक चबा जाने में प्रवीण होते हैं। इनकी जुगाली पाँच साल लम्बी होती है, पाँच साल बाद, यदि कुछ बदलता भी है तो बस जबड़े बदलते हैं, पर दाँत जस के तस रहते हैं, जुगाली उसी तारतम्यता से बबलगम चबाती रहती है। भोली जनता (बबलगम) चबाये जाने को ही अपना अस्तित्व मानकर, थूके जाने तक, डटी रहती है। उसे पुनः अगले पाँच साल तक चबाये जाने योग्य बनाने का कार्य जबड़ों का होता है, वह उसमें पुनः पञ्च वर्षीय फ्लेवर भरते हैं। उसे अलग-अलग तरह की लकलकउआ ब्राण्डिङ्ग देते हैं। उस पर अलग-अलग तरह के रङ्गीन रेवड़ी छाप, रैपर चढ़ाये जाते हैं। सुनहला रैपर दलितों के लिये, चमकीला वाला रैपर हरे-भरे अल्पसंख्यकों के लिये, सवर्ण छाप रेवड़ी रैपर अक्सर चढ्ढी जितना ही होता है, पर आरक्षित होता है, यह किसी और को नहीं दिया जाता। अब आजकल इसके आगे भी जाति छाप रैपर की तैयारी चल रही है, जो चबरीद के लिये रङ्ग-बिरङ्गे रेवड़ी छाप रैपर लेकर आएगी। जिनसे इस 'बबलगम' जनता की ब्राण्डिङ्ग में भरपूर इजाफा होगा।

हर बार का यह पाँच-साला, नया रैपर, नयी ब्राण्डिङ्ग, जनता (बबलगम) को पुनः चबरीद मनाने के आत्मविश्वास से भर देता है। वह खुद को सेंसेक्स इंडेक्स पर सबसे महँगे शेयर के जैसा महसूस करती है। जिसकी बिकवाली में जबड़े एक-दूसरे को पनौती कह-कहकर कोसते रहते हैं, इस छींटाकशी की रस्साकशी में चाय वाले से लेकर राजशाही तक, हर प्रकार के जबड़े, इसका लुत्फ उठाते हैं। देश की कुण्डली बनाने वाली मण्डली की, बबलगमी खरीद-फ़रोख़्त की यह मण्डी, संविधान के तले अँधेरे में सजती है। इस मण्डी का पारिस्थिकी तंत्र, बुलेटप्रूफ होता है, जिसकी प्रूफिङ्ग लालटेप ने की होती है। यह लालटेप संविधान के छेदों का घाघ जानकार होता है। जो कि इन छेदों का प्रयोग, जब कभी इन जबड़ों की लार बाहर टपक जाती है, तब इनको बेल दिलाने के लिये करता है। वैसे तो ये जबड़े, अपनी लार घूँटने में माहिर होते हैं। कुछ वर्षों पहले जारी स्विस बैंक खातों की लिस्ट में, घूँटी गयी लार के टैंकर के टैंकर देखे जा सकते थे। पर अब जबड़ों के आपसी साम्यवाद ने, ऐसी लिस्टों को सामने न लाने का करार कर लिया है। फलतः अब स्विस बैंक और गधे के सिर पर सींग एक-दूसरे के पूरक बन चुके हैं। स्विट्जरलैंड अब पुनः दुग्ध-उत्पादों में अग्रणी देश माना जाना लगा है।

जनता (बबलगम) सर्वदा अक्कलदाढ़ से चबायी जाती है, भले ही वह दूध की अक्कलदाढ़ हो या बूढ़ की, वंश एक ही रहता है। हर जबड़ा अपनी अक्कलदाढ़ को अमरलता बताता है, जिसके आत्मोसर्ग के किस्से कई पीढ़ियों से जुड़े होते हैं। वह अपनी लार की किस्म को, जनता (बबलगम) के लिये सबसे बेहतर पचनीय घोषित करता है, और अपने दाँतों को कैविटी फ्री। जनता (बबलगम) को तरावट देने के लिये, उलटने-पलटने के लिये, वह विचारधारा सैलून में अपनी जीभ पर, नए-नए रङ्ग चढ़वाता रहता है। जिसके लपेटे में वह हर पाँच साल तक जनता (बबलगम) को लसेटे रहता है। लाल, हरा, नीला, केसरिया, इसी तरह के रङ्गों के घालमेल से उसे हर बार, विरोधी जबड़े के दाँत खट्टे करने होते हैं। जबड़े, लार और जीभ का लोकलुभावन सामञ्जस्य ही, हर पाँच साल में बबलगम (जनता) को दाँत के बीच अपना सिर देने को लालायित कर देता है। वह बेचारा तो अपनी दुर्गति में भी सदगति ढूँढ़ लेता है, बबलगम की मण्डी बनी रहने का मुख्य कारण, उसका रङ्ग और स्वाद नहीं, बल्कि लचीलापन है। अतः निष्कर्ष है कि, लच्यते सो जीवते, अर्थात जो लचीला है, वह जिन्दा रहता है। कुँचते-कुँचते अमृतकाल तक पहुँच चुके, बबलगम की लच्यता और दाँतों की लुच्यता को कोटिक नमन।

बढ़ती ठंड

कैसा ये मौसम है आया, कभी धूप सँग होती छाँव।
बैठे बिस्तर में है सारे, नहीं धरा पर रखते पाँव।।
ठिठुर रहे हैं लोग यहाँ पर, किटकिट करते सब के दाँत।
इक दूजे को करे इशारे, नहीं निकलती मुँह से बात।।
तेज सूर्य की किरणें आतीं, मिलती है ऊर्जा भरपूर।।
चौराहे पर बैठे–बैठे, ठंडी को करते हैं दूर।।
स्वेटर मफलर तन को भाये, स्पर्श नहीं करते हैं नीर।
छोटे बच्चे रोते रहते, क्या ठंडी में होती पीर।।
बादल में छुप जाता सूरज, और पवन की बहती धार।
दुबके मानव घर के अंदर, काम काज से माने हार।।
बहुत बढ़ी है ठंड धरा पर, थोड़ा कम कर दो भगवान।
देह बर्फ सी जमती जाती, कहीं निकल ना जाये प्राण।।

प्रिया देवांगन "प्रियू"

ग़ज़ल

रोशनी तो है मगर छाया अंधेरा है।
कोई कैसे जाने आखिर मुल्क मेरा है।

हर तरफ फैला हुआ है एक ताण्डव।
ज़ख्म ऐसे दे गये शब्दों का घेरा है।

गर्दनों पर छूरियां। कट्टों - बमों का दौर।
है कहां कानून बस गुण्डों का डेरा है।

हर कदम पर मौत बिकती है यहां देखो।
जाति -मजहब का मुकम्मल एक फेरा है।

बांटते हैं गांव -घर को। बांटते हैं देश को।
बंदिशों में ही ज़िन्दगी तेरा बसेरा है

वाई. वेद प्रकाश

कविताएँ केशव शरण

मन

कामनाएँ लेकर
दर-दर भटकता है
बेचैन रहता है
दर्द सहता है

विचित्र मन है
अत्यधिक बेचैनी में
कामनाएँ छोड़कर
संकल्प लेता है
बेचैनी गई कि
संकल्प तोड़ देता है

तबीयत बहलती है

नज़र के सामने है
एक ख़ूबसूरत रास्ता
पर इतनी दूर
कि आदमी तो दिखाई देता है
उस पर जाता
मगर उसका चेहरा
स्पष्ट नहीं हो पाता

कोई दिखता है पैदल
या जाता सायकिल से
तो अच्छा लगता है दिल से

उसे देखते हुए
मेरी तबीयत बहलती है
जो और गति पकड़ती है
जब कोई चिड़िया
पेड़ से उतरकर
उस पर टहलती है

उत्सव छोड़कर

दो-चार घंटे का वसंत
कुछ तो राहत है
दिनों-रात के
पतझर में

क्या है बात
यह राहत भी
खोते हो
और उदास होते हो
उत्सव छोड़कर ?

दिल में शिकायत भी समोते हो
न बुलाने पर!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-3-1
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 118
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

रामानुज अनुज

तग़ज़्ज़ल

यह शब्द गजल में प्रयुक्त होता है, जब शेर की रवानी, मिठास, बनावट, नर्माहट-गर्माहट मिलकर एक प्रभावी वातावरण का निर्माण करते हैं, जिसे सुनकर वह श्रोता भी 'वाह-वाह', 'क्या बात! बहुत उम्दा' कह उठता है या खड़ा होकर ताली बजाने लगता है, जो गजल के गुणों से अनजान है, ग़जल का रसिक भी नहीं है, तब समझिए ग़जल में कोई खास गुण है, जो सुनने वाले के अंतर्मन को प्रभावित कर रहा है, यही अदृश्य गुण तगज्जल है। तगज्जल ग़जल की आधार भूत ख़ासियत है और गजल का प्राण तत्व भी है।

■

तगज्जल की पैरोकारी में गुलज़ार साहब का यह शेर जो रिश्तों को मुसलसल पुख्ता बनाए रखने की सिफारिश करता है, काबिलेगौर है--

'हाथ छूटें भी तो रिश्ते नहीं छोड़ा करते।
वक़्त की साख से लम्हे नहीं तोड़ा करते।'

■

इंसानी जज्बात को बयाँ करता हुआ मीर तकी मीर का यह शेर,

'यूँ उठे आह उस गली से हम,
जैसे कोई जहाँ से उठता है।'

कुछ शेर और गौर करें, जो मैंने कहे हैं :

■

'मैंने तो बस मज़ाक में रोकी थी अपनी सांस,
रिश्ते खुले तो शर्म से मरना पड़ा मुझे।'

■

पैर भी भयभीत हैं जबसे उन्हें मालुम हुआ,
साजकर गैरों की टाँगे कद बढ़ा लेते हैं लोग।

■

अपनो का शोक कैसे मनाएँ यहाँ अनुज,
पक्की खबर मिली है, खुदा भी नहीं रहे।

■

लहरों में था जोश मुसल्सल उस पै भारी मेरा डर,
दोनों ने जब हाथ मिलाया, जल में नौका डूब गई।

■

बहुत सी मिसालें हैं जिन्हें उद्धित करूँ तो एक किताब बन जाएगी। मेरी फिक्र उनकी है जो ग़जल के मैदान में दांव-पेंच सीखे बिना जोर-आजमाइश में लगे हैं। उनका ख्याल है कि ग़जल न लिखी तो जिंदगी बेकार गयी। बेसऊर की गजलगोई पर अल्हड़ बीकानेरी चुटकी लेते हैं---

'लफ्ज़ तोड़े-मरोड़े ग़जल हो गई।
सर रदीफों के फोड़े ग़जल हो गई।
काफिया तंग देखा तो उसकी जगह,
भर दिए ईंट-रोड़े ग़जल हो गई।

मेरा उद्देश्य किसी की निंदा करना बिल्कुल नहीं है, बस दिली ख्वाइश है कि गजलगो खासी तैयारी के साथ मैदान में कूदें, ताकि आपके हर शेर में तगज्जल नुमाया हो, रसिक और गैर रसिक दोनो तरह के सुनने वाले दोनो हाथ से तालियाँ बजाकर कहें, 'वाह भई वाह।'

तगज्जल भले ही ग़जल के लिए कहा गया हो, लेकिन इसका विस्तार बहुत दूर तक है। जीवन के हर प्रसंग में, हर व्यवहार में तगज्जल का गुण उपस्थित होना चाहिए। मैं मानव जीवन के समस्त कारोबारों में तगज्जल की जरूरत महसूसता हूँ, चाहे वह साहित्य का क्षेत्र हो, संगीत का क्षेत्र हो या व्यापार का क्षेत्र हो या

शिक्षा, राजनीति का क्षेत्र हो। स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी को पूरी दुनिया दत्तचित्त होकर सुनती थी। स्वामी विवेकानंद के शिकागो में दिए गए भाषण को सदियाँ याद रखेंगी। कुछ ऐसे कवि होते हैं जो अपनी मंचीय प्रस्तुति से बेहतरीन रचनाकारों को पीछे छोड़ देते हैं। ग़जल गायकी में जो स्थान बेगम अख्तर को हासिल है, किसी को अब तक नसीब नहीं हुआ। दार्शनिक डॉक्टर राधाकृष्ण की प्रासंगिकता कभी कम नहीं हो सकती। बहुत से ऐसे नाम हैं, जो अपने कालखण्ड में और बाद में भी दुनिया के लिए जरूरी बने हुए हैं।

व्यापार जगत में टाटा-बिड़ला जो मकाम बना गए उसे अब तक कोई छू नहीं पाया। ऐसा नहीं के मुकाबिले के अन्य व्यापारियों के उत्पाद स्तरीय नहीं थे, स्तरीय थे, बल्कि कुछ उनसे भी बढ़कर थे। ये और कुछ नहीं हैं, प्रजेंटेशन और प्रकटीकरण में सिर्फ तगज्जल का गुण था जो उन्हें सर्वग्राही और मान्य बना दिया है। अपने कार्य में अलग दिखें, प्रासंगिक हों, आपकी उपस्थिति जगह विशेष में विशेष हो तो तगज्जल के साथ बढ़ना होगा।

मैं वह बातें नहीं कहूँगा जो मैंने पढ़ी-सुनी है, बल्कि वह कहूँगा जिसे मैंने जिया है और देखा है। हमारी कोशिश है कि मैं वह कहूँ जो निकट से महसूस किया हूँ। बड़े-बड़े उद्धरण और प्रसंग किताबों में भरे पड़े हैं। उनकी प्रासंगिकता स्वाध्याय से तय की जा सकती है। मैं कुछ नहीं कहूँगा। मैं तो वही कहूँगा, जो देखा है और जिया है। बत्तीस साल तक मैं ग्रामीण बैंक का सेवक रहा। लगभग एक सौ नवीन चेहरों से रोज मुलाकात होती थी। मेरी कोशिश रही कि कोई भी नाखुश होकर न जाए। यह दुरूह कार्य था, सभी के मन मुताबिक कार्य नहीं हो सकता है। संस्था के अपने नियम-कायदे होते हैं, सीमा में रहकर कार्य करने की बाध्यता होती है। इतना जरूर कहूँगा कि खुश और नाराज के बीच से मुझे जो किरदार मिले हैं, वे मेरे रचनाकर्म में प्रकट में हैं। मैंने देखा, 'प्रत्येक व्यक्ति में एक संसार बसता है। जिसका रचनाकार वह स्वयं है, भाग्य विधाता भी वही है।

किंतु वह जिस कूप में उतर कर नहाने गया था, वहीं पर रह गया, बाहर निकला ही नहीं। ऐसे व्यक्ति को स्वयं अपनी मदद करनी चाहिए थी परन्तु वह आलस्य किए पड़ा-पड़ा तकदीर को कोसता रहा।

मैं यहाँ भी तगज्जल की बात रखूँगा। आप खास हैं, अमूल्य हैं, आप जरूरी हैं, बस जरूरत हैं प्रत्येक ट्रांजेक्शन में तगज्जल के साथ जोरदार हाजिरी लगाने की। अगर आप एक अध्यापक हैं, तो मुस्कुराते हुए कक्षा में प्रवेश कीजिए, सारे बच्चों के चेहरों पर स्वयं मुस्कान छा जाएगी। अगर आप डॉक्टर हैं और मुस्कराते हुए मरीज का इलाज करेंगे तो मरीज का आत्मविश्वास दोगुना हो जायेगा। अगर आप एक गृहणी हैं तो मुस्कुराते हुए घर का प्रत्येक काम कीजिए, पूरे परिवार में अपने आप खुशियों का माहौल बन जायेगा। अगर आप व्यवसायी है, डॉक्टर हैं, बैंकर हैं तो अवश्य मुस्कुराइए, फिर रिजल्ट देखिए।

मुस्कुराहट के कोई पैसे नहीं लगते, अतिरिक्त मेहनत नहीं करनी पड़ती, आप मुस्कुराइए तो सही, फिर देखिए कमाल, आप कुछ ही दिनों में लोकप्रिय हो जाएंगे। मुस्कुराइए साहब! मुस्कुराहट मनुष्य होने का सबूत भी है। एक पशु कभी भी मुस्कुरा नही सकता। इसलिए स्वयं भी मुस्कुराएं और और के चेहरे पर भी मुस्कुराहट देखें। जीवन को कभी भी तगज्जल से अलग न होने दें।

खुशहाल थी जिंदगी जब
जहां से हमें मिली गाली।
और बेच चुके खुद को जब
कुछ चंद रोकड़ों में तब जहां ने समझा शहंशाह हमें।
राहों के कांटो ने रूहों को लहूलुहान किया जब
आवारगी की मिसाल बने
जहां में हम
और बेच चुके खुद को जब
चंद लम्हों के मोल
समझा जहां ने हमें
पल्लवित गुलाब सा तब।
उमंग और उल्लास निखरा जो
दिल की तली से जब मनचलों की बस्ती में
जहां ने रखा हमें तब
और बेच चुके खुद को
लबों की मुस्कान पे जब रखा इस जहां ने हमें
विद्वजनों की श्रेणी में तब।

विकास तिवारी

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-8-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 126

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

चिकित्सा और सामाजिक विज्ञान के आईने में पारंपरिक विवाह के लोकाचार

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

विवाह भारतीय परंपरा में मात्र एक मांगलिक कार्य भर नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज में एक दायित्वपूर्ण जीवन की शुरुआत के लोकोत्सव के रूप में भी स्थापित है। विवाह के अवसर पर अनेक प्रकार के विधि-विधान किए जाते हैं। आज की पीढ़ी भले ही इन विधानों और लोकाचारों में प्राचीनता की गंध या अंधविश्वास की निरर्थकता का अनुभव करती हो, पर मेरी मान्यता है कि हमारे पूर्वज तपस्वी और ज्ञानी थे और हम यदि इस विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे तो पग-पग पर अपनी परंपराओं में हमें विज्ञान के दर्शन होंगे। पारंपरिक विवाह की समस्त गतिविधियों में से विशेषत: संगीत, मिट्टी, दूब, धान और हल्दी- इन पाँच महत्त्वपूर्ण संदर्भों पर मैं अपने विचारों को केंद्रित करना चाहूँगा।

संगीत

जो बेटी जन्म से किशोरावस्था तक माँ-बाप के संरक्षण में पलती-बढ़ती है, वही युवावस्था में किसी और परिवार की अपनी बनकर माँ-बाप को पराया मानने के लिए विवश हो जाती है। विवाह की यह प्रथा तो ऐसी ही तकलीफदेह है। इसी दु:ख और पीड़ा को कम करने के लिए अलग-अलग विधियों के लिए अनेक गीतों के गाने का प्रचलन है। व्यस्तता और भीड़ इस तकलीफ़ से जहाँ जूझने की ताकत देती है, वहीं संस्कार गीतों का संगीत दर्द को कम करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मिट्टी

मटकोर अर्थात माटी-कोड़ाई के मूल में तो भारतीय संस्कृति का पूरा समाजशास्त्र ही है। यही सामाजिक दर्शन विश्व के सभी देशों से अलग जहाँ हमें विशेष रूप से रेखांकित करता है वहीं, विश्वगुरु बनने की हमारी क्षमता पर मुहर लगाता है। मटकोर की विधि को संपन्न करने के लिए घर, गाँव और संबंधियों की निमंत्रित स्त्रियाँ घर के पास की नदी, कुँए या खेत में जाती हैं और वहाँ से शुद्ध मिट्टी कोड़कर लाती हैं। उसी मिट्टी के ऊपर कलश रखा जाता है तथा उसमें और मिट्टी मिलाकर लग्न का चूल्हा बनाया जाता है, जिसे बिअहुती चूल्हा कहते हैं।

धरती माँ की गोद में ही हम जन्म लेते हैं, खेल-खेलकर बड़े होते हैं और उन्ही के साथ मिलकर संघर्ष करते हुए जीवन-यापन करते हैं। इसीलिए हम हर क्षण उनका आभार मानते हैं। जब हम अपने उपयोग के लिए माँ धरती से मिट्टी प्राप्त करना चाहते हैं तो पहले उनकी पूजा करते हैं और तब उनसे निवेदन के पश्चात ही कुदाल आदि से मिट्टी कोड़ते हैं। हम अपने हित के लिए न ही हिंसक हो सकते हैं और न ही क्रूर। "सर्वे भवन्तु सुखिन:" में ही हमारा सुख है। अपने दैनंदिन जीवन में भी हम पेड़ आदि पर चढ़ने से पहले पेड़ को प्रणाम करते हैं, किसी नदी में प्रवेश करने से पूर्व उस नदी को प्रणाम करते हैं और अर्ध रात्रि में नदी में प्रवेश करना निषिद्ध मानते हैं क्योंकि उस समय नदी सो रही होती है। प्रकृति के साथ हमारा यह संबंध पूर्णत: मानवीय है।

दूब

हल्दी और धान के साथ ही दूब भी उसी गौरव के साथ यात्रा करती है। तिलक से आरंभ होकर पूजा के हर मोड़ पर तथा विदाई के समय खोइँछा में भी दूब मुस्कराती रहती है। चाहे कितनी ही गर्मी क्यों न पड़े, धरती चारों ओर सूखी-सी क्यों न जान पड़े, फिर भी कहीं न कहीं दूब के दर्शन हो ही जाते हैं। विपत्ति की अंतिम स्थिति में भी दूब हार नहीं मानती। दूब के माध्यम से इसी प्रकार का संदेश दिया जाता है कि विपत्ति की भयानक घड़ियों में भी जिजीविषा बनी रहनी चहिए और दंपति को मुस्कराते-खिलखिलाते हुए (लहलहाते हुए) हर बाधा को पार करने का प्रयत्न करना चहिए। जिस प्रकार ग्रीष्म में भी दूब अपने आस-पास के वातावरण से पोषण प्राप्त कर लेती है, वैसे ही धैर्य रखकर हर व्यक्ति संपोषण के विकल्पों की तलाश कर सकता है।

धान

धान न केवल एक अनाज है बल्कि वह सभी अनाजों के व्याज से कृषि प्रधान भारतीय समाज की पोषण सामग्री, संपन्नता और खुशहाली का प्रतिनिधित्व करता है। धान का पहला पक्ष है अनाज के रूप में उसका मूल रूप अर्थात कुटाई के बाद चावल बनने से पहले का रूप। गृहस्थों की दुनिया में यह इसका सामान्य स्वरूप है। इसमें कृषक जीवन के स्वाभाविक क्रियाकलाप से संघर्ष तक की पूरी कहानी समाहित है।

विवाह के आरंभिक अंग 'तिलक' में कन्या पक्ष वर पक्ष के यहाँ

जाकर वर की पूजा करते हुए तिलक चढ़ाता है| दो अपरिचित पक्षों के पारस्परिक संबंध की शुरुआत यहीं से होती है| तिलक के बाद पुरोहित जी के द्वारा लग्नपत्री का दिया जाना वैवाहिक संबंध की सहमति का द्योतक है। इस सहमति के बाद वर और कन्या- दोनों ओर से लाए गए धान, दूब और हल्दी को आपस में मिला दिया जाता है और उसे दो भागों में विभक्त कर दोनों पक्षों को सौंप दिया जाता है। हमारे पितृप्रधान देश में सामान्य तौर पर कन्या पक्ष के लोग छोटे और वर पक्ष के लोग बड़े माने जाते हैं। ऐसे में इसका संकेत स्पष्ट है कि विवाह के बाद हम दोनों परिवार के लोगों में कोई भी न छोटा होगा और न ही बड़ा। आज से हम एक हुए। हम एक दूसरे के सुख-दुख में सदा एक दूसरे का सहयोग करेंगे। इस प्रकार विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन न होकर दो परिवारों का मिलन हो जाता है। व्यावहारिक रूप में आज भी रिश्तेदारों को एक दूसरे के परिवार की ताकत के रूप में देखा और माना जाता है। समता, आत्मीयता और एकता के सामाजिक विज्ञान का ऐसा उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है।

धान का एक दूसरा पक्ष है उसका भुना हुआ रूप। सर्वाधिक प्रयोग में आनेवाले अनाजों में यही एक ऐसा अनाज है जिसके अधिक ताप की स्थिति में लावा बनने पर भी उसका छिलका और लावा एक दूसरे से अलग नहीं होते। विवाह से पूर्व तिलक के उपरांत प्राप्त धान, वर और कन्या- दोनों पक्षों के यहाँ 'घोनसारि' में भुँजवाया जाता है और मड़वे में दोनों को मिलाने (लावा-मेराई) के बाद कन्या का भाई अपनी बहन (कन्या) के हाथ में लावा देता है। बहन उसे पति के हाथ में देती है और पति उसे बिखेर देता है। इसके बाद भाई जल की धार गिराता है और इस धार के कभी न रुकनेवाले गीतों का सिलसिला चल पड़ता है।

राधावल्लभ शर्मा इसके तीन कारण बताते हैं। भाई बहन के हाथ में लावा इसलिए भरता है कि जिस प्रकार धान पहले खेत में बोया जाता है, फिर उसे उखाड़ कर दूसरे खेत में रोपा जाता है, जहाँ वह फूलता-फलता है; उसी प्रकार लड़की पैदा होती है पितृगृह में और फूलती-फलती है पतिगृह में। दूसरा कारण यह हो सकता है कि छिलका साथ रहने पर ही धान में उत्पादन की क्षमता रहती है। चावल में उत्पादन की क्षमता नहीं होती। उसी प्रकार, लड़की के लिए धान के छिलके की तरह पति का संरक्षण आवश्यक है, जिससे वह फूले-फले। तीसरा कारण संभवत: यह है कि भाई बहन की अंजलि कई बार इसलिए भरता है कि पिता के बाद घर पर भाई का प्रभुत्व होगा। पिता के बाद बहन जब-जब इस घर में आएगी, उसकी अंजलि उसी प्रकार भरी जाएगी और उसका आदर-सत्कार पूर्ववत होता रहेगा।

मेरे मतानुसार इसके पीछे का सामाजिक दर्शन कुछ और भी हो सकता है। एक तो आचार के अनुशासन की ओर इंगित करता है। पत्नी पक्वान्न स्वयं ग्रहण करने से पहले अपने पति को देती है और पति इस बात को मानना नहीं चाहता, मतलब वह एक साथ मिल-बाँटकर खाने के पक्ष में है। दूसरा चरित्रगत लगता है। भाई कहता है कि "हे बहन, अब तुम जिसके साथ मिलकर संपूर्ण अर्थात "दो शरीर एक प्राण" होने जा रही हो, उस पर किसी भी प्रकार की विपत्ति आने पर धान के चरित्र के समान ही उसका साथ मत छोड़ना।" बहन लावे की अंजलि अपने पति के हाथ में देकर अपनी पूर्ण सहमति व्यक्त करती है। यही तो हमारे भारतीय समाज के परिवारों की सबसे बड़ी ताकत है। सुरक्षा का इतना बड़ा अहसास और विश्वास विश्व की किसी भी संस्कृति में प्राप्त नहीं होता।

हल्दी

आयुर्वेदिक औषधियों में हल्दी और तुलसी का सर्वाधिक महत्व है। त्वचा की सफाई और उसे रोगमुक्त रखने में इसकी भूमिका पारंपरिक जन-जीवन में सबसे अधिक है। यही कारण है कि नए संवत के आगमन से पूर्व जहाँ परिवार के सभी सदस्यों के शरीर में हल्दी और सरसो के मिश्रण का अनुलेपन(उबटन) लगाया जाता है और उसकी मालिश के बाद मैल के रूप में निकलनेवाली झिल्ली को होलिका दहन में जलाकर रोगाणुओं को नष्ट कर परिवार और समाज के माध्यम से राष्ट्र को स्वस्थ, सानंद और अपने स्वाभाविक रूप में सक्रिय किया जाता है, वहीं दो अपरिचित शरीरों के मिलन से पूर्व उनके शरीर की भी हल्दी के अनुलेपन से पूरी तरह पारंपरिक तौर पर सफाई की जाती है, उनकी त्वचा को रोगमुक्त किया जाता है ताकि एक स्वस्थ परिवार की शुरुआत हो सके। इस कार्य में पूरा समाज शामिल होता है ताकि कहीं से इस कार्य में चूक न हो जाए। इसे उत्सव का एक अनिवार्य अंग बना देने के पीछे भी शायद यही रहस्य है कि किसी भी स्थिति में इसे भुलाया न जा सके और स्वस्थ परिवार के निर्माण का यह कार्य अनवरत अबाध रूप से चलता रहे।

सीमित संसाधनों में चिकित्सा विज्ञान की अत्यावश्यक औपचारिकताओं को हमारे मनीषी पूर्वजों ने व्यक्तिगत और सामाजिक आचरण के साथ इस प्रकार संपृक्त कर दिया है कि जब तक इसमें हमारा विश्वास कायम रहेगा, हमारे स्वास्थ्य में किसी प्रकार की कमी नहीं आएगी। दरअसल, आयुर्वेद अर्थात भारतीय चिकित्सा का प्रथम लक्ष्य स्वस्थ व्यक्ति को किसी भी कीमत पर अस्वस्थ न होने देना है, व्याधियों का निदान दूसरे स्थान पर आता है। यह खेद की बात है कि पर्याप्त श्रम और अध्ययन के अभाव में हमारे भारतीय समाज में विज्ञान के नाम पर भावनाविहीन चश्मों से कुछ तथाकथित विद्वान ऐसी मान्यताओं को अंधविश्वास बताने लगे हैं। यदि समय रहते ही ईश्व ऐसी निधियों को सद्बुद्धि न दी तो त्याग और तपस्या से प्राप्त हमारे पूर्वजों के इस अमूल्य वरदान को अभिशाप बनने से नहीं रोका जा सकता।

(लघुकथा)

सांत्वना

मासी को जैसे ही कानपुर वाली चचिया सास का कॉल आया,विमलेश की एक्सीडेंट में मौत हो गयी है| तुरंत ही मासी बेटे के साथ विमलेश के घर चल दी| विमलेश भतीजा था| कुल 35 साल का होगा| बेटा तो तीसरे दिन की उठावना करके वापस आ गया मासी और घर की सभी वृद्ध महिलाएं विमलेश के घर रुक गयी विमलेश की पत्नी मिताली को सांत्वना देने के लिए|

सभी वृद्ध महिलाओ को सुबह बिस्तर पर चाय,हाथ में नाश्ता खाना चाहिए| प्राइवेट जॉब वाले विमलेश को कंपनी से कुछ ज्यादा मदद नहीं मिली थी| मिताली के घर कोई काम वाली भी नहीं थी| छोटे बच्चों को संभालती परेशान मिताली यह सोच रही थी कि सांत्वना देने वाली मोसिया चाचियां कब तक जाएगी| इनकी सेवा के चक्कर में बच्चों को टाइम पर कुछ नहीं मिल रहा था| ये रिश्तेदार आर्थिक मदद करेंगे नही| जिंदगी की जंग उसे ही लड़नी थी| पर यह लोग कब समझेंगे ? नहीं चाहिए ऐसी सांत्वना|उसकी आँखों से आंसू बहने लगे| पति का चेहरा सामने आ गया|

इन्दु सिन्हा"इन्दु"

संघमित्रा राएगुरु

नमक

एक बूँद आँसू की, एक बड़ी-सी दुनिया है।
जिसमें कभी अचानक जल सकते हैं,
या बुझ सकते हैं अनगिनत दीपक। सुननी पड़ सकती है,
राजा-रानी या बूढ़ी डायन की गल्प।
मै अभी वहीं उलझी हूँ। जानते हो तुम ?
तुम्हारे जानने या न जानने से, कोई दिक्कत नहीं।
कोई कहीं भी ठोकर खा सकता है।
हालाँकि आँखों के आगे कोई जाल नहीं।
समय बदल रहा है, असमय।
रिश्तों को गले की माला बनाने वाले,
आदमी के गले में काँटे की तरह, कौन फँसा हुआ है ?
पक्के घर का स्वप्न साकार होने के बाद,
मिट्टी के घर को पूछता कौन है ?
खून पानी बन जाने पर, क्या होता है खून का नाम ?
खोये हुए क्षण, हाथ से खिसक गए दिन,
क्या वास्तव में नहीं आते हैं ?
रंगीन अत्याधुनिक कपड़ों की तरह,
इस शरीर में लिपटे हुए हैं, अनसुलझे सवाल।
मौन की चोट से, गिर रहे हैं कचनार के फूल।
मर रही है आस की दुनिया।
कट कर टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं, कल्पित शहर।
शहर के अंतिम छोर पर स्थित,
चाय की दुकान में खत्म हो गई चीनी,
अब नमक, केवल नमक है।
नमक की दिल दहला देने वाली कहानी,
इतिहास की किताब में पढ़ी है तुमने ?
नहीं पढ़ी कोई बात नहीं ।
छोड़ो ! युगों से नमक को दांडी-यात्रा के बारे में,
पूछना मना है।।

मैं इक खुशहाल भारत बनाऊंगा

चाहे खेत हो या हो खलिहान
सड़क का काम हो या हो मकान
बड़े बड़े पुलों का निर्माण करना हो
क्रिकेट का स्टेडियम हो या हो मैदान

मेरे काम की कीमत कोई समझता नहीं
मेरे बिना कोई भी काम हो नहीं सकता
कड़कती धूप हो या कड़ाके की ठंड
फौलादी शरीर है नरम हो नहीं सकता

सुबह से शाम तक मेहनत करता हूँ
भगवान को मानता हूं हमेशा डरता हूँ
अपने खून पसीने की कमाई से
अपने परिवार का पेट भरता हूँ

जब अमीर ठंडे कमरे में सो रहा होता है
मज़दूर कड़कती धूप में रेता बजरी ईंट ढोता है
भरपेट खाता है पैसे वालों का बच्चा
हमारा दो वक्त की रोटी के लिए रोता है

थका हारा शाम को जब घर पहुंचता है
बच्चों का साथ पाकर खुश हो जाता है
गायब हो जाती है थकान पल भर में
रूखा सूखा खाना पांचसितारा बन जाता है

उम्र बीत गई लोगों के घर बनाते बनाते
अपना आशियाना नहीं बन पाया है
कहीं तो रहना है पेट पालना है
खुले आसमान के नीचे तम्बू लगाया है

मेहनत और ईमानदारी की ही खाऊँगा
अपने बाजुओं की ताकत मैं लगाऊंगा
देश पर अपना सब लुटा दूंगा
एक खुशहाल भारत मैं बनाऊंगा

रवींद्र कुमार शर्मा

उस रात नहीं मैं रोया

(डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद)

जब बालक सा व्याकुल
तेरी गोद में छिपकर सोया
उस रात नहीं मैं रोया।

जीवन के दुख सारे भूल
हर्षित मन बरसाये फूल
विस्मृत करके सारे हार
नोन जैसे जल में खोया
उस रात नहीं मैं रोया।

पथ कंटकित नहीं याद किया
स्वर्ग भी नहीं फरियाद किया
गतिमान बन किरणों जैसे
भार दर्द नहीं मैं ढोया
उस रात नहीं मैं रोया।

स्वर्णिम सी धीर छाया
छोड़ जगत की मोह माया
प्यासी धरा पर सोम बन
हर्षित वर्णित मैं जोया
उस रात नहीं मैं रोया।

जीवन बगिया अब महका
ज्वार कोई उर में दहका
नव जीवन सा ले आकार
मधुमय बीज बताए बोया
उस रात नहीं मैं रोया।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

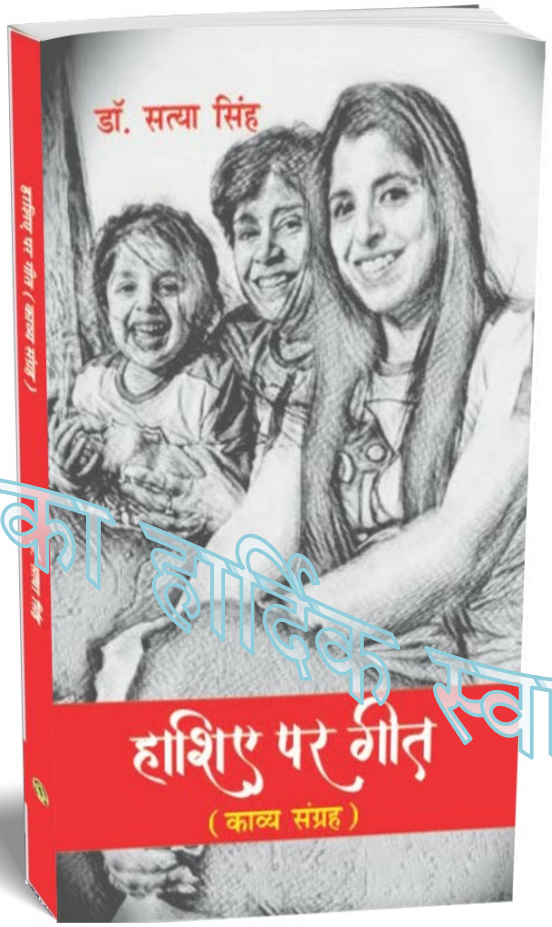

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-963524-7-9
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 120
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

आकांक्षा यादव

जिन्दादिली की मिसाल थे देवानंद

पुण्यतिथि (4 दिसंबर पर विशेष)

'रोमांसिंग विद लाइफ' :

भारत के स्क्रीन लीजेंड्स की अगर कभी लिस्ट बनाई जाएगी तो उसमें हिंदी फिल्मों के सदाबहार अभिनेता और निर्माता-निर्देशक देवानंद साहब का नाम सबसे ऊपर शुमार हो। वह सही मायने में बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और अभिनेता, निर्देशक तथा निर्माता के रूप में उन्होंने विभिन्न भूमिकाएं निभाईं। जिस तरह दिलीप कुमार ट्रेजडी किंग के नाम से जाने जाते थे, वहीं देवानंद रोमांस किंग के नाम से लोकप्रिय थे। अपनी डायलॉग डिलीवरी, अदाकारी, लुक्स और हेयरकट के अलावा देव अपने फैशन सेंस के लिए भी बेहद प्रसिद्ध थे। सफेद शर्ट के ऊपर काला कोट पहनना उनका सिग्नेचर स्टाइल बन गया था। भारतीय सिनेमा के सदाबहार अभिनेता देवानंद ने 1946 में फिल्मी दुनिया में कदम रखा था और 88 साल की उम्र में इस सदाबहार नौजवान का ग्लैमर की दुनिया में 65 साल काम करने के बाद 4 दिसंबर, 2011 को लंदन में दिल का दौरा पड़ने से इंतकाल हो गया।

देवानंद का जन्म पंजाब के गुरदासपुर जिले में 26 सितंबर, 1923 को हुआ था। उनका बचपन का नाम देवदत्त पिशोरीमल आनंद था। उनके पिता जी पेशे से वकील थे। देवानंद ने अंग्रेजी साहित्य में अपनी स्नातक की शिक्षा 1942 में लाहौर के मशहूर गवर्नमेंट कॉलेज से पूरी की। इस कॉलेज ने फिल्म और साहित्य जगत को बलराज साहनी, चेतन आनंद, बी. आर. चोपड़ा और खुशवंत सिंह जैसे शख्सियतें दी हैं। पर बहुत कम लोगों को पता होगा कि देवानंद के कैरियर की शुरुआत चिट्ठियों के साथ हुई थी। जी हाँ, देवानंद साहब की उम्र जब बमुश्किल 20-21 साल की थी, तो 1945 में उन्हें पहला ब्रेक मिला और देवानंद साहब को सेना में सेंसर ऑफिस में पहली नौकरी मिली। इस काम के लिए देवानंद को 165 रूपये मासिक वेतन के रूप में मिला करता था जिसमें से 45 रूपये वह अपने परिवार के खर्च के लिए भेज दिया करते थे। उस समय द्वितीय विश्व-युद्ध चल रहा था। उनका काम होता था फौजियों की चिट्ठियों को सेंसर करना। सच में एक से एक बढ़कर रोमांटिक चिट्ठियाँ होती थी। एक चिट्ठी का जिक्र स्वयं देवानंद साहब बड़ी दिल्लगी से करते हैं, जिसमें एक मेजर ने अपनी बीबी को लिखा कि उसका मन कर रहा है कि वो इसी वक्त नौकरी छोड़कर उसकी बाहों में चला आए। बस इसी के बाद देवानंद साहब को भी ऐसा लगा कि मैं भी नौकरी छोड़ दूँ। बस फिर छोड़ दी

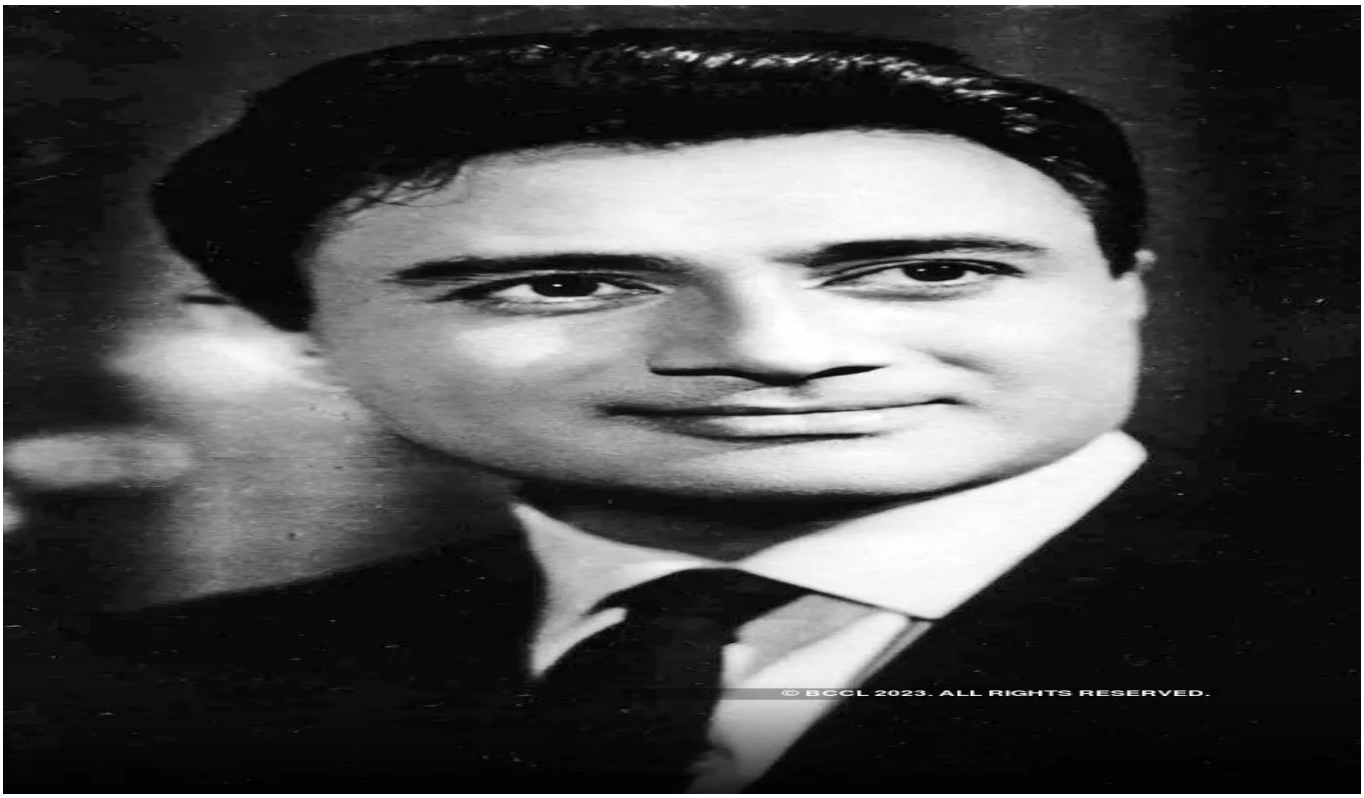

नौकरी, लेकिन किस्मत की बात है कि उसके तीसरे ही दिन उन्हें प्रभात फिल्मस से बुलावा आ गया और इस प्रकार देवानंद ने 1946 में फिल्मी दुनिया में कदम रखा और फिल्म थी - प्रभात स्टूडियो की हम एक हैं। दुर्भाग्यवश यह फिल्म असफल ही रही, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।

वर्ष 1948 में प्रदर्शित फिल्म 'जिद्दी' देव आनंद के फिल्मी कैरियर की पहली हिट फिल्म साबित हुई। इस फिल्म से वो बड़े अभिनेता के रूप में स्थापित हो गए। इसके बाद उन्हें कई फिल्में मिलीं। इस फिल्म की कामयाबी के बाद उन्होंने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा और नवकेतन बैनर की स्थापना की। नवकेतन के बैनर तले उन्होंने वर्ष 1950 में अपनी पहली फिल्म 'अफसर' का निर्माण किया जिसके निर्देशन की जिम्मेदारी उन्होंने अपने बड़े भाई चेतन आनंद को सौंपी। इस फिल्म के लिए उन्होंने उस जमाने की जानी-मानी अभिनेत्री सुरैया का चयन किया जबकि अभिनेता के रूप में देवानंद खुद ही थे। इसके बाद देवानंद ने कई बेहतरीन फिल्में की और अपने अभिनय का लोहा मनवाया। इन फिल्मों में पेइंग गेस्ट, बाजी, ज्वेल थीप, सीआईडी, जॉनी मेरा नाम, टैक्सी ड्राइवर, फंटुश, नौ दो ग्यारह, काला पानी, अमीर गरीब, हरे रामा हरे कृष्णा और देस परदेस का नाम लिया जा सकता है। देवानंद केवल अभिनेता ही नहीं थे, उन्होंने फिल्मों का निर्देशन किया, फिल्में प्रोड्यूस भी कीं। नवकेतन फिल्म प्रोडक्शन के बैनर तले उन्होंने 35 से अधिक फिल्मों का निर्माण किया। वर्ष 1970 में फिल्म 'प्रेम पुजारी' के साथ देवानंद ने निर्देशन के क्षेत्र में भी कदम रखा। हालांकि यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह से नकार दी गई बावजूद इसके उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन पर फिल्माया गया गीत- 'मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया, हर फिक्र को धुंए में उड़ाता चला गया', उनके जीवन के बहुत करीब था। इसके बाद वर्ष 1971 में फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' का निर्देशन किया जिसकी कामयाबी के बाद उन्होंने अपनी कई फिल्मों का निर्देशन किया।

देवानंद प्रख्यात उपन्यासकार आर. के. नारायण से काफी प्रभावित थे और उनके उपन्यास गाइड पर फिल्म बनाना चाहते थे। आर. के.नारायणन की स्वीकृति के बाद देवानंद ने फिल्म गाइड का निर्माण किया जो देवानंद के सिने कॅरियर की पहली रंगीन फिल्म थी। इस फिल्म के लिए देवानंद को उनके जबर्दस्त अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्म फेयर पुरस्कार भी दिया गया। देवानंद को दो फिल्मफेयर पुरस्कार मिले - 1958 में फिल्म काला पानी के लिए और फिर 1966 में गाइड के लिए। गाइड ने फिल्मफेयर अवार्ड में पाँच अवार्डों का रिकार्ड भी बनाया। इतना ही नहीं गाइड 1966 में भारत की तरफ से ऑस्कर के लिए नामांकित भी हुई थी। आगे चलकर देवानंद ने नोबल पुरस्कार विजेता पर्ल बक के साथ मिलकर अंग्रेजी में भी गाइड का निर्माण किया।

देवानंद अपने काले कोट की वजह से भी काफी चर्चा में रहे। देवानंद अपने अलग अंदाज और बोलने के तरीके के लिए काफी मशहूर थे। उनके सफेद कमीज और काले कोट के फैशन को तो युवाओं ने जैसे अपना ही बना लिया था और इसी समय एक ऐसा वाकया भी देखने को मिला जब न्यायालय ने उनके काले कोट को पहन कर घूमने पर पाबंदी लगा दी। वजह थी कुछ लड़कियों का उनके काले कोट के प्रति आसक्ति के कारण आत्महत्या कर लेना। दीवानगी में दो-चार लड़कियों ने जान दे दी। देवानंद के जानदार और शानदार अभिनय की बदौलत परदे पर जीवंत आकार लेने वाली प्रेम कहानियों ने लाखों युवाओं के दिलों में प्रेम की लहरें पैदा कीं लेकिन खुद देवानंद इस लिहाज से जिंदगी में काफी परेशानियों से गुजरे। देवानंद सुरैया को कभी भुला नहीं पाए और अक्सर उन्होंने सुरैया को अपनी जिंदगी का प्यार कहा है। वह भी इस हकीकत के बावजूद कि उन्होंने बाद में अभिनेत्री कल्पना कार्तिक से विवाह कर लिया था। वर्ष 2005 में जब सुरैया का निधन हुआ तो देवानंद उन लोगों में से एक थे जो उनके जनाजे के साथ थे। अपनी आत्मकथा में भी देवानंद ने सुरैया के साथ अपने संबंधों का उल्लेख किया है। जीनत अमान के साथ भी उनके प्यार के चर्चे खूब रहे। देवानंद ने 'हरे रामा हरे कृष्णा' के जरिए जीनत अमान की खोज की। अपनी आत्मकथा 'रोमांसिंग विद लाइफ' में उन्होंने लिखा कि वे जीनत अमान से बेहद प्यार करते थे और इसीलिए उन्हें अपनी फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' में अभिनेत्री बनाया था। लेकिन देवानंद का यह प्यार परवान चढ़ने से पहले ही टूट गया, क्योंकि उन्होंने जीनत अमान को एक पार्टी में राजकपूर की बाहों में देख लिया था। गौरतलब है कि देवानंद ने कल्पना कार्तिक के साथ शादी की थी लेकिन उनकी शादी अधिक समय तक सफल नहीं हो सकी। दोनों साथ रहे लेकिन बाद में कल्पना ने एकाकी जीवन को गले लगा लिया। कई अभिनेत्रियों से उनके संबंधों को लेकर बातें उड़ीं, पर देवानंद अपनी ही धुन में मस्त व्यक्ति थे। टीना मुनीम, नताशा सिन्हा व एकता जैसी तमाम अभिनेत्रियों को मैदान में उतारने का श्रेय भी देवानंद को ही जाता है।

देवानंद के बारे में कहा जाता है कि वो कभी हार न मानने वाले लोगों में से थे। उनका सबसे बड़ा सशक्त पक्ष यह रहा कि उनकी उम्र कुछ भी रही हो, उन्होंने खुद को हमेशा युवा ही माना। सामाजिक मुद्दों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का कोई मुकाबला नहीं था तथा सिनेमा में भी उन्होंने जिन मुद्दों को उठाया उनसे समाज में नए मापदंड स्थापित करने में मदद मिली। फिल्मों में देवानंद के योगदान को देखते हुए उन्हें 1993 में फिल्मफेयर लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड दिया गया। उन्हें वर्ष 2001 में पद्मभूषण और 2002 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार से भी नवाजा गया। देवानंद हमेशा अपनी शर्तों पर जिए। देवानंद ने जिंदगी को कितनी खूबसूरती के साथ जिया, इसका अंदाजा उनकी आत्मकथा के शीर्षक 'रोमांसिंग विद लाइफ' से पता चलता है। 438 पृष्ठों की उनकी इस आत्मकथा का विमोचन खुद प्रधानमंत्री ने किया था। पुस्तक में देवानंद ने अपनी युवावस्था, लाहौर, गुरदासपुर, फिल्मी दुनिया के संघर्ष, गुरुदत्त के साथ मित्रवत रिश्तों और सुरैया के साथ अपने संबंधों का उल्लेख किया। इसके अलावा देवानंद ने अपने भाई विजय आनंद और चेतन आनंद के संबंध में भी इस किताब में लिखा। एक बार उन्होंने कहा था कि रोमांस का मतलब महिलाओं के साथ हमबिस्तर होने से ही क्यों लगाया जाता है। इसके मायने किसी के हाथ को अपने हाथ में लेना और बात करना भी हो सकते हैं। यह उनकी जिन्दादिली ही थी। आज देवानंद को गुजरे कई साल बीत चुके हैं लेकिन सदाबहार हीरो की उनकी छवि आज भी बरकरार है।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-8-7**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 198
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

स्वामी विवेकानंदजी को समर्पित युवा दिवस

सनातन संस्कृति के सजग, प्रेरक संवाहक, विलक्षण व ओजस्वी वाक-शैली के धनी, मां भारती के अमर सपूत स्वामी विवेकानंदजी आजीवन एक संन्यासी के रूप में रहे और देश-समाज की भलाई के लिए काम करते रहे। अपने ज्ञान के बल पर स्वामी विवेकानंद विश्व विजेता बने। वे हिन्दुस्तान के एक ऐसे संन्यासी रहे हैं, जिनके संदेश आज भी लोगों को उनका अनुसरण करने को मजबूर कर देते हैं। गौरतलब है कि 12 जनवरी का दिन स्वामी विवेकानंद के नाम पर समर्पित है और इसे युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानंद एक ऐसे संन्यासी का नाम जिनके अनुयायी देश ही नहीं, बल्कि दुनिया के हर कोने में नजर आते हैं और एक ऐसा संन्यासी जिनका एक वक्तव्य पूरी दुनिया को अपना कायल बनाने के लिए काफी होता था। लेकिन क्या आप जानते हैं कि अपने ज्ञान के बल पर दुनिया का दिल जीतने वाले वही स्वामी विवेकानंद को एक बार एक वेश्या के आगे हार गए थे। एक वाक्या यह भी है कि स्वामी विवेकानंद का घर एक वेश्या मोहल्ले में था जिसके कारण विवेकानंद दो मील का चक्कर लगाकर घर पहुंचते थे।

बात उस समय की है जब स्वामी विवेकानंद राजस्थान के एक छोटी-सी रियासत (रजवाड़े) खेतडी के महाराजा के अमरीका जाने के पहले मेहमान थे। अब महाराजा तो महाराजा ठहरे ! अब स्वामी विवेकानंद का स्वागत कैसे करें ? और अमरीका जाता है संन्यासी, पहला संन्यासी, स्वागत से विदा होनी चाहिए ! तो हर एक की अपनी भाषा होती है, अपने सोचने का ढंग होता है, महाराजा और क्या करता, तो राजा ने उनके लिए एक स्वागत समारोह रखा। उस समारोह के लिए उसने बनारस से देश की सबसे बड़ी जो खयातिनाम / प्रसिद्ध वेश्या थी, उसको बुलवा भेजा। बड़ा जलसा मनाया । वेश्या का नाच रखा। यह भूल ही गए कि किसके लिए यह स्वागत-समारोह हो रहा है। विवेकानंद के लिए !

जैसे ही स्वामी विवेकानंद को इस बात की जानकारी मिली कि राजा ने स्वागत समारोह में एक वेश्या को बुलाया है तो वे संशय में पड़ गए। अब आप स्वामी विवेकानंद की दशा समझ सकते हैं ! बड़े मन को चोट लगी

कि यह कोई बात हुई ! संन्यासी के स्वागत में वेश्या ! आखिर एक संन्यासी का वेश्या के समारोह में क्या काम, यह सोचकर उन्होंने समारोह में जाने से इनकार कर दिया और अपने कक्ष में बैठे रहे। साधारण भारतीय संन्यासी की धारणा यही है ! हाँ, इंकार कर दिया जाने से। अपमानित महसुस किया अपने को, अपने अनुभव को । यह तो असम्मानजनक घटना हो रही है।

वेश्या बड़ी तैयार होकर आयी थी। संन्यासी का स्वागत करना था, कभी किया नहीं था संन्यासी के स्वागत में कोई नाच-गान ! बहुत तैयार होकर आयी थी, बहुत पद याद करके आयी थी--कबीर के, मीरा के, नरसी मेहता के।

लेकिन जब यह खबर वेश्या तक पहुंची कि उसकी वजह से वह इस कार्यक्रम में भाग लेना ही नहीं चाहते तो वह काफी आहत हुई, बहुत दु:खी हुई कि संन्यासी नहीं आएंगे। मगर उसने एक गीत नरसी मेहता का गाया--बहुत भाव से गाया, खूब रोकर गाया, आंखों में झर-झर आंसू बहे और गाया। उसके भाव थे कि एक पारस पत्थर तो लोहे के हर टुकड़े को अपने स्पर्श से सोना बनाता है फिर चाहे वह लोहे का टुकड़ा पूजा घर में रखा हो या फिर कसाई के दरवाजे पर पड़ा हो। और अगर वह पारस ऐसा नहीं करता अर्थात पूजा घर वाले लोहे के टुकड़े और कसाई के दरवाजे पर पड़े लोहे के टुकड़े में फर्क कर सिर्फ पूजा घर वाले लोहे के टुकड़े को छूकर सोना बना दे और कसाई के दरवाजे पर पड़े लोहे के टुकड़े को नहीं तो वह पारस पत्थर असली नहीं है यानि पारस पत्थर तो दोनों को छूकर सोना कर देता है।

उस भजन की कड़ियां विवेकानंद के कमरे तक आने लगी। और विवेकानंद के हृदय पर ऐसी चोट पड़ने लगी जैसे सागर की लहरें किनारे से टकराएं, पछाड़ खाए। फिर मन में बड़ा पश्चात्ताप हुआ क्योंकि भजन वाली बात बहुत चोट कर गयी, घाव कर गयी। यह विवेकानंद के जीवन में बड़ी क्रांति की घटना थी। श्री रामकृष्ण परमहंस जो नहीं कर सके थे, उस वेश्या ने किया। स्वामी विवेकानंद अपने आप को रोक न सके, आंख से आंसू गिरने लगे--यह तो चोट भारी हो गयी ! अगर तुम पारस पत्थर हो, तो यह भेद कैसा ? पारस पत्थर को वेश्या दिखाई पड़ेगी, सती दिखाई पड़ेगी ? पारस पत्थर को क्या फर्क पड़ता है--कौन सती, कौन वेश्या ! लोहा कहां से आता है, इससे क्या अंतर पड़ता है, पारस पत्थर के तो स्पर्श मात्र से सभी लोहे सोना हो जाते हैं।

विवेकानंद उस घटना का बहुत स्मरण करते थे कि एक वेश्या ने मुझे उपदेश दिया। यह भेद ! सच्चे ज्ञानी के पास अभेद है। पापी जाए तो पुण्यात्मा जाए तो, दोनों को छूता है, दोनों को स्वर्ण कर देता है। उसकी आंखों का जादू ऐसा है, उसके हृदय का जादू ऐसा है।

मगर यह संभव तभी होता है जब भीतर का अनाहत सुना गया हो।

"बेवाहा के मिलन सों, नैन भया खुसहाल।"

यानि आंखें न केवल मस्त हो जाती है, बल्कि मस्ती देने वाली भी हो जाती हैं। और तभी जानना कि आंखें मस्त हुई, जब मस्ती देने वाली भी हो जाएं।

गोवर्धन दास बिन्नाणी "राजा बाबू"

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

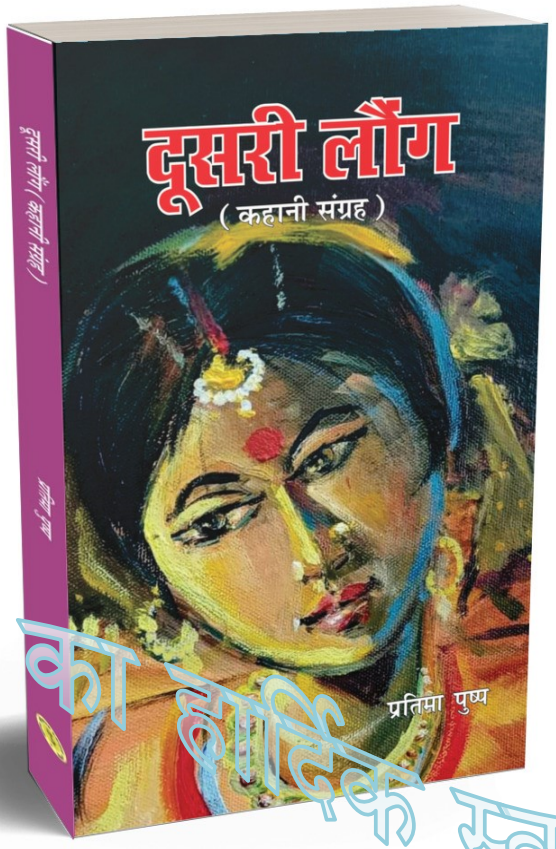

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

हिंदी राष्ट्रभाषा और उसके मार्ग की चुनौतियाँ

पद्मा अग्रवाल

आज से 7 दशक पूर्व 14 सितंबर 1949 को हिंदी भाषा को संविधान की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया ... उसी दिन की स्मृति में पूरे देश में हिंदी दिवस और हिंदी पखवारा मनाया जाता है . जिसमें प्रत्येक वर्ष हिंदी के उत्थान के विषय में बड़ी बड़ी कार्यशाला और भाषण , प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है. परंतु फिर सब ठंडे बस्ते के अंदर रख कर बंद कर दिया जाता है .

राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है

हिंदी ने हमें गूँगेपन से बचाया है... ऐसा महात्मा गाँधी का कहना था .

इस हिंदी भाषा की अस्मिता ने राष्ट्रीय एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है . लोगों के कौशल , उनकी भावनाओं और ज्ञान को प्रगट करने बहुत ही सहायक सिद्ध हुई है . देश के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा ने अमूल्य योगदान किया है .जय हिंद और वंदेमातरम् का नारा आज भी देश भक्ति की भावना जनसमूह में जगाने में कामयाब हो जाता है .

हिंदी भाषा को देश के लगभग तीन चौथाई लोग बोलते और समझते हैं . हिंदी को 12 राज्यों में प्रथम भाषा और 11 राज्यों में द्वितीय भाषा का दर्जा प्राप्त है . हिंदी भाषा की विशालता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि हिंदी 18 बोलियों का सम्मिलित समूह है और हमारी हिंदी भाषा स्थानीय स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक अपनी पहुँच बना रही है .

शिक्षाविद् , संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग करते हैं , इस वजह से आम आदमी हिंदी भाषा से अपने को अलग थलग सा महसूस करता है ... हमारे हिंदीविद्वानों और हिंदी विभागों और साथ में सरकार को भी इस समस्या के निवारण के लिये कदम उठाने की आवश्यकता है .

भूमंडलीकरण ने हिंदी के बाजार को विकसित किया है ... हिंगलिश शब्द हिंदी और इंग्लिश के मिश्रण से उत्पन्न हुआ है जो बाजारवाद की देन है . दुनिया के कई देशों में हिंदी व्यापार की भाषा बन गई है . हिंदी का बाजार लगभग 33 देशों में फैला हुआ है . आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इंग्लिश में यह ताकत अभी भी नहीं है . हिंदी फिल्मों का बाजार दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है , इससे करोड़ों रुपये की आमदनी देश को हो रही है.

वैश्विक स्तर पर वही भाषा टिक पायेगी जिसका शब्दभंडार या शब्द कोष बड़ा हो , उस भाषा में औदार्य भी होना आवश्यक है ताकि वह अपना शब्द भंडार निरंतर बढाता रहे , इस परिपेक्ष्य में हिंदी का सौभाग्य रहा कि भारत में तुर्क, मंगोल , अफगान , मुगल , फ्रांसीसी , पुर्तगीज ,और विशेष कर अंग्रेजों का शासन रहा , उन लोगों ने अपनी भाषा में अपना दरबार चलाया और देश पर शासन किया . इसके परिणामस्वरूप हिंदी भाषा शासकीय भाषा से प्रभावित भी हुई और उसका शब्द भंडार जो संस्कृत भाषा के शब्दों से पहले ही काफी समृद्ध था, वह इन सबके प्रभाव से और भी संपन्न और समृद्ध होती

गई .

हिंदी भाषा की चुनौतियाँ ..... इस समय हिंदी भाषा की सबसे बड़ी चुनौती मीडिया से उत्पन्न हिंगलिश भाषा से मिल रही है . मीडिया अपने लाभ को ध्यान में रख कर हिंगलिश का प्रचार और प्रसार कर रहा है . हिंगलिश के कारण हिंदी के लिये अपनी शुद्धता बनाये रखना मुश्किल होता जा रहा है. वैश्वीकरण के दौर में अंग्रेजी भाषा को ज्यादा बल मिल रहा है . फिल्मों में हिंदी के साथ इंग्लिश के प्रयोग के कारण अशुद्धता बढती जा रही है .

कुछ विषयों की पुस्तकों का हिंदी भाषा में उपलब्ध न होना .....यह एक बड़ी समस्या है ...मशीनी अनुवाद क्लिष्ट होता है और वह पर्याप्त नहीं है कि वह पाठकों की माँग को पूरा कर सके . एक महत्वपूर्ण समस्या है कि शोध और अनुसंधान के लिये हिंदी में शोध अध्ययन सामग्री उपलब्ध नहीं है , यही कारण है कि शोधार्थी को इंगलिश में ही रिसर्च का कार्य करना पड़ता है .

विज्ञापन बाजार हिंदी के लिये दिन ब दिन नई चुनौतियाँ खड़ी कर रहा है , जिसके तहत एक वर्ग विशेष को लुभाने के लिये अंग्रेजी में विज्ञापन , उत्पाद का नाम अँग्रेजी में प्रचारित करता रहता है .

हिंदी भाषा की चुनौतियों से निपटने के लिये , उसे बोलचाल और व्यवहार की भाषा बनाई जाये . अभिव्यक्ति का माध्यम सुदृढ किया जाये . सर्वप्रथम हिंदी भाषा को रोजगार की भाषा बनाई जाये .

हिंदी भाषाके माध्यम से युवक युवतियों को रोजगार परक कौशल प्रशिक्षण दिया जाये .

इसे विज्ञान की भाषा बनाने का प्रयास किया जाये .... क्लिष्ट शब्दों की जगह सरल शब्दों का प्रयोग किये जाने पर बल दिया जाये .

विभिन्न राष्ट्रों के विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध किया जाये , जिससे विदेशी विश्व विद्यालयों में हिंदी विभाग की स्थापना हो सके .

हिंदी भाषा पर निर्भरता कम करके भी हिंदी का विकास किया जा सकता है . जब जापान और चीन आदि राष्ट्र बिना अंग्रेजी के आत्मनिर्भर हो गये तो हम क्यों नहीं हो सकते . हिंदी भाषा के प्रति लोगों के संकुचित और संकीर्ण नजरिये को बदलने की आवश्यकता है .

हिंदी के प्रचार प्रसार के लिये प्रांतीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसे सोशल मीडिया , प्रिंट मीडिया ,टी.वी. सिनेमा, हिंदी में शासकीय और गैर शासकीय कार्यों का संपादन अनिवार्य रूप से हिंदी में किया जाये .

हिंदी भाषा को सरल और समृद्ध बनाने के लिये अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके हिंदी में अनुवाद को बढावा दिया जाये . क्षेत्रीय भाषाओं की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद के साथ साथ विदेशी भाषाओं की रचनाओं का भी हिंदी में अनुवाद को प्राथमिकता दी जाये. अच्छी बात यह है कि इंटरनेट से हिंदी को नई ताकत मिली है . भारतीय युवाओं के स्मार्ट फोन में औसतन 32 एप्लिकेशन होते हैं , जिनमें से 8 या 9 हिंदी के हैं .

इंटरनेट की दुनिया में हिंदी को बढाने में UNICODE ने अहम् भूमिका अदा की है . ये तकनीक ऐसी है कि हर अक्षर को एक विशेष नंबर प्रदान करता है .... इससे इंटरनेट पर हिंदी में काम करना आसान हो जाता है. इस समय इंटरनेट पर हिंदी के 15 से ज्यादा सर्च इंजन मौजूद हैं ... इंटरनेट पर हिंदी के बढते कदम से भविष्य के प्रति आशा की झलक दिखाई पड़ती है .

हिंदी को राजभाषा घोषित हुए 72 वर्ष पूरे होने वाले हैं , यह जनसंपर्क की भाषा तो बन चुकी है परंतु राजनैतिक कारणों से राष्ट्र भाषा नहीं बन पाई है .

आज के आई टी युग में हमें हिंदी के सिलेबस को आई टी आधारित बनाने की जरूरत है . हिंदी सॉफ्टवेयर के विकास पर काम हो ...हिंदी के विकास में लगे सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों को एक मंच पर आकर वर्ष में कम से कम एक बार हिंदी भाषा की मुश्किलों और चुनौतियों पर चर्चा करनी चाहिये और उनके निराकरण के उपाय पर कारगर रूप से चर्चा करके कार्यान्वित करना होगा . बेहतर हिंदी शिक्षकों को सम्मानित करना चाहिये .

यदि भारत वर्ष को एक विकसित अर्थव्यवस्था बनाना है तो उसे हिंदी को कार्यपद्धति, शिक्षा, ज्ञान, कौशल, व्यापार, मीडिया, और बाजार की भाषा बनाना ही होगा . ऐसा किये बिना यह देश न तो संपन्न बन सकता है और न ही समतामूलक, न ही महाशक्ति और न ही विकसित अर्थ व्यवस्था ...हिंदी को राजभाषा से राष्ट्र भाषा बनाने से पहले उसे जनभाषा बनाना होगा .

अंत में हम कह सकते हैं कि 21 सदी में हिंदी की हालात को देखते हुए कुछ जिम्मेदारियाँ हमारी भी बनती है. क्योंकि हिंदी भाषा के विकास के लिये दूसरों की प्रतीक्षा करने के बजाय , आप जो भी कर सकते हैं, अकेले करें या समूह के आकार में करें . इन जिम्मेदारियों को पूरा करना हमारा पहला कर्तव्य होना चाहिये . इसी अँधेरे में सूरज निकलेगा और हिंदी को वास्तविक जगह मिलेगी.

(1)

रास्ता

बहुत दूर तक
देखने की
मेरी आदत नहीं है,
मैं तो बस
पास पड़े
पत्थरों को हटाता हूँ
और साफ़ करता हूँ
अपने सामने के
झाड़-झंखाड़-काँटें
मंजिल तक
पहुँचने के लिए रास्ता
खुद ही बन जाता है!

(2)

प्रतिभाएँ

बहुत सी कविताएँ
जिनका कोई
अर्थ नहीं होता है,
छपी रहती हैं
प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं के
प्रथम पृष्ठ पर बड़ी शान से
इतराती हुईं
फडफडाती हुईं;
पर रह जाती हैं
कुछ सार्थक कविताएँ
रद्दी की टोकरी में पड़ी-पड़ी
पंख कटे पंक्षियों की तरह,
प्रतिभाएँ
हमेशा उपेक्षित रही हैं
चापलूसों के आगे!

डॉ. राजीव गुप्ता

बाल कविता : नटखट कन्हैया

ठुमक-ठुमक आए कन्हैया,
देखो नटखट है नंदलाल,
छम-छम छम घुंघरू बाजे,
पैरों में सुंदर साजे,
गोकुल की गलियों में घूमे,
घुंघरालू है उसके बाल।।

रोम-रोम जब हर्षित होवे,
गूंजे आंगन किलकारी,
मनमोहक ये दृश्य सलोना,
छुप कर देखे गोपियां सारी,
नजर उतारे मातु यशोदा,
अचरज हो कर करे सवाल।।

मधुर-मधुर मुरली की धुन,
सुन गैय्या रंभाये,
बाल रुप की छवि निराली,
आंखों में छप जाये,
मदमस्त मगन हो मेरे कान्हा,
बैठे कदंब की डाल।।

करे उपाय लाख कंस,
भय सर में मंडराये,
बकासुर कृष्णा के आगे,
अपना प्राण गंवाये,
जन -जन हृदय वास मुरारी,
रखे सभी का ख्याल।।

प्रिया देवांगन "प्रियू"

किस्सा एक मुलाकात का (संस्मरण)

आशा शैली

पहली बार जब साहित्य मंच के कार्यक्रम में भाग लेने जालन्धर गई, तब मेरा परिचय मंच के अध्यक्ष जगदीश चन्द्र से हुआ। उनका निवास माडल टाउन में था।

मेरे रुकने की व्यवस्था स्काई लार्क होटल में की गई थी। मैं संस्था के सचिव प्रोफेसर मेहर गेरा के निमन्त्रण पर वहाँ गई थी। प्रोफेसर मेहर गेरा से यह मेरी दूसरी मुलाकात थी।

शायद यह 1984 के जुलाई या अगस्त की बात है। प्रोफेसर मेहर गेरा मुझे दूरदर्शन ले गए। मैंने इससे पहले दूरदर्शन सेंटर नहीं देखा था।

साधारण से कार्यालय में एक सौम्य व्यक्तित्व के दर्शन हुए। प्रो गेरा ने बताया, ये वैद्य जी हैं। आप तब तक यहाँ इनसे बात करें, मैं फूल वाले के पास होकर अभी आया।

मैं हिमाचल के दूर दराज के क्षेत्र रामपुर बुशहर के भी छोटे से गाँव की रहने वाली। लम्बे सफर से थकी झेंपू सी औरत भला क्या बात करती। पर वैद जी इतने साधारण लग रहे थे कि उनका ज़रा- सा भी रौब मुझ पर नहीं पड़ा। थोड़ी सी देर में प्रोफेसर मेहर गेरा लौट आए, हमने चाय पी और थोड़ी इधर-उधर की बातें करते रहे। फिर उन्होंने मुझे होटल छोड़ दिया। दो-तीन घण्टे मैंने आराम किया और लम्बे सफर की थकान उतारी। शाम को वे दोनों मेरे कमरे में आए और मुझे वहाँ की व्यवस्था समझाने के बाद मेरी ग़ज़लें देखीं।

उनके मंच पर मुझे पहली बार पढ़ना था। मैं मंच की मंजी हुई कलाकार भी नहीं थी। इससे पहले शिमला के गेयटी थियेटर में कुल मिलाकर एक इंडो-पाक मुशायरा पढ़ा था, पर हाँ आत्म विश्वास खूब दृढ़ था। दिल में डर कहीं नहीं था या इस नाम की चिड़िया से परिचय नहीं था।

इस मुशायरे में दिल्ली से जमीला बनो भी आई थीं। जमीला बानो से पहली मुलाक़ात गेयटी थियेटर में हो चुकी थी। एक पत्रकार भी थे, 'अश्विनी' जो मेरे आगे-पीछे मंडराने लगे, जिसे शायद वैद जी ने भांप लिया था। नये लोग और नई जगह होने से मैं घबरा गई थी। तब वैद जी ने बड़े ही नर्म लहजे में उसे मेरे कमरे की तरफ न जाने का परामर्श दिया था। इस समय उनकी आँखें देखने लायक थीं। एक पंजाबी के सरदार शायर थे उनको सभी मीशा कह के पुकार रहे थे। बहुत हँसमुख और मिलनसार थे। आज़ाद गुलाटी और राजेंद्र नाथ रहबर भी थे। बशीर बद्र, प्रेम कुमार नज़र, एहतेशाम सिद्दीकी और पंजाब के कई दूसरे नामी शायर थे। आकाश वाणी और दूरदर्शन के लोग भी थे। पर हिमाचल से मेरे सिवाय कोई नहीं था।

इस मुशायरे के बाद मुझे वैद्य जी निदेशक के पास ले गए और मेरे लिए दूरदर्शन के पहले ही कार्यक्रम में एक मुलाकात कार्यक्रम हुआ। धीरे-धीरे निकटता बढ़ने पर मुझे पता चला कि यह जो एकदम सीधा सा आदमी है, बहुत टेढ़ी कलम रखता है। बाद में इनके साहित्य मंच के लिए मुझे हिमाचल का प्रतिनिधित्व मिला और मिली जगदीश की चन्द्र टुण्डा लाट और अन्य पुस्तकें।

फिर एक दिन वे हमारे बीच से अचानक ही उठकर चले गए। इसके साथ ही साहित्य मंच भी बिखर गया। प्रोफेसर गेरा खुद को बहुत अकेला महसूस करने लगे थे। वैद्य जी के साथ हमने, मोगा, जालन्धर, जगराओं, कपूथला, मलेरकोटला आदि में बड़े-बड़े मुशायरे किये। जिनमें शहरयार, और निदा फाज़ली जैसे शायर हिस्सा लेते थे। इन्हीं मुशायरों के दौरान मेरी मुलाकात ज्ञान सिंह संधू, सुरेश सेठ, कीर्ति काले और दूसरे बहुत से कलमकारों से होती रहती थी

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

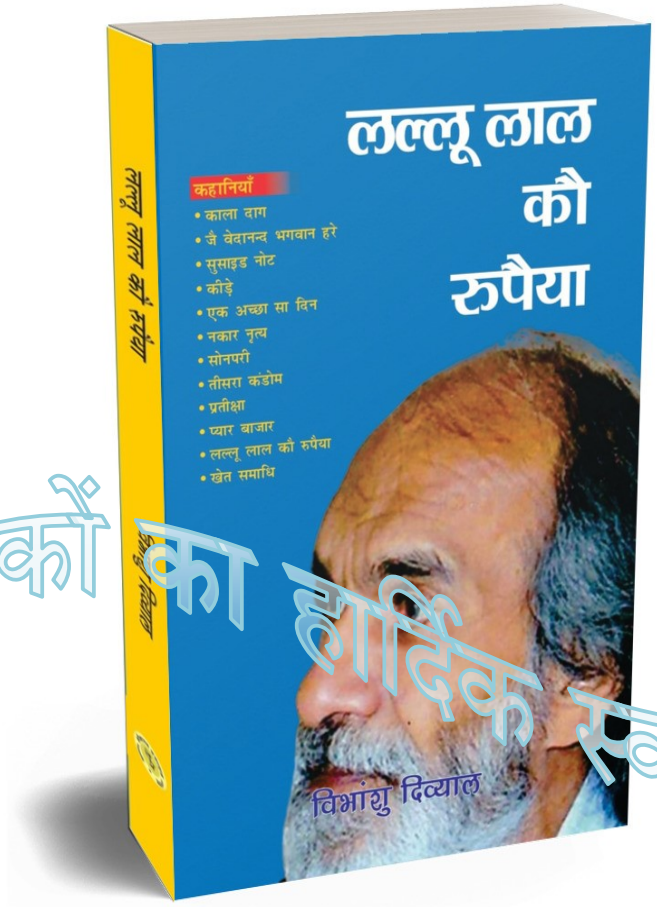

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

कहानी

अंधा-धुंध, धुंध ही धुंध!!!

राजीव प्रकाश साहिर

स्याह रंगत मुबहम फिज़ाएं रूआंसी सी ज़हर आलूदा धुंध की दबीज़ परतों के बोझ तले घुट रही थीं।काले आसमान में एक बेज़ार सा चांद फर्ज़ अदाएगी की रस्म निभा रहा था।चांद का भी एक अलग आसमान था और वो काला था । चांद पर दिन भी काले थे और रातें भी काली थीं। चांद की बंज़र ज़मीन पर छोटी बड़ी बेशुमार ख़ंदके थीं और धूल के दूर दूर तक फैले हुए हैबतनाक रेगज़ार थे ।चांद पर न तो पानी था और न ही हवा थी।चांद के खुरदुरे चेहरे पर खुदे हुए पुरअसरार निशानात उसे अपनी सहर अंगेज़ गिरिफ्त मे लिए रहते थे। सदियां बीत गई थीं,चांद पर एक उर्म की तमाम सरहदें पार कर चुकी बुढ़िया चरखा कात रही थी।बुढ़िया के बाल बर्फ की तरह सफेद और उस का स्याह चेहरा झुर्रियों से पुर था।

कायनात में लामकां(अनन्त),वक्त और ख़ला के दरमियान ज़र्रा बरारबर ,कमज़ोर हिचकोले खाती दुनिया की कश्ती धुंदले नीले नुक्ते की मानिंद रौशनी की एक किरण पर टिकी नज़र आ रही थी।यरकान ज़दा (पीली स्वरणिम) रौशनियों के स्माग में हांफते कांपते नकाहत ज़दा(कमज़ोर से)अक्स,शाह राह पर यहाँ वहाँ लरज़ रहे थे।शाह राह बर्क रफ्तार थी और बाइक सवार भी बर्क रफ्तार था।

स्याह धुंधतारीक उंचाइयों का तवाफ(परिक्रमा)करती हुई आहिस्ता आहिस्ता शहर की गलियों,कूचों, बाज़ार,ज़िंदगियों और सांसो में उतरती जा रही थी।बाइक सवार की आँखों में माहौल की रुसवाइयों की न जाने कितनी चिताएं जल रही थीं और उन की राख उस के दिल और जिगर में दफ्न होती जा रही थी।शहर का शहर एक क़िस्म का गैस चेम्बर था।अजायब घर की बाउंडरी वाल से लगा हुआ एक गंदा नाला गलीज़ और कसीफ(गाढ़े)गटर के पानी से लबरेज़ इंच इंच रेंग रहा था।

नाले में कूड़ा करकट और तरह तरह के सालिड वेस्ट भरे पड़े थे ।नाले में से सड़ांध के भभके उठ उठ कर धुंधमें तहलील हुए जा रहे थे।नाला कुछ दूर अजायब घर की बाउंडरी वाल के साथ चलते चलते फिर बायें जानिब घूमता हुआ नदी को नापाक करने के लिए उस में जा पड़ा। कुछ और दूर आगे चल कर अजायब घर की बांउडरी वाल के नज़दीक ही एक हाउसिंग प्रोजेक्ट का तामीरी काम चल रहा

था।कन्स्ट्रकशन साइट पर हाई बीम लाइट्स धुंधमें डूबी रात में भी रौशन थीं और मशीनों का भारी शोर रात की खामोशी को मजरूह कर रहा था।अजायब घर के जहन्नुम में अपने अपने दम घोटू तंग पिंजड़ो में उम्र क़ैद की सज़ा भुगत रहे मजबूर बेज़बान मासूम जंगली जानवरों और परिंदो पर मशीनों की भारी भरकम धमक और शोर,नाले की सड़ांध से उठती बूए बद और आलूदा धुंधजान लेवा साबित हो रही थी।

बर्क़ रफ्तार बाइक सवार के हेलमेट पहने होने के बावजूद उस की आँखें बेइन्तहा कड़वा रही थीं।सांस लेने में तकलीफ हो रही थी लेकिन सफर जारी था।सुब्ह से धुंधछाई हुई थी और फिर रात गये ये और घनी हो गई लोकिन शहर अधाधुंध दौड़ता भागता ही रहा।चेहरों पर मास्क थे।घोल कर हवाओं में ज़हर हर शख्स मुंह छुपाए घूम रहा था।ख़राब हवा ने उड़ा दी थीं शहर की हवाईयां।

अजायब घर के क़रीब सारी रात भारी मशीनें शोर गुल करती रही ।मशीनों के चलने से हो रही कम्पन और शोर ने अजायब घर में क़ैद जानवरो के रहन सहन और रवयौं को दरहम बरहम कर के रख दिया था।जंगल के उलट अजायब घर की क़ैद में वो दिन की जगह रात में सोने के आदी हो गये थे।मशीनों की मुसलसल धमा धम की बदौलत अब वो न रात में और न ही दिन में चैन से सो पा रहे थे।वो बेहद ख़ौफज़दा ,बैचेन ,चिड़चिड़े और जारेहाना(हमलावर)हो गये थे।शोर बूए बद और धुंआ धुंआ धुंध,उन सब ने मिलकर जानवरो की भूख प्यास ,नींद सब उड़ी दी थी।

कोहरे में गुम क़ब्रिस्तान में रात के वक्त शरपसंद दाखिल हुए और क़ब्र खोदने लगे ।ख़ातून का क़त्ल चालीस दिन पहले हुआ था।मरहूमा की तदफीन मुकामी कब्रिस्तान में कर दी गई थी।तदफीन के ठीक चालीस दिन के बाद उस स्याह रात शरपसंदो ने पहले तो क़ब्र की खोदाई की और फिर लाश को बाहर निकाल कर उसे कुछ दूर घसीटा और फिर लाश का सर काट कर ले गये।ग़म ,गुस्से,हसद और इंतकाम के शोले आलम को झुलसा रहे थे और धुंधमें वहशत घुल रही थी।धुंधकी वहशत में न तो क़त्ल का कोई सूराग मिला और न ही सर कटी लाश का सर मिला।

चांद के दो चेहरे होते हैं,एक तो वो है जिस में पिछले करोड़ों साल से एक बुढ़िया बैठी चरखा कात रही है और चांद का दुसरा चेहरा तो ज़मीनी दुनिया ने कभी देखा ही नही।दरअस्ल अकीदतमंद चांद ने ज़मीन का तवाफ करते वक्त उस को कभी अपनी पीठ दिखाई ही नही।शहरी दरख्तों पर धूल ही धूल थी।दिन रात जनरेटर चलने से शोर और धूंआ हालात को बद से बदतर बना रहे थे।भालू घबरा कर अपने पिंजड़े में इधर उधर भाग रहा था।उस ने लोहे के सीखचों से सर टकरा टकरा कर अपने आप को लहूलुहान कर लिया था।वो दीवानावार नाच रहा था और उस के सर पर मौत नाच रही थी।गज़ाल की आँखों से पानी बह रहा था और उस के मुँह से झाग निकल रहा था।कबूतर बीमार थे और वो सब दम तोड़ने वाले थे।मादा गेंडे ने शोर और आलूदगी से परेशान हो कर अपना बच्चा गिरा दिया था और अपना इकलौता सींग तोड़ डाला था।बाघ अपने पिंजड़े में मुर्दा पड़ा था।उस के फेफड़े काले पड़ चुके थे।जंगल का राजा शेर क़ैद में मुज़तरिब (बेचैन) था। बाइक सवार को अपने फेफड़ो में चुभन महसूस हो रही थी। गला सूख रहा था,सांस लेने में दिक्क़त हो रही थी और चेहरा जल रहा था।कंस्ट्रकशन साइट के मेन गेट से कुछ आगे ,शाहराह के अपनी साइड वाले किनारे पर उस ने अपनी बाइक रोक दी।वो अपनी बाइक से उतरा और उतर कर अपने बैग से पानी की बोतल निकाली ,मुँह धोया तो हथेली पर कालिख उतर आई।अभी वो अपनी कालिख का मुआएना कर ही रहा था कि पीछे से आ रहे एक माल लदे दस टायरा ट्रक ने उसे रौंद डाला।पलक झपकते ही बाइक सवार और उस की बाइक ,दोनो ही खून से सने कबाड़ में तब्दील हो गये ।निगाहे धुंधके ज़ेरे असर बरहम थीं।

चांद पर सदियों से चरखा कात रही बुढ़िया ने चरखे से निगाहें हटा कर ज़मीनी दुनिया को देखा।दुनिया जल रही थी,धुंधही धुंद,धूआं ही धूंआ। बुढ़िया की आँखों में मायूसी छा गई। बुढ़िया ने नज़रें उठा कर चांद का तवाफ कर रही सर कटी लाश वाली ख़ातून की रूह को देखा और कहा....

ऐ ख़ुदा की नेक बंदी सब्र कर,कयामत करीब है...

बुढ़िया की सदा ख़लाओं में बाज़गश्त करती रही।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

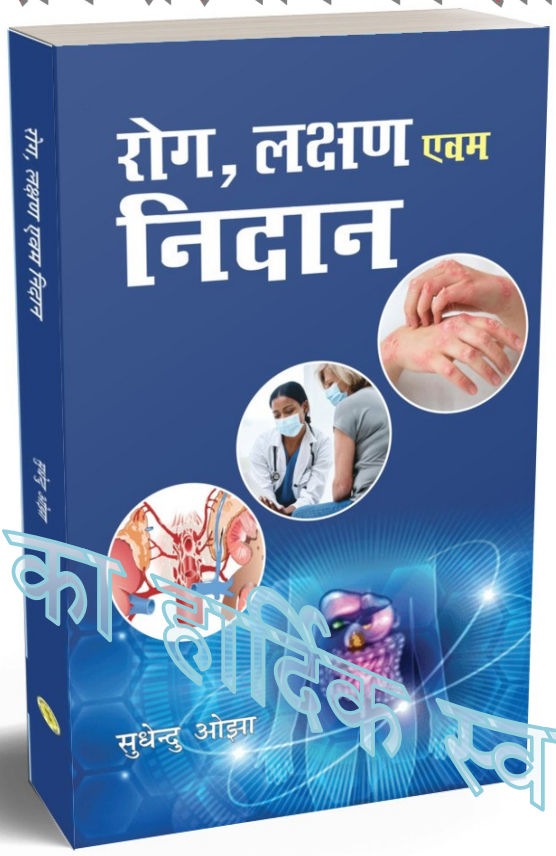

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

श्यामल बिहारी महतो

प्यार का पहाड़

हीरालाल ने आशा को गोद में क्या उठाया,लगा उसने पारसनाथ पहाड़ को ही उठा लिया है और वह दारा सिंह महसूस करने लगा था...!

वही आशा आज दुबारा मां बनने जा रही थी। परन्तु उसके अंदर का डर उसे बार बार डरा रहा था और अंदर से वह कांप कांप जाती थी.!

पहली प्रसुति के दौरान सास की कही कड़वी बातें आज तक वह भुला नहीं पाई थी। जीवन का जैसे कोई बहुत बड़ा हादसा हो गया हो !

आशा का लाला परिवार की बहू बनना भी किसी अग्निकुंड में कूदने से कम नहीं था। फिर भी वह कूद पड़ी थी, हीरालाल की हिम्मत देख कर !

छोटानागपुर का पारसनाथ पहाड़ देश विदेश के सैलानियों के लिए सदैव आकर्षण का केंद्र रहा है और युवा सैलानियों के लिए तो पारसनाथ पहाड़ चढ़ना और नयी नयी घुडसवारी करना किसी रोमांच से कम नहीं था और पहाड़ पर चढ़ते किसी लड़की को बाहों में उठाने का सुअवसर मिल जाए तो उसके दिल का बाजा बजने से कोई रोक नहीं सकता । उसका बाजबहादुर होना ही था ! आशा की नजरों में हीरा लाल भी किसी बाजबहादुर से कम नहीं था। और पारसनाथ

पहाड़ उसका साक्षी बना था।

पारसनाथ पहाड़ की तलहटी पर ही बसा हुआ था वह छोटा सा गांव " चंदनपुर " यहां के अधिकांश पढ़े लिखे युवाओं की जवानी सऊदी अरब जैसे खाड़ी देशों में शेख-शेखाईनों की सेवा और रूपए बनाने में बीत जाते थे और यहां घर में औरतें आनलाईन बच्चे होने की खुश खबरी अपने मर्दों को सुनाने में जरा भी संकोच नहीं करती थीं। नौकरी के लिए मर्दों को घर की औरतों से दूर जाने और घर की औरतों का दूसरे मर्दों के करीब आने में जरा भी देर नहीं लगती थी। पैसे बनाने और बच्चे पैदा करने की भी एक उम्र होती है। ऐसा अक्सर लोगों के मुख से सुना जाता था। समझदार युवक और युवतियां इसका अर्थ भी समझते थे और अवसर का लाभ भी उठाना जानते थे।

उसी चंदनपुर के हीरालाल ने अपने गांव के माथे पर इतिहास लिख डाला। प्रेम का इतिहास ! जीवन का कखारा ! प्यार का पहाड़ा !

उसी गांव में एक लाला परिवार रहता था। नाम था मदनलाल। कपड़े की दुकान थी उसकी, ईसरी बाजार में, कमाई में कमी न थी। लेकिन लाला था,सो लालच भी कम न थी। उनके दो बेटे थे, बडा हीरालाल और छोटे का नाम मोतीलाल था।

हीरालाल पारसनाथ कॉलेज में बी. कॉम फाइनल ईयर की पढ़ाई कर रहा था। अपने दोस्तों के साथ उन्होंने मकर संक्रांति मेले के अवसर पर पारसनाथ पहाड़ चढ़ने का कार्यक्रम बनाया था।

पारसनाथ पहाड़ चढ़ने के आम तौर पर दो रास्ते है। एक सीढ़ीदार और दूसरा घूमावदार। सीढ़िदार सीधे पहाड़ की चोटी पर पहुंचा देता है और घूमावदार में लोग घूमते हुए चोटी तक पहुंचते हैं। इस रास्ते को ज़्यादातर बूढ़े, अधेड़ और औरतें अपने बच्चों के साथ इस्तेमाल करती हैं। परन्तु दमखम वाले युवक युवतियां सीधे सीढ़ियों पर छलांग लगाते, दौड़ते और सिढीयां गिनते हुए चोटी पर पहुंचते हैं।

हीरालाल भी उसी दमखम के साथ अपने दोस्तों के संग सीढियां गिनते हुए पहाड़ पर चढ़ रहा था। अभी वे लोग आधी दूरी ही तय किए थे कि अचानक सामने की सीढ़ी पर एक सुंदर सी मृगनयनी युवती को टेहूना पकड़े हुए देखा। सहेलियां उसकी उसे घेरे खड़ी थीं। रूकते हुए हीरालाल ने दोस्तों की ओर देखा। मामला सीधे सीधे पांव और सिढीयों से जुड़ा हुआ था। इससे पहले कि कोई कुछ बोले, हीरो की माफिक हीरालाल आगे बढ़ा और लड़की को प्यार से अपनी बाहों में उठाया और दनदनाते हुए सीढियां चढ़ने लगा। पीछे से दोस्तों ने सीटी बजाईं और नारे लगाए " हिप हिप हुर्रे रे ! हिप हिप हुर्रे रे ! हीरो हीरालाल हुर्रे रे ..!"

बाकी लड़कियां बंदरियों की तरह उनके पीछे लपकी थीं।

हीरालाल की बाहों में होना खुद आशा के लिए एक दिवा स्वप्न की तरह था। कुछ देर तक अपलक वह हीरालाल को देखती रही फिर जब उसे पूरा यकीन हो गया कि वह किसी की बाहों में है, तो उसने आगा पीछा न कुछ देखा, न कुछ सोचा और अपनी बाहें उसने हीरालाल की गर्दन पर डाल दी। जवाब में हीरालाल ने मुस्कुरा दिया था।

" बाहों में उठा लिया, जीवन भर का भार उठा सकोगे..?" पहाड़ की चोटी पर पहुंचते ही आशा ने एक झटकेदार प्रस्ताव रख दिया।

हीरालाल एक पल के लिए हील न सका। उसका मुंह खुल न सका। पेड़ की भांति खड़ा होकर सोचता रहा। कोई भी निर्णय लेना उसके लिए आसान नहीं था। बाप की लालची स्वभाव को वह बचपन से देखता आ रहा था। उसकी आंखों के सामने वो डायरी घुम गई, जिस पर उनका बाप उन दोनों भाईयों की पढ़ाई के पीछे खर्च की पाई पाई लिख कर रख रहा था।

" तुम्हारे प्रस्ताव में, प्यार है, समर्पण है ! अगर इसे ठुकरा दूं तो एक पढ़ें लिखे युवक की यह सबसे बड़ी हार होगी और मान लूं तो घर में भारत-पाक युद्ध चलता रहेगा। धन के लोभी प्यार मोहब्बत नहीं समझते हैं। लेकिन तुम्हारे प्यार को ठुकरा कर जी भी नहीं सकूंगा.. आशा ! अब तो साथ जिएंगे और साथ ही मरेंगे..!" हीरालाल ने आशा को फिर से आगोश में भर लिया था। और आशा तो जैसे आसमान पर उड़ने लगी थी।

पहाड़ पर दिन कैसे बीत गया, प्यार में डूबे न हीरालाल को पता चला न आशा को। पहाड़ से उतरते वक्त भी दोनों एक दूसरे की बाहें थामे हुए थे..

" कल मिलते है, कॉलेज में..!" हीरालाल ने कहा।

आशा भी पारसनाथ कॉलेज में ही बी ए पार्ट टू की छात्रा थी।

" इंतजार करूंगी..!"आशा ने धीरे से कहा।

" हमें भूल न जाना जीजा जी..!" लड़कियों ने सरगम गाए।

पहाड़ का प्यार और सच्चा यार सबको नसीब नहीं होता। ऐसा उनके दोस्तों का कहना था।

घर पहुंचने पर रात को छोटी बहन ने आकर हीरालाल को चुपके से बताया " मम्मी पापा ने मानपुर के सेठ धनीलाल की बेटी से आपकी शादी का सौदा पांच लाख में पक्की कर आये हैं। आपके

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : **978-81-964179-7-0**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 154
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

लिए एक बाइक भी मनवा लिए है। लड़की मिडिल पास है और एक आंख से भैंगी भी !" इसी के साथ उसकी लाड़ली बहन लक्ष्मी गायब हो गई थी। हीरालाल को रात भर नींद नहीं आई। बार बार आंखों में आशा का चेहरा घूम जाता। उसकी कही बातें उसे सोने नहीं देती " बाहों में उठा लिया, जीवन का भार उठा सकोगे..!"

" मम्मी पापा आपकी शादी का सौदा पांच लाख में पक्की कर आए हैं..!" पूरी रात हीरालाल जागता रहा। सुबह उठा तो बाप से सामना हो गया " बेटे को बैल समझ लिया, पांच लाख में सौदा कर दिया, बेटे से एक बार पूछा तक नहीं..!" रात भर का ग़ुस्सा बाप की देह पर उगल दिया और अपने कमरे में जा समाया। बाप मदनलाल भौंचक खड़ा उसे देखता रह गया। जो बेटा आज तक उसके सामने कभी सर नहीं उठाया था आज मुंह में हग कर चला गया।

हीरालाल कॉलेज नहीं गया और मोबाइल स्विच ऑफ कर कमरे में पड़ा रहा। उधर कॉलेज में उसकी राह ताकते ताकते आशा की आंखें पथरा गई। हीरालाल को नहीं आना था, नहीं आया। कहीं से उसकी कोई खबर भी नहीं। मोबाइल भी स्विच ऑफ ! टेंशन से सर उसका फटा जा रहा था। वह कैंटीन चली गई। वहीं उसे हीरालाल का एक दोस्त मिला। उसी ने बताया कि हीरालाल की शादी पक्की हो गई है। आशा के आंसू निकल आए। वह फफक कर रो पड़ी।

एक माह बाद हीरालाल का बी.कॉम, का फाइनल एग्जाम शुरू होना था। उसने मां से कहा " मेरे एग्जाम तक, कोई मुझसे शादी बिहा की बात न करें ..!" मां बेटे का मुंह ताकती रह गई।

वहीं बेटे का बदला बदला स्वर से बाप भी सकते में आ गया था। " लड़की भैंगी है" कहीं किसी ने उसे यह बता दी तो गजब ही हो जायेगा। उसकी बातों से तो ऐसा ही कुछ लग रहा है। अगर उसने भैंगी लड़की बोल शादी से इंकार कर दिया तो उसका झूठा और दगाबाज बनने में जरा भी देर नहीं लगेगी। फिर बिरादरी में वह सर उठा कर कभी चल पायेगा..? मदनलाल का लालची मन एक दम से हिल उठा था।

उधर एक मुलाकात और चंद बातों ने ही आशा को बदल कर रख दिया था। कॉलेज जाना तो उसने बंद नहीं किया। लेकिन पढ़ाई में उसका जरा भी मन नहीं लगता। हमेशा खोई खोई और उदास रहने लगी थी। सहेलियां उसे बहुत समझाती, परन्तु जवाब देने की बजाय उन्हें सिर्फ टुकुर टुकुर देखती रहती थी।

हीरालाल की परीक्षा पखवारा भर चली। सोलहवें दिन सुबह उसने आशा को फोन लगा दिया। तब वह बॉथरूम से फ्रेश होकर बाहर दातून कर रही थी " आशा, मैं तुम्हारा हीरू बोल रहा हूं...!"

" इतना बड़ा नाम ! मैं हीरू बोलूंगी..!" हीरालाल पहाड़ से ही हीरू बनकर उतरा था।

आशा कुछ बोले उसके पहले हीरालाल पुनः बोल उठा " सुनो, आज हम कॉलेज में मिल रहे हैं। "और फोन डिस्कनेक्ट हो गया था। आशा जो अभी तक उदास और मुरझाई-मुरझाई सी रहती थी, फोन क्या आया, पौधे को पानी मिल गया और जीवन को संगीत ! वह ग़ुलाब सी खिल उठी थी।

उस दिन पहले हीरालाल कॉलेज पहुंचा था। फिर आशा आई थी " मैं पांच लाख को लात मार कर आया हूं, तुम्हारे सवाल का जवाब देने " मैं तुम्हारे जीवन भर का भार उठाने को तैयार हूं, क्या तुम मेरा साथ देने को तैयार हो ..?" आते ही हीरालाल ने पूछा था।

" जहां चाहो, ले चलो हीरू, मैं तैयार हूं ..!" आशा का जवाब था।

अगले ही पल धड़कते दिल से दोनों एक बस में जा बैठे थे। बस गिरिडीह की ओर दौड़ रही थी।

घर में धनीलाल की बेटी के साथ शादी के लिए हीरालाल पर दबाव बढ़ने लगा था। पर उसका एक ही जवाब होता -" एग्जाम का रिजल्ट आने दो, फिर सोचेंगे ..!"

मां बाप फटे बांस की तरह बेटे का मुंह देखने लगते।

कहीं से उन्हें भनक लग चुकी थी कि बेटा उनकी पसंद को नापसन्द करता है। तब से दोनों का माथा ठनका हुआ था।

उस दिन बी.कॉम प्रथम श्रेणी के रिजल्ट के साथ हीरालाल ने जब घर में क़दम रखा तब रिजल्ट उसकी बैग में था और आशा उसके साथ खड़ी थी। दोनों का साथ आने से घर का तापमान अचानक से बढ़ गया था और घर वाले उन्हें घूरने लगे थे। मां के मुंह का स्वाद बिगड़ गया था तो बाप का मूड़ हाथी की सूंड की तरह होने लगा था। भाई अलग ही तरीके से उन दोनों को घूर रहा था। कोर्ट मैरिज कर हीरालाल ने जैसे घर के हर किसी को हानी पहुंचाने का काम किया था। किसी के अरमानों को धक्का लगा था तो किसी के ख़ज़ाने को। वह घर वालों के लिए गुनाहगार बन कर आया था। सो उन्हें घूरना, गुर्राना और उन पर गुस्सा करना सबका हक बनता था। हां, बहन लक्ष्मी ही थी एक जो शांत और चुपचाप एक कोने में खड़ी थी।

हीरालाल अपनी सफाई में कुछ बोलता। उसके पहले मां की कर्कश आवाज सुनाई पड़ी -" रूको, तुम्हारे साथ यह लड़की कौन है ? "

" मां, यह आशा है,गेंदोडीह के धनपतलाल की बेटी है। हम दोनों ने

कोर्ट मैरिज कर ली है ! "

" इस तरह की शादी को हम शादी नहीं मानते..!"

" मै मानने की बात कहां कह रहा हूं - बता रहा हूं कि हमने शादी कर ली है "

" यह इस घर में इस तरह नहीं रह सकती है..!"

" न बैंड ने बाजा,न ढोल न नगाड़ा ,यह कोई शादी हुई ..!" भाई ने मुंह खोला।

" हम इस शादी को शादी नहीं मानते..!" बाप पीछे कैसे रहता।

" निकालो इसे इस घर से, जाने किस कंगाल की बेटी को उठा लाया है..!" मां की चेतावनी।

" इनका बाप झारखंड ग्रामीण बैंक गिरिडीह शाखा के बैंक मैनेजर है..!"

" पांच लाख देगा क्या ? तभी यह इस घर में रह सकती है, अन्यथा नहीं..! मां ने सुरसा वाली मुंह फाड़ा।

" तिलक दहेज के नाम से एक पैसा नहीं मिलेगा..!"

" फिर तो निकालो इसे इस घर से,इसे उसके बाप घर छोड़ आओ..!" मां का फरमान।

" अब तो आशा इसी घर में रहेगी, मैंने इसे शादी कर लाया है,भगा कर नहीं ..!" हीरालाल तनिक भी नहीं हिला।

" मेरी सारी पूंजी बेकार चली गई। " बाप ने कपार पर हाथ रख लिया।

" खेल खत्म..!" भाई कुढ़ उठा।

" उस भैंगी से तो पांच लाख गुना अच्छी है यह ..!" लक्ष्मी ने पहली बार मुंह खोला।

" तुम चुप रहो, अच्छा, समझा , तुम्हीं ने हीरा के कान भरे थे। "

" मैं तो चुप ही रहूंगी, लेकिन दादा ने कमाल ही कर दिया ! वाह दादा ! आई लव यू ! "

" तुम भागती है कि नहीं..!" मां गायत्री देवी गुस्से से लक्ष्मी की तरफ बढ़ी -" देखती हूं यह कैसे इस घर में रहती है..?" उसने कहा और पैर पटकते हुए अपने कमरे में जा घुसी। पीछे से पति मदनलाल भी उसी में समा गया। यह देख भाई मोतीलाल सीटी बजाता बाहर गली में निकल गया।

रात को सोने के पूर्व लाला घर में एक बार फिर जोरदार हंगामा हुआ। बेटे की शादी में मिलने वाला पांच लाख का रकम पर मिट्टी पड़ गया। बिरादरी में नाक कटी सो अलग। लाला दम्पत्ति ने इसे एक सदमे के रूप में लिया। लायक बेटे को नालायक का खिताब मिला।

विरोध में दो दिनों तक घर का चूल्हा ठंडा पड़ा रहा। किसी ने सतू खाकर गुजारा किया तो कोई पानी पी पी कर भूख मिटाई।

फिर भी हीरालाल टस से मस नहीं हुआ। वह अपने फैसले पर अविचल अडिग रहा।

तनाव में जब नरमी आई तो वह काम की तलाश में घर से निकल पड़ा। उसका लक्ष्य बैंकिंग सेवा थी। घर में आशा अकेली किसी अज्ञात अनहोनी को लेकर हिरनी की तरह डरी और सहमी सहमी सी रहने लगी ,जब तक हीरालाल या लक्ष्मी दोनों में कोई घर नहीं लौट आते। वह खुद को कमरे में बंद कर लेती और बीच बीच में दरवाजे के नीचे का भाग को नाक सटा कर सूंघ लिया करती थी। रसोई में घुसने से उसे पहले ही मना कर दिया गया था " तुम हमारे रसोईघर में मेरे जीते जी कदम नहीं रख सकती है। " सास ने फ़रमान जारी कर दी। लक्ष्मी ही उसके लिए खाना लेकर आती। तब आशा बड़े प्यार से थाली से उठा कर पहला कोर लक्ष्मी के मुंह में डाल देती फिर खुद खाती। लक्ष्मी भी कुछ ऐसा ही करती फिर ननद भौजाई दोनों साथ साथ खाते। इससे भी गायत्री देवी को घोर आपत्ति थी लेकिन बेटी के आगे उसकी एक नहीं चल पा रही थी।

समय पंख लगा कर उड़ता रहा। हीरालाल भी विज्ञापनों के पीछे भागता रहा। भागता रहा। यह कोई घुड़ दौड़ नहीं थी। यह जीवन की एक ऐसी मैराथन दौड़ थी। जिसे हर किसी को दौड़ना पड़ता है। जो नहीं दौड़ता है वह पीछे रह जाता है।

यह सुखद संयोग ही था कि आशा का बच्चे की मां बनने से पहले हीरालाल को झारखंड ग्रामीण बैंक बिसुनूगढ से बुलाया आ गया। बैंक रोकड़िया के तौर पर वह चयनित हुआ था। घर में ख़ुशी का माहौल था। आशा से कहीं अधिक बहन लक्ष्मी ख़ुश थी। अभी तक घर में हर तकरार में वह भाई भौजाई के पक्ष में खड़ी थी " तुम सब कुछ भी कर लो, भैया ने कुछ भी ग़लत नहीं किया है ..!" वह मां से अक्सर भीड़ जाती थी। मां की जुबान की वही स्पीड ब्रेकर भी थी।

बाप कभी कभार ही अब मुंह फाड़ता था।

हीरालाल के कोर्ट मैरिज शादी का बहु भात बाकाया चल रहा था -" नौकरी लगने दो, पार्टी दूंगा ..!" वह दोस्तों से कहा करता।

" बाद में कहोगे, बच्चे होने दो,तब पार्टी दूंगा..!" दोस्त भी कहने में

पीछे नहीं रहते थे।

नौकरी की खबर पाते ही दोस्तों ने हीरालाल को पके आम के पेड़ की तरह हिलाने लगा।

उसी उपलक्ष्य में उसने एक दिन घर में एक पार्टी रखी थी। पार्टी में शामिल सभी लोग खुश थे। सिवाय मां गायत्री देवी को छोड़। बाप लाला था। बनिया था। बहुत सोच विचार कर वह भी पार्टी में शामिल हो गया। आखिर नौकरी वाले बेटे का बाप कहलाने का हक तो उसी का बनता था। बेटे की शादी में मिलने वाली मोटी रकम तो हाथ आया नहीं,अब इसे भी कैसे जाने देता।

उस पार्टी के ठीक डेढ़ माह बाद सुजाता नर्सिंग होम में आशा ने एक सुंदर सी बेटी को जन्म दी। घर में सभी के मुंह लरक गए। सिवाय लक्ष्मी को छोड़ कर। दूसरे दिन हीरालाल जच्चा बच्चा लिए घर आ गया। आंगन में क़दम रखा तो लक्ष्मी बच्ची पर लपकी " घर में परी आ गई..!"

गायत्री देवी ने जुबान कसैला करते हुए मुंह खोल दिया -" हमने क्या कुछ नहीं सोच रखे थे। कैसी कैसी मन्नतें मांग रखी थी। सब बेकार ! .. भाग कर शादी करोगे तो यही होगा। आते ही बेटी टपका दी और हमारी सारी मन्नतों पर पानी फेर दिया ...!"

" मां,मैं जानता हूं, आपका प्रोब्लम बेटियां नहीं, पैसा है। अगर यही दहेज के साथ आती तो आपके मुंह से बतासे निकलते, ऐसी बातें नहीं निकलती ..!"

" तुम चुप रहो और कान खोलकर मेरी बात सुन लो,अगली बार फिर बेटी पैदा की तो खड़े खड़े घर से निकाल दूंगी, बेटियां छापने वाली फेक्ट्री यहां नहीं चलेगी ..!"

लेकिन आदमी जैसा सोचता है वैसा होता नहीं। आशा दूबारा मां बनने वाली थी।

“ काश कोई चमत्कार हो जाए और इस बार बेटा हो जाए ताकि वह अपनी सास की नफरत को प्यार में बदल सके। इसी सोच में आशा के डिलीवरी के दिन नजदीक आते जा रहे थे ।

वक्त का पहिया जैसे फिर से घूमा था। आशा फिर से मां बनी थी। उसने फिर बेटी ही जनी थी। लेकिन उसे जरा भी मलाल नहीं था।

" आज के दौर में बेटी की मां होना खुशी की बात है, !" डाक्टरों ने कहा था।

" बेटियां आज़ हर मोर्चे पर झंडे गाड़ रही है! बधाई हो ! " नर्सों ने की थीं।

हाथ जोड़ कर उसने सबों को धन्यवाद बोला और नवजात बच्ची के गाल पर हाथ सहलाते हुए स्वत : बड़बड़ाने लगी -" सुन रही हो बेटी, डॉक्टर और दीदी लोग क्या कह रहे हैं,पर तुम्हारी दादी को तो पोता चाहिए था,अब पोता मैं कहां से लाऊं ..!"

तभी सामने पति को पाकर अचानक से वह रो पड़ी -" मुझे माफ़ कर देना हीरू, मैं इस बार भी तुम्हारे घर वालों को बेटा नहीं दे पाई ..!"

" नहीं आशु, इस तरह रोना नहीं, बेटा - बेटी पर लिंग भेद करना जाहिलों का काम है। फिर बेटा या बेटी होना,हम इंसानों के बस की बात तो है नहीं। हां बेटियों को हम अच्छी परवरिश दें,यह हमारे हाथ में है और वो हम करेंगे। आज बेटियां किसी से कम नहीं है। हर क्षेत्र में सफलता की मिसाल कायम कर रही हैं बेटियां ..!" उसने आशा के गाल पर ढलक आए आंसुओं को पोंछ डाला था और अस्पताल का बिल जमा करने चला गया।

बेटा बेटी को लेकर उस घर में सास बहू के रिश्तों में पहले से ही जबरदस्त ठनी हुई थी। आज आंगन का रूप अखाड़े में तब्दील होता नजर आ रहा था। तीन साल पहले भी यह आंगन एक बेटी होने का गवाह बन चुका था। तब गायत्री देवी सब पर भारी पड़ी थी। उसका रौद्र रूप आज भी घर वाले भूले नहीं थे। खाश तोर पर आशा तो आज़ तक भूला नहीं पाई थी। उस दिन को और उन शब्दों के मर्म को। गायत्री देवी का रूप देख लगा नहीं था कि कभी वह इस घर की बहू भी थी । आज का समय भी वही था जो तीन साल पहले का था। अब देखना था तीन साल पहले के संवाद आज फिर दुहराए जाएंगे या कोई नयी इबारत लिखी जाएगी। चारों तरफ चुप्पी छाई हुई थी। सब कुछ बदला बदला सा लग रहा था।

इसके पहले शाम को अस्पताल से जच्चा बच्चा लिए हीरालाल घर आ गया था। आंगन में क़दम रखा तब बड़ी बेटी मानसी उसकी गोद में थी और छोटी मां की आंचल में मुलायमदार तौलिए से लिपटी हुई थी।

आशा ने सबसे पहले आंगन की भूतपिंडा के आगे बच्ची की माथा टेका कर शिश नवाई। फिर एक कोने में खड़े ससुर को गोड़ लगी कि और जब वह घर के दरवाज़े के सामने खड़ी सास की तरफ बढ़ी, तीन साल पहले सास के कहे शब्द कानों में गूंजने लगी " याद रखना, दूबारा फिर बेटी पैदा की तो खड़े खड़े घर से धक्के मार कर निकाल दूंगी। वंश बढ़ाने के लिए हमें बेटा ही चाहिए। मेरी यह बात भूलना नहीं...!"

उसके बढ़ते कदम अचानक रूक से गये थे। आगे बढ़ूं या पीछे लौट लूं ! आशा किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ हो गई थी। पैरों पर जंजीर बंधा सा

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-9-4**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 208
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

महसूस करने लगी थी।

गायत्री देवी की हालत भी कुछ अच्छी नहीं थी। चेहरे पर तनाव और दुविधा साफ दिख रहा था। आगे बढ़ कर वह बहू पोती की अगुवाई करें या तीन साल पहले कही अपनी बातों का अमल करें। उसकी बुद्धि कुछ काम नहीं कर रहा था। ऊपर से बेटी लक्ष्मी की चेतावनी ने उसे सकते में डाल दिया था " मैं भी एक बेटी हूं , कल मेरी भी किसी के साथ शादी होगी। मेरे भी बच्चे होंगे और जब मैं भी लगातार दो तीन बेटियां पैदा कर दिए तो ससुराल वाले मुझे घर से नहीं निकालेंगे,इसकी गारंटी कौन देगा.. क्या तुम ..? अगर आज़ भाभी के साथ तुमने कोई ज्यादती की या उसे प्रताड़ित करने की कोशिश भी की तो याद रखना, इस जार का सारा किरासन तेल अपने पर डाल माचिस मार लूंगी। सास, बहुओं को प्रताड़ित करना.बंद करें .!"

बात आज ही दोपहर की है। सुबह ही हीरालाल ने घर में फोन कर दिया था। अस्पताल से छुट्टी मिल गई है। शाम को मां बेटी को लेकर वह घर आ रहा हूं। फोन लक्ष्मी ने ही उठाया था। सो लक्ष्मी सुबह से ही भैया भाभी के कमरे को साफ सफाई करने में लगी थी कि अचानक दोपहर को गायत्री देवी उस कमरे में आई और कहने लगी " कौन सा वीर पैदा कर आ रही है वो महारानी ! जिसकी खातिरदारी में इतना पसीना बहाया जा रहा है..?"

" मां, बहुत हो गया,अब बस भी करो..!"

" तुम्हें क्यों दर्द हो रहा है उस कलमुंही को लेकर..!"

" मां .अ.अ.अ..!" लक्ष्मी चीख पड़ी थी।

शाम ढल चुकी थी। गायत्री देवी दरवाजे के पास ही खड़ी थी। और आशा, उसकी बहू, बिल्कुल उसके सामने खड़ी थी। इन तीन सालों में उसने इस गूंगी पर तेरह सितम ढा चुकी थी। फिर भी आशा ने आज़ तक उफ़ तक नहीं की थी और न किसी बात का आज तक उसने पलट कर जवाब ही दी थी। क्या सोच रही होगी वह मेरे बारे में ! गायत्री देवी खुद को बहुत छोटा और बेहद शर्मिन्दा महसूस करने लगी थी । उधर घर की सारी नजरें उस पर आ टिकी हुई थीं।

पशोपेश में खड़ी गायत्री देवी एक कदम आगे बढ़ी थी। चेहरा तनाव मुक्त नजर आने लगा था। नवरात्रि के दिन छोटी छोटी बच्चियों को खिलाने, उनकी चुहलबाज़ी याद आने लगी थी। बच्चियों के माताओं के खिले खिले चेहरे याद आने लगे थे। जीवन में आज़ तक उसने सिर्फ पैसों को ही महत्व दिया था, रिश्तों को नहीं। सास होती ही हैं, बहुओं पर हुकूमत चलाने के लिए। यह उसने अपनी सास से ही सीखी थी। उसने अपने बीते दिनों को याद किया तो मरहूम सास याद आई।

उन दोनों सास बहू के रिश्तों में कहीं से प्यार का झरना बहते नहीं दिखा। सब कुछ धुंधला धुंधला सा लग रहा था। दुनिया तेजी से बदल रहा था। बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ के नारे लग रहे थे। 15अगस्त, 26 जनवरी के दिन हर साल बेटियों के द्वारा झांकियां निकालना, कितनी अद्भुत और आकर्षित करने वाला होता है। बेटियां कहां किसी से कम हैं। क्रिकेट में, कुश्ती में बेटियां देश की शान बढ़ा रही थीं। राष्ट्रीय झंडे की मान बढ़ा रही थीं। हर तरफ बेटियों के बढ़ते कदमों की शोर थीं। और एक वो है जो दहेज की लालच में बेटी पैदा करने की आड़ में बहू को प्रताड़ित करते चली आ रही है। धिक्कार है उसके जीवन पर ! धिक्कार है उसके सास होने पर! आज उसे खुद को सास कहलाने में भी शर्म महसूस होने लगी थी।

" अगर बेटियां नहीं होगी तो यह संसार नहीं होगा।

बेटियों का बढ़ना ही संसार का बढ़ना है..!" गुरु फकीर चंद की बातें भी कानों में गूंजने लगी थी। उसने नजर उठाकर एक बार बेटी लक्ष्मी की ओर देखा। वह मां को ही देख रही थी। और आश्वस्त भी नजर आ रही थी।

तभी गायत्री देवी फिर आगे बढ़ी थी। इस बार रूकी नहीं,आंखें गीली हो चुकी थी उसकी, आगे बढ़ कर पोती को अपनी गोद में लेकर कह उठी " बहू मुझे माफ़ कर दो, हमने तुम पर बहुत जुल्म किए..!" गायत्री देवी का गला भर आया था।

" मां जी, आप सास नहीं, मां है मेरी और माताएं बेटियों से माफी नहीं मांगती ,उस पर अपनी ममता लुटाती है..!"

आशा सास के कदमों में झुकती चली गई थी।

" लक्ष्मी, देखो हमारे घर में एक और परी आ गई..!" गायत्री देवी ने बेटी लक्ष्मी की ओर देखा और नन्ही सी बच्ची को बेतहाशा चूमने लगी थी। आंगन में खड़े और सिकुड़ चुकी बाकी की आंखों में जुगनू सी चमक आ गई थीं।

हीरालाल ने राहत की सांस ली ।।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

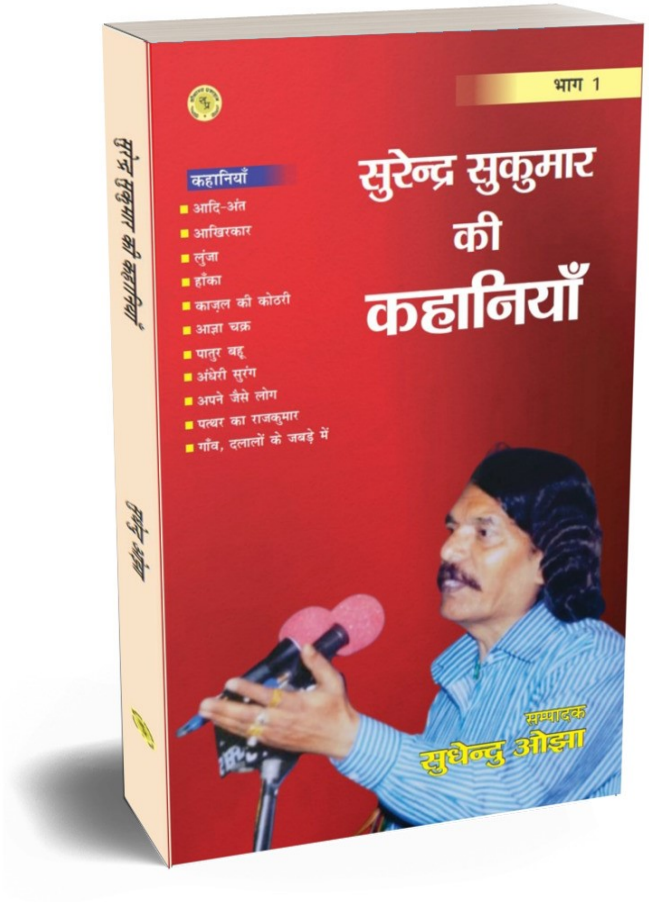

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**

Editor : सुधेन्दु ओझा

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Price : 250/-

Genre Prose

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

संस्मरण : शशिबिन्दु नारायण मिश्र

मनीषी साहित्य- साधक संत हृदय : पं. गणेश दत्त मिश्र 'मदनेश'

(जन्म 1891- मृत्यु 1978) :

संवेदनाओं के विराट मनुष्य एवं कवि पं. गणेश दत्त मिश्र 'मदनेश' जी पर आज कुछ लिखने का मन हो रहा है। 'मदनेश' जी की मनस्विता और विराट व्यक्तित्व को मैंने बचपन में ख़ूब देखा था और तब से लेकर अबतक सामान्य जन से लेकर बहुत बड़े-बड़े विद्वानों से उनकी संत-प्रवृत्ति और मनस्विता के बारे में ख़ूब सुनता भी रहा हूँ। गणेश दत्त मिश्र 'मदनेश' जी का जन्म गोरखपुर के रानापार गाँव में 8 दिसम्बर सन् 1891 ई. में हुआ था।

साहित्य में अनेक अतिविशिष्ट और विलक्षण प्रतिभाएँ प्रदर्शन-प्रियता और चकाचौंध से दूर रहने के कारण अक्सर गुमनाम हो जाती हैं। 'मदनेश' जी एक ऐसे ही साधक थे, जिन्हें भुला दिया गया।

'मदनेश' जी का पूरा जीवन साहित्य का जीवन था, अर्थात् साहित्य को समर्पित था। संस्कृत काव्यशास्त्र में जिसे 'सहृदय' कहा गया है, उसकी चरितार्थता 'मदनेश' जी के जीवन और साहित्य दोनों में दिखाई देती है। औरों के दुःख को अपना दुःख मानना ऐसे लोगों से ही सम्भव है, सम्यक् वेदना और समान वेदना के धरातल पर। भोजपुरी कवि प्रभाकर धर द्विवेदी 'लण्ठ' बताते थे कि जब वे 25-26 वर्ष के थे, कविताएँ लिखने का नया-नया शौक था, तो एक बार 'मदनेश' जी से मिलने गये। रास्ते चलते हुए अचानक एक बैल ने 'मदनेश' जी पर सींग चला दी यानी कि बैल ने उन पर झपट्टा मारा था। 'मदनेश' जी गिरते-गिरते बचे। 'मदनेश' जी के हाथ में छड़ी थी, प्रतिकार कर सकते थे, पर भागे, हाँफते हुए दूर जाकर खड़े हुए और कहा था -हे वृषभदेव ! क्यों नाराज़ हो रहे हैं।" यह कहते हुए 'मदनेश' जी की भाव-भंगिमा में बेहद सहजता और गम्भीरता थी। साधुत्व का चरम उत्कर्ष।

ऐसा आचरण मध्यकाल के बड़े संतों में सुनने को मिलता रहा है। भक्तिकालीन साहित्य ईश्वरी भक्ति से अनुप्राणित होकर लोकजीवन से जुड़ा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में भी हम देखते हैं कि अनेक कवियों / लेखकों के साहित्य का स्रोत लोकजीवन और ईश्वरीय भक्ति से जुड़ा है। ऐसे रचनाकारों के यहाँ आज की तरह राजनीति और बाजार से दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है। इनमें कुछ तो बहुत ही बड़े रचनाकार हुए हैं और बहुतेरे गुमनामी के अँधेरे में खो गये हैं । ऐसे रचनाकारों के लिए ही शायद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा होगा कि, "वास्तविक कवि अपनी सत्ता को लोक सत्ता में लीन किये रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है।"

ऐसे ही मनस्वी साहित्य साधकों में पं. गणेश दत्त मिश्र 'मदनेश' हैं, एक सच्चे अर्थों में मनुष्य, त्याग, सद्विवेक, विशालहृदयता, शास्त्रज्ञता और उदारता की साकार मूर्ति । अनेकानेक कष्टों में भी सदैव मस्ती भरा जीवन, बातचीत में मस्ती और साहित्य में तो थी ही। जिंदादिली रोम-रोम में भरी हुई । विसंगतियों में भी सदैव निरुद्वेग भाव में जीने वाले और स्वार्थ-सम्बन्धों की संकीर्णता से पूरी तरह से मुक्त थे 'मदनेश' जी।

2001 के साहित्य अकादमी भाषा सम्मान से पुरस्कृत हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि मोती बी. ए. ने जनवरी 1995 में 'मदनेश' जी के ज्येष्ठ प्रपौत्र रचनाकार शशिबिन्दु नारायण मिश्र जी को पत्र लिखा था, जिससे 'मदनेश' जी के विराट व्यक्तित्व का पता चलता है, पत्र यहाँ ज्यों का त्यों प्रस्तुत है।

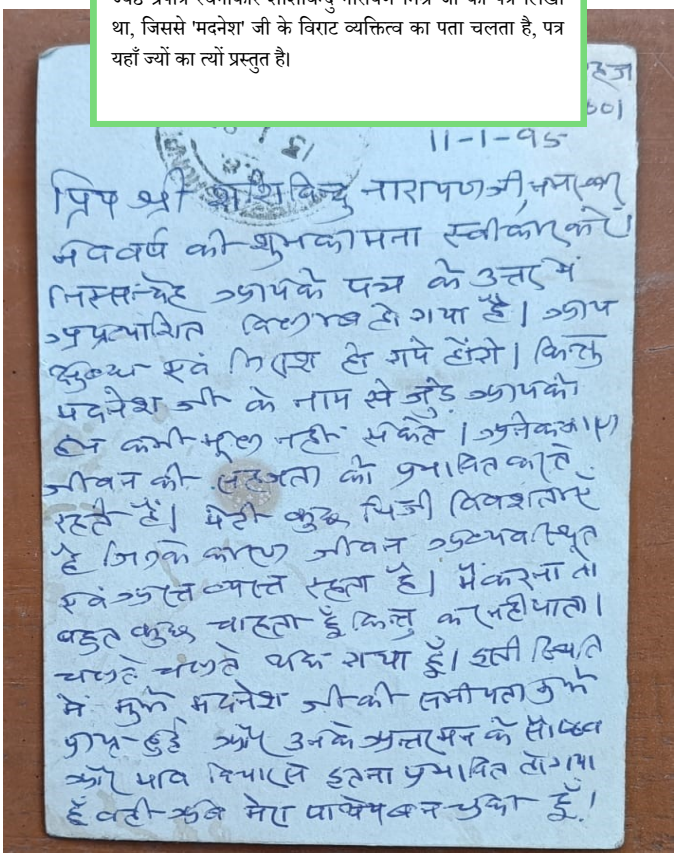

डॉ रामदरश मिश्र जी अपनी आत्मकथा 'सहचर है समय' में एक जगह उल्लेख करते हैं कि - "'मदनेश' जी में फक्कड़ कबीर था, तुलसी की भक्ति थी और थी निराला की क्रान्तिकारी चेतना।" जब से मैंने होश सम्हाला, परिवार में आत्मीय सम्बन्धों के ज्ञान का जब से अहसास होने हुआ, तब से लेकर 8-9 वर्षों की उम्र तक अपनी पीढ़ी में सबसे अधिक 'मदनेश' जी की गोद में बैठने / खेलने / आशीर्वाद पाने का मुझे ही सुख और अवसर मिला है, माता-पिता, दादी, फुआ आदि की गोद से भी ज्यादा। कारण खानदान में अपनी पीढ़ी में मैं ही प्रथम कुलभूषण था। उस समय की जो भी थोड़ी-बहुत स्मृति है- मैंने देखा -- 'मदनेश' जी के पास कवियों और विद्वानों का जमघट लगा रहता था। साहित्य धरातल पर 'मदनेश' जी के सर्वाधिक निकट उस समय के प्रतिष्ठित कवि, 'तन्दुल' खण्डकाव्य के रचयिता कवि रामाधार त्रिपाठी 'जीवन' थे । 'मदनेश' जी के गाँव रानापार और 'जीवन' जी के गाँव गजपुर के बीच की दूरी महज़ 5 या 6 किलोमीटर है। फिर भी 'जीवन' जी साल में दो-तीन बार 'मदनेश' जी के यहाँ रात्रि में विश्राम अवश्य करते थे और देर-रात तक ख़ूब फ़रमाइशी कविताएँ / काव्यपटल पर समस्यापूर्तियाँ होती थीं । ठीक ऐसे ही 'मदनेश' जी साल में एक-दो बार जीवन जी के यहाँ जाते थे, केवल मुलाकात और साहित्य-रसास्वादन करने।

'जीवन' जी उम्र में 'मदनेश' जी से करीब 12-13 वर्ष छोटे थे और मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी' जी द्वारा गजपुर में खोले प्राथमिक स्तर के एक विद्यालय में 'मदनेश' जी के उक्त विद्यालय में शुरुआती दिनों में 'जीवन' जी छात्र थे। मन्नन जी ने विद्यालय चलवाने में सहयोग के लिए मदनेश जी से आग्रह किया था। जीवन' जी जीवन पर्यन्त 'मदनेश' जी को वह आदर देते रहे, जो एक गुरु को दिया जाता है। अक्सर जाड़े की ऋतु में रामाधार त्रिपाठी 'जीवन' जब 'मदनेश' जी के यहाँ रुकते और सुबह उन लोगों के स्नान-ध्यान के बाद जब मैं पिता जी के साथ नाश्ता में ताज़ा भूना हुआ मटर और कचरस लेकर जाता तो उस समय उनमें साहित्य -शास्त्र चर्चा होती रहती या तो फ़रमाइशी कविता। इसकी स्मृति मुझे अच्छी तरह से है। वे दोनों लोग अपने आशीर्वाद से ख़ूब अभिसिंचित करते।

एक दिन का वाकया है, शाम का वक्त था, पिता जी के साथ सायं 4 बजे के बाद स्कूल से मैं घर आया (शायद मैं कक्षा तीन या चार का छात्र रहा होऊँगा) , भूख लगी थी। माँ के पास बाल- सुलभतावश कुछ खाने के लिए खड़ा था। माँ ने कहा कि -"जा पहिले हाथ-गोड़ चिक्कन के धो के आवऽ।" इतने में ही पिता जी माता जी के पास जाकर बोले --"ये मुंसफ का अम्मा ! सुनत हऊ , 'जीवन' जी, जवन बबुआ (मदनेश जी) के लगवाँ आवत रहलें हवें, महीना भर हो गइल उनकर पता नाहीं चलत बाऽ , ऊ कहीं लापता हो गइलें।"

मेरी माता जी अवाक् रह गयीं थीं। यह सुनकर उस दिन 'मदनेश' जी ने भोजन नहीं किया था। अगले दिन मदनेश जी एकदम तड़के जीवन जी के घर गये। मेरे गाँव में मुझे लोग मुंसफ नाम से ही जानते हैं। मेरा पुकार नाम मुंसफ (मुंसिफ) कब और किन परिस्थितियों में 'मदनेश' जी ने रख दिया था। गाँव में मुझे लोग मुंसफ उपनाम से बहुत दिनों तक जानते रहे हैं। इस प्रसंग की चर्चा फिर कभी। घर पर अक्षर ज्ञान के बाद जब कक्षा एक में प्रवेश के लिए चला तो 'मदनेश' जी ने पिता जी से कहा कि -"ये जगदीश ! इस लड़के का नामकरण मैंने 'शशिबिन्दु' किया है। यही नाम स्कूल में और हमेशा के लिए रहेगा।" वहीं कुछ दूरी पर खड़ी माता जी ने पिता जी से फुसफुसाहट में कहा

कि -"यह तो स्त्रियोचित है।" बिना कुछ कहे 'मदनेश' जी को लगा कि इन्हें कुछ नामापत्ति है तो आगे कहा कि -"जगदीश ! स्कूल में पूरा नाम शशिबिन्दु नारायण मिश्र कर देना/लिखा देना।" इस तरह तब से मेरा स्कूली और कागज़ी नाम शशिबिन्दु नारायण मिश्र हुआ। 'मदनेश' जी के मेरे पिता जी सबसे ज्येष्ठ पौत्र (नाती) हैं।

बाद के दिनों में जब मैं स्नातक की पढ़ाई पूरी कर आकाशवाणी गोरखपुर में आकस्मिक उद्घोषक हुआ और रचनात्मक पटल पर आकाशवाणी गोरखपुर के तत्कालीन कार्यक्रम अधिशासी और प्रतिष्ठित भोजपुरी कवि एवं मंच संचालक रवीन्द्र श्रीवास्तव उर्फ 'जुगानी भाई' से जुड़ाव हुआ तो रवीन्द्र श्रीवास्तव जी ने 'जीवन' जी के लापता होने के बारे में बताया कि "1977 की बात है जीवन' जी बस्ती (अब संतकबीरनगर) में रंगपाल जी की मूर्ति का अनावरण और वहीं आयोजित कवि सम्मेलन में गये थे , वहाँ से विदा होने के बाद खलीलाबाद तक पता चला था, फिर वे किधर गये, किसी को भी पता नहीं चला ?" आकाशवाणी से भी इसकी उद्घोषणा कराई गयी, समाचार पत्रों में भी ,पर कुछ भी पता नहीं चला।

उसके बाद से ही हमेशा के लिए लापता हो गये थे। होम्योपैथी चिकित्सक सदाशय शिवरतन लाल जी ने अपनी पूरी सामर्थ्य से 'जीवन' जी की तलाश कराई, पर पता नहीं चल सका, उसके बाद डॉ शिवरतन लाल जी ने अपनी होम्योपैथी चिकित्सा की प्रैक्टिस ही छोड़ दी थी और वे संत हो गये थे। 'जीवन' जी के बारे में उस समय के गोरखपुर के मशहूर चिकित्सक शिवरतन लाल से 'मदनेश' जी का हुआ पत्र-व्यवहार भी मैंने बाद के दिनों में होश सम्हालने पर देखा और पढ़ा है। 'मदनेश' जी के जन्म के पाँच महीने के भीतर ही उनके पिता संस्कृत और उर्दू के प्रकाण्ड विद्वान् पं. महादेव मिश्र जी और उनकी माता शीलवन्ता देवी दोनों का निधन हो गया था। 'मदनेश' जी से पहले उनके दो या तीन भाइयों का बचपन में ही निधन हो गया था, लेकिन उनकी दो सगी बड़ी बहनें सम्पत्ति और पार्वती थीं ।

बालक गणेश का पालन-पोषण रानापार में ही उनकी सगी दादी (ईया) और बड़ी बहन पार्वती ने किया था। गणेश दत्त की बड़ी बहन पार्वती जो कि देवरिया जिले के भटजमुआव गाँव में एक पाण्डेय परिवार में रामसुभग पाण्डेय से व्याही गयी थीं, भरी जवानी में विधवा हो गयी थीं, दोबारा विवाह के बारे में कभी सोचा भी नहीं, शायद उस दौर की ये विशेषता रही हो या समय की देन या उनकी आचारशीलता, जो भी हो। 'गणेश दत्त' जी की बड़ी बहन पार्वती, जिन्हें उनकी दादी पर्वत्ता कहकर स्नेह देती थीं,ने रानापार में ही रहकर अपने छोटे भाई गणेश की उत्कर्षता और उन्हें सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने में ही अपनी जिंदगी खपा दी। एक समय ऐसा संकट आया था कि परिवार में पाँच महीने के शिशु गणेश दत्त के अलावा कोई पुरुष बचा ही नहीं था, केवल उनकी दो बहनें और उनकी दादी थीं। कई मौतें साथ-साथ हो गयी थीं।

'मदनेश' जी की दादी, जिन्हें गाँव के छोटे-बड़े सभी लोग 'मिसिराइन-ईया' कहकर आदर देते थे। 'मदनेश' जी को पाँच महीने की उम्र में गोद में लेकर उनके हाथ से उन्नतिशील वंशवृद्धि के लिए गाँव के पूरब तीन बीघे ज़मीन में एक विशाल बागीचा लगवाया था। उनकी दादी हर पौधे को पाँच महीने के शिशु गणेश दत्त से स्पर्श करवातीं और पौधा तब लगाया जाता। 'मिसिराइन-ईया' के पति पं. रामलोचन मिश्र और उनके तीनों पुत्र असमय दिवंगत हो गये थे। पं. रामलोचन मिश्र की धर्मपत्नी 'मिसिराइन-ईया' (इनका नाम अब पिता जी को भी विस्मृत हो गया है) के दूसरे पुत्र पं. महादेव मिश्र को दो पुत्रियां और एक पुत्र गणेश दत्त पैदा हुए थे।

मिसिराइन ईया के पति पं. रामलोचन मिश्र के गजाईकोल में एक निषाद परिवार में दीक्षा-शिष्य थे, उनके दीक्षा शिष्य के एक पुत्र थे रामटहल केवट। रामटहल केवट ने दिन-रात एक कर पूरे मनोयोग से पाँच वर्षों तक लगातार बागीचे की सेवा और रक्षा की और वह बागीचा भव्य रूप में तैयार हो गया। 100 वर्षों तक उस विशाल बगीचे को लोग 'मिसिराइन' के बारी' के नाम से ही जानते रहे। बगीचे की विशालता-भव्यता और आम्रफलों के आकार और स्वाद की विचित्रता का आज भी लोग स्मरण करते हैं। गुण व रंग के आधार पर आम्रफलों के नाम भोजपुरी में 'सफ़ेदहवा, रोइनिहियवा, करियवा, सेनुरियहवा, चीनियहवा, मल्दहवा, खटहवा आदि थे। पेड़ों की विशालता का क्या कहना ? वैसे विशाल आम के वृक्ष हमने नहीं देखे है। इस व्यक्ति-व्यंजक आलेख के बहाने मैं रामटहल केवट को भी कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करता हूँ। रामटहल मिसिराइन ईया के दूसरे पुत्र महादेव मिश्र से उम्र में 8-10 वर्ष छोटे थे, अतः उन्हें वे बेटे जैसा स्नेह देती थीं।

'मदनेश' जी की दादी 'मिसिराइन ईया' भी बेहद दृढ़निश्चयी, विवेकशीला और आचारशीला थीं। 'मदनेश' जी से पहले मैं उनकी दादी जी को हजार बार शीश नवाता हूँ। गणेश दत्त मिश्र 'मदनेश' की पहली पत्नी से केवल दो या तीन पुत्रियाँ हुईं , उसके बाद पत्नी असमय मर गयी थीं और उनकी दूसरी धर्मपत्नी गुलाबी देवी से उत्पन्न तीन पुत्रों में सर्वाधिक योग्य और पढ़े-लिखे पुत्र रामानुज मिश्र थे। रामानुज मिश्र बहुत ही प्रतिभाशाली और अंग्रेजी/ उर्दू के प्रकाण्ड अध्येता थे। पं. विद्यानिवास मिश्र ने प्राथमिक विद्यालय बिशुनपुरा में और डॉ रामदरश मिश्र ने मिडिल स्कूल बिशुनपुरा और बरहज बाजार में इंटर की पढ़ाई में रामानुज मिश्र के सहपाठी होने की बात कही है। रामानुज मिश्र 1943 में आगरा विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद सेना में अफसर हो गये थे, लेकिन 10 वर्षों की सेवा के बाद उनका

मस्तिष्क असंतुलित हो गया था। बाद में दिमाग संतुलित होने पर इंटर कॉलेज बिशुनपुरा में विद्यालय के संस्थापक प्रधानाचार्य पं महीपति नारायण मिश्र के विशेष आग्रह पर अंग्रेजी विषय का दो-तीन वर्षों तक अध्यापन किया था। रामानुज मिश्र द्वारा अंग्रेजी विषय के कुशल अध्यापन की बात उस समय 1962 से 1965 तक हाईस्कूल में छात्र रहे महातम तिवारी, केदारनाथ निषाद और श्यामलाल यादव आज भी बताते हैं।

बेहद होनहार और परिवार के लिए एकमात्र आशा की किरण रामानुज की इस दशा से गणेश दत्त मिश्र 'मदनेश' को टूटने -बिखरने से ईश्वरीय भक्ति और साहित्य साधना ने बचा लिया था। रामानुज मिश्र और सुमित्रा देवी के ज्येष्ठ पुत्र मेरे पिता श्री जगदीश नारायण मिश्र जी हैं।

गणेश दत्त मिश्र की बड़ी बहन पार्वती का स्मरण मेरे 82 वर्षीय पिता श्री जगदीश नारायण मिश्र जी को अच्छी तरह से आज भी है, रानापार में ही 1961 में 75 वर्ष की आयु में वे गोलोकवासी हुई थीं। आज सोचता हूँ कि यदि मदनेश जी की दादी न होती तो गणेश दत्त का क्या होता ? प्रोफ़ेसर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी 'दस्तावेज़' त्रयमासिक के एक सम्पादकीय में प्रसंगवश लिखते हैं - "जब तक प्रकृति को अपने जातक से कुछ कराना होता है,तब तक उसकी रक्षा करती है।"

जीवन की बेहद विपरीत परिस्थितियों और भीषण दुःखों में अक्सर व्यक्ति टूटकर बिखर जाता है, हताश-निराश हो जाता है, आत्महत्या तक पहुँचता है, लेकिन अतिशय प्रतिकूल परिस्थितियों में भी थोड़ा-सा भी भावनात्मक वातावरण मिलने पर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ने वाला व्यक्ति महत्तम ऊँचाइयाँ भी प्राप्त कर लेता है। विपत्तिग्रस्तता के बावजूद गणेश दत्त जी कभी हताश या उदास न हुए, हमेशा जिंदादिल बने रहे।

गणेश दत्त के जीवन और साहित्य दोनों पर उनकी दादी और बड़ी बहन पार्वती की धर्मपरायणता, पूजा-पाठ और ईश्वरीय भक्ति का ख़ूब प्रभाव पड़ा था। 'मदनेश' जी बहुत ही विनोदी स्वभाव के थे। देश के जाने-माने साहित्यकार पं. विद्यानिवास मिश्र ने अपने एक इण्टरव्यू में बताया था कि -"मदनेश जी की बातचीत हमेशा फ़लसफ़ा अंदाज में होती थी। कोई बहुत पढ़ा-लिखा हो या गाँव का अनपढ़-गँवार या मजदूर।" (देखिए - उत्तरप्रदेश साहित्य-संस्कृति मासिक का अंक जनवरी 1999)।

दिसम्बर 1997 में मदनेश जी के गाँव पर उनकी स्मृति में क्षेत्र के पढ़े-लिखे प्रतिष्ठित लोगों ने एक बड़ा साहित्यिक आयोजन कराया था, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में हिन्दी के प्रखर समालोचक एवं कथाकार प्रोफ़ेसर रामदेव शुक्ल जी पधारे थे। शुक्ल जी ने अनेक वक्ताओं को सुनने के बाद अपने सम्बोधन में कहा था कि -"आप लोगों को सुनकर लगता है कि 'मदनेश' जी मनुष्य के रूप में बहुत बड़े आदमी रहे होंगे। गाँव को आज भी अपने साहित्य में जीने वाले डॉ रामदरश मिश्र जी मदनेश जी को हमेशा अपने प्रारम्भिक काव्य-गुरु के रूप में स्मरण करते हैं।"

भोजपुरी के बड़े हस्ताक्षर रवीन्द्र श्रीवास्तव उर्फ जुगानी भाई कहते हैं कि "जीवन' जी आकाशवाणी में जब भी आये तो 'मदनेश' जी की विशालहृदयता, विशद स्वाध्याय और संत-प्रवृत्ति की चर्चा एक बार जरूर करते थे।" उन क्षणों का स्मरण करते हुए रवीन्द्र श्रीवास्तव आज कहते हैं कि-- " 'मदनेश' जी विलक्षण प्रतिभा के ऐसे आत्मकेंद्रित रचनाकार थे, जो बहुत कुछ जानते हुए भी उसका प्रदर्शन कत्तई नहीं करना चाहते थे और इसीलिए अनेक आग्रहों पर वे कभी आकाशवाणी नहीं आये। 'मदनेश' जी के अतिरिक्त उन्हीं जैसे संत - प्रवृत्ति के उस युग में बाँसगाँव के आसपास के कोई 'भौम' जी उपनाम के एक मनस्वी कवि थे, जो मेरे लाख कोशिशों के बावजूद कभी आकाशवाणी नहीं आये। संत साहित्य- साधकों और सामान्य कवियों में बहुत अन्तर होता है।"

सुविख्यात साहित्यकार पद्मश्री प्रोफ़ेसर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी भी कहते हैं ---" 'मदनेश' जी से मेरी कोई मुलाकात तो नहीं हो पायी है , लेकिन पं. विद्यानिवास मिश्र जी और डॉ रामदरश मिश्र जी से उनके बारे में बहुत कुछ सुनने को मिला है और उन लोगों का 'मदनेश' जी के प्रति सदैव कृतज्ञ भाव रहा है। रामाधार त्रिपाठी 'जीवन' जी मेरे बेतियाहाता आवास पर थोड़ी-थोड़ी देर के लिए दो बार आये थे तथा एक बार वैद्य शिवरतन लाल जी के घर पर 'जीवन' जी से भेंट हुई थी, वहीं पर उन लोगों से 'मदनेश' जी के विशद स्वाध्याय, विशालहृदयता और काव्य-प्रतिभा के बारे में सुना।"

2001 के साहित्य अकादमी भाषा सम्मान से पुरस्कृत लब्धप्रतिष्ठ कवि मोती बी. ए. ने 11 जनवरी 1995 को मुझे एक पत्र लिखा था,वे लिखते हैं कि --"मदनेश जी के अन्तर्मन के सौष्ठव और भाव विचार से मैं इतना प्रभावित हुआ हूँ कि वह मेरे लिए पाथेय बन चुका है।"

'मदनेश जी का सितम्बर 1978 में जब 87 वर्ष की अवस्था में निधन हुआ तो वे एक दिन पहले तक पूरी तरह से स्वस्थ थे। आसन-व्यायाम, पूजापाठादि सब किया था। पूजा-पाठ के बाद कहा था कि -"87 साल पूरे होने में ढाई महीने कम हैं।" वहाँ उस समय कोई था नहीं, दूर से सुनकर किसी के द्वारा टोकने पर कि यहाँ तो कोई नहीं है,आप किससे कह रहे थे।" तो 'मदनेश' जी का उत्तर था -"भगवान से....।" फिर भोजन कर हाथ-मुँह धोया , कुछ कदम आगे बढ़े ही थे कि अचेत हो गये थे, उसके बाद उनकी किसी से कोई बात नहीं हो सकी थी। अस्पताल ले जाते समय वे गोलोकवासी हो गये थे।

'मदनेश' जी के निधन पर जिस तरह से जनमानस दुःखी, उदास और शोकविह्वल था,वैसी उदासी और दुःख गाँव में फिर अन्य किसी के निधन पर नहीं देखा गया। गाँव का हर जन रोया था। 'मदनेश' जी से उनके जीवनपर्यंत गाँव का छोटा या बड़ा कोई भी कभी असंतुष्ट नहीं हुआ, कारण था उनका विशालहृदय और त्याग भाव। उनकी अहंकार शून्यता और सदा प्रसन्न रहने वाली मस्ती को लोग कभी भुला नहीं सके। जून 2020 में डॉ रामदरश मिश्र जी से मिलने मैं दिल्ली गया था। उनके साथ दिन भर का समय बीता था। उनकी सुपुत्री स्मिता जी, उनके द्वितीय सुपुत्र शशांक जी घण्टों साथ रहे। रामदरश जी और उनकी धर्मपत्नी सरस्वती जी के साथ मेरे हर बातचीत की पूरी रिकार्डिंग एण्ड्रायड मोबाइल में हुई है। उनकी धर्मपत्नी सरस्वती जी का मुझसे कहना कि -"बेटा ! ऐसा कोई दिन नहीं होता है कि मेरे परिवार में 'मदनेश' जी की चर्चा न होती हो।" यह वाक्य मुझे बहुत कुछ सोचने -विचारने पर मजबूर करता है।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान फरवरी 1922 में घटी चौरीचौरा की ऐतिहासिक घटना के समय 'मदनेश' जी लगभग 30 वर्ष के थे। मदनेश जी पर देशभक्ति का रंग भी ख़ूब चढ़ा है, चौरीचौरा की ऐतिहासिक घटना पर कवि मन का उद्गार ज़रा इन पंक्तियों में देखें -

"व्यापारी बनकर ये आये, सरकारी बनना कब सीखा।
अपराध भी करना न भूले,दुर्गति भारत की तब दीखा।
.... ।
भारत माँ के शुभचिंतक तब इसे आज़ाद कराने को,
ले प्राण हथेली पर दौड़े, माता की लाज बचाने को।
उद्देश्य यही ले कर के,चौरी-चौरा का काण्ड हुआ,
आग लगी जब थाने में,मानो विनष्ट ब्रह्माण्ड हुआ।।"

अंग्रेज यहाँ व्यापार करने के लिए आये थे, पर यहाँ के शासकों की दुर्बलताओं और उनकी आपसी फूट ने अंग्रेजों को शासन करने का अवसर प्रदान किया।

इससे पहले जब महात्मा गाँधी 1921 में गोरखपुर बाले मियां के मैदान में अपने सत्याग्रह आंदोलनों के सिलसिले में आये थे, तो 'मदनेश' जी उनसे मिलने गये थे। प्रतिभाशाली और वास्तविक रचनाकार तो वही है कि जो देश और समाज के हितों को आत्मसात कर चलता है। मुझे महान् आश्चर्य होता है कि 'मदनेश' जी अपनी मृत्यु के बाद वर्षों तक वे मेरे स्वप्न में आते रहे हैं।

'मदनेश' जी की सबसे छोटी सुपुत्री स्वर्गीया फूलमती शुक्ला जी एक संस्मरण मुझे बहुत रुचिपूर्वक सुनाती थीं। उन्हीं के शब्दों में -"15 अगस्त 1947 को देश आज़ाद हो गया था । पूरे देश में जश्न मनाया जा रहा था। मेरे घर में भी सभी लोग बेहद खुश थे। गजपुर के 'जीवन' जी रानापार में 'मदनेश' जी से मिलने आये थे, शायद आज़ादी की खुशी बाँटने। उस वक्त विपन्न देश को सर्वाधिक आवश्यकता शिक्षा और चिकित्सा की थी।

स्वागत के बाद बइठकी जमी, कविता का दौर शुरू। एक पंक्ति 'मदनेश' जी तो दूसरी 'जीवन' जी कहते --" बच्चों में ऐसा नालेज हो। हाईस्कूल या इंटरकॉलेज हो.....।" बहुत देर तक यह आयोजन चलता रहा । दोनों में विलक्षण काव्य-प्रतिभा थी । लोग बताते हैं कि उसी बइठकी के कुछ दिनों बाद पं. वंशराज त्रिपाठी, कल्पनाथ मिश्र , कोदई प्रसाद राय व शंकर सिंह ठकुराई आदि क्षेत्र के दर्जनों प्रतिष्ठित - त्यागी लोगों को बुलाया गया था और 'जनता विद्या विकास समिति बिशुनपुरा गोरखपुर' नामक एक शैक्षिक प्रबन्ध समिति की स्थापना हुई थी , उक्त समिति की कार्यकारिणी के प्रथम अध्यक्ष पं. गणेश दत्त मिश्र 'मदनेश' जी सर्वसम्मति से बने थे और प्रथम मंत्री / प्रबन्धक पं. वंशराज त्रिपाठी चुने गये थे। इसी समिति के निर्देशन में आज भी स्वावलम्बी इंटर कॉलेज बिशुनपुरा, गोरखपुर गतिशील है।

'मदनेश' जी छांदस चेतना के महत्तम कवि थे। तीसरे-चौथे दशक में गोरखपुर से निकलने वाली 'सरयूपारीण' पत्रिका , जिसके तत्कालीन सम्पादक हरिश्चन्द्र पति त्रिपाठी थे, जो कि बाद में उच्च न्यायालय में न्यायाधीश हो गये थे । उक्त सरयूपारीण पत्रिका के फरवरी 1941 के अंक के मुखपृष्ठ पर 'मदनेश' जी की वसंत ऋतु पर बहुत ही सुन्दर तीन कवित्त छंदों में प्रकाशित कविता मुझे हाल ही बहुत ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मिली है, उसके एक छंद का यहाँ अवलोकन करें, इसमें प्रकृति का अत्यंत खूबसूरत मानवीकरण दर्शनीय है---

"मकरंद विंदु से रसा में रम्य रस हुआ ,
कोटि कलानिधि की कलानिधि ने पायी है।
नव्य-नव्य ललित दलों का परिधान मञ्जु,
पेन्हें दिशा अप्सरा-सी बनी हुई आयी है।
सुरभि प्रदान सिरी गति सदा गति का,
पुण्य पद्मिनी सी होती हुई मन भायी है।
शालिनी-सी छुटी छटा 'मदनेश' कानन की,
डाली डली अपनी कली की भर लायी है।"

इसी अंक में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पर 'मदनेश' जी का एक गद्यात्मक व्यक्तिव्यंजक आलेख भी है। सरयूपारीण के इसी अंक में देश के जाने-माने साहित्यकार डॉ रामदरश मिश्र की पहली कविता चाँद शीर्षक की छपी है, जो छायावाद का प्रभाव समेटे हुए है।

उक्त कवित्त छंद को संस्मृति सुधा के सम्पादक रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी ने भी अपनी पत्रिका के फरवरी 2000 के अंक में मुझसे बहुत आग्रह करके/अनुमति लेकर प्रकाशित किया है।

हिन्दी छायावादी काव्यधारा के बड़े कवि इस भावभूमि की कविताएँ करते रहे हैं। आप देख सकते हैं कि कवि मदनेश जी ने प्रकृति का / वसंत ऋतु का कितना सुन्दर मानवीकरण किया है। इससे लगता है कि 'मदनेश' जी प्रकृति के रमणीय, कोमल और मधुर पक्ष को ग्रहण करने में कितने सिद्धहस्त हैं। 'मदनेश' जी की कविताओं में छांदस् आग्रह सर्वत्र दिखाई देता है, वे छंदविहीन कविताओं के विरोधी थे। अतुकान्त कविताओं में भी छंद का प्रवाह हो सकता है, ऐसा वे मानते हैं।

आज़ादी के बाद देश और समाज में छूआछूत समाप्त करने और सामाजिक सौहार्द्र कायम करने की महती आवश्यकता थी। मदनेश जी ने आजादी के बाद 1948 में एक फाग-गीत रचा था। उसकी खुद धुन बनाई थी और गायकों की एक मण्डली बनाकर उन्हें गाँव-गाँव में कीर्तन द्वारा गाने के लिए प्रेरित किया। इस गीत को गायक मण्डली के ही एक गायक कलाकार, प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक रहे पं. वीरेन्द्र प्रसाद मिश्र ने मुझको 'मदनेश' जी के प्रति मेरी श्रद्धा और उनपर कार्य करता हुआ देखकर अपनी मृत्यु से कुछ वर्षों पूर्व मुझे गाकर सुनाया और मेरी डायरी में लिखवाया भी। उक्त फाग-गीत 'वसंत-मनाओ' शीर्षक का है और बहुत लम्बा है। इस फाग-गीत में सामाजिक समरसता का भाव तो है ही, आज़ादी का जश्न भी है, फाग का रंग और महात्मा गाँधी की मृत्यु पश्चात् श्रद्धा-सुमन भी । गीत की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

"वसंत मनाओ,
आओ नवयुवक समाज वसंत मनाओ,
तजो उमंग राक्षसी होली का सर्वांग जलाओ।
अपने इस स्वतंत्र भारत में ले इसकी राख उड़ाओ।
वसंत मनाओ,
आओ नवयुवक समाज वसंत मनाओ।।
सत्य-अहिंसा के स्वर में अपनी शांति रागिनी गाओ।
दलितों और अछूतों को निज 'मदनेश' गले से लगाओ।
वसंत मनाओ।
आओ नवयुवक समाज वसंत मनाओ।।"

मुझे परम प्रसन्नता है एवं सुखद संयोग भी कि इस आलेख के बहाने किसी साहित्य साधक का व्यक्तित्व और कृतित्व सुधी पाठकों के सामने आ रहा है और साहित्येतिहास का हिस्सा भी।

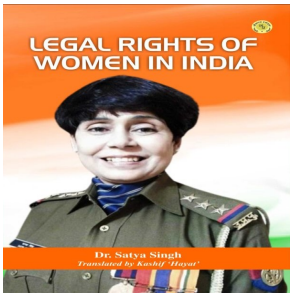

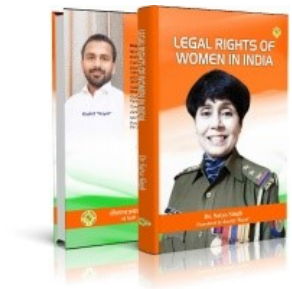

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

माले यात्रा की यादें

'सागर की लहरें जब पीठ पीछे उमड़ती-घुमड़ती लहराती थीं.
सदैव एक नये सृजन का आहार-विहार मन में छोड़ जाती थीं.
नन्हें द्वीप की चारों ओर की उमस-तमस मेघों में समा जाती थीं.

सागर का खारापन,मेघों का आवारापन नयन भिगो जाता था.
उज्जवल नयनों के स्वप्नों को न जाने कब-क्यों सजा जाता था.
प्रवास-सुख, आवास-दीपोत्सव, मन-मंदिर को लुभा जाता था'.

सन् 2002 में मेरी डॉक्टर बेटी गरिमा और उनके पति डॉक्टर अरिजीत की पोस्टिंग मालदीव के शवयानी अटोल में हुई.उनकी 5 महीने की बिटिया थी तो देखभाल के लिये हम नानू-नानी को जाना जरूरी था.

तैयारी के लिये हमारे पास सिर्फ़ दो दिन थे.जैसे-तैसे प्लेन से हम सुबह 6 बजे माले पहुँचे तो सामने शिशु सूरज बड़ी सी सिंदूरी आभा लिये विशाल सागर के ऊपर हमारे स्वागत को तैयार खड़ा था.

अभी हम प्रकृति की अद्भुत लीला का रसास्वादन कर ही रहे थे कि संदेश मिला कि गेस्ट हाउस से कार हमें लेने के लिये एअरपोर्ट पर

खड़ी है,जिसमें बैठ कर हम गेस्ट हाउस आ गये.

दो दिन माले घूम कर तथा कुछ औपचारिकताएँ पूरी कर हमें शवयानी अटोल के लिये नौका से रवाना होना था.करीब तीन घंटे की बोट-यात्रा के समय बड़ी-बड़ी मछलियों से साक्षात्कार करते हुए जब वहाँ पहुँचे तो अटोल-चीफ़ के साथ बहुत से लोग हमें लेने आये हुए थे.वहाँ भी हमें गेस्टहाउस में ठहराया गया जो समुद्र के एकदम पास था पर वहाँ मेरी नातिन बीमार पड़ गयी तो हम सब बहुत घबरा गये.दामाद जी ने किसी तरह अपना तबादला दो दिन के अंदर कुल्हुद्हुफुशी में करवा लिया जहाँ अपेक्षाकृत ज्यादा सुविधाएँ थीं.

वहाँ सागर तट हमारे बंगलेनुमा घर से केवल 7 मिनट की दूरी पर था.

जब मैं जेट्टी पर समुद्र की ओर पीठ करके बैठ जाती तो लगता जैसे सारा समुद्र मेरे पीठ को अवलम्बन दे रहा है और मेरी काव्य रचना यात्रा का आवाह्न कर रहा है.वहीं जब मैं विशाल सागर के सामने मुँह करके बैठती तो मानो सारा समुन्दर मेरे भीतर समा जाता.जेट्टी पर बैठ कर मैंने बहुत सी कविताएँ लिखीं.

एक सच्ची घटना से प्रेरित हो कर, कल्पना की उड़ान भरते हुए कहानी भी लिखी 'ढलता सूरज उगती कोंपल', जो बाद में 'राजस्थान पत्रिका' में छपी.

वहाँ रह कर वहाँ के लोगों के बारे में काफी कुछ जानने को मिला. ज्यादातर लोग मछली पकड़ने का काम करते हैं.काफ़ी राशन सरकार की ओर से फ्री मिल जाता है. वही उनका भोजन होता है. हर द्वीप में नारियल/स्वांजना और पपीते के पेड़ काफ़ी दिखाई दिये. हर अटोल में एक स्कूल और एक अस्पताल अवश्य होता है. लगभग सभी शिक्षक और डॉक्टर बाहर के देशों के होते हैं जिन्हें अच्छा वेतन और रहने की सुविधाएँ सरकार द्वारा दी जाती हैं. राशन और सब्जी़ की छोटी दुकानें हर द्वीप/अटोल में मिल जाती हैं. वहाँ हमने पाँच महीने ऐसे बिताये मानो पिकनिक के लिए आये हों.वहाँ से वापस आने को मन तो नहीं करता था पर दामाद जी को नौकरी के लिये इंग्लैंड से बुलावा आ गया तो हमें वापस आना पड़ा.

यह संस्मरण मेरे दिल के बहुत करीब है क्योंकि मालदीव में रहकर मेरी रचनात्मकता खूब फूली-फली और पल्लवित-पोषित हुई साथ में नन्हीं नातिन के साथ मेरा प्यार और संबंध और प्रगाढ़ होता गया जो आज तक कायम है.

शील निगम

(1)
पार्ट टाइम जॉब
इन्टरनेट की दुनिया में
आकर मैंने बहुत कुछ सीखा
जैसे कि
कैसे किया जाता है
नज़र अंदाज़

झूठ बोलते
पकड़ा गया समाज
फेसबुक और इंस्टाग्राम के
मैसेज रिक्वेस्ट में पड़े रहते हैं
पार्ट टाइम जॉब।

क्यों इतना जरूरी है
अतिरिक्त खर्च
मोटर गाड़ी तेल पानी
सबको चाहिए
पार्ट टाइम जॉब।

समय के बाद
कौन लेता है समय
शायद आवश्यकताएं
वास्तव में वह ही ले सकती हैं
पार्ट टाइम जॉब

-आलोक रंजन

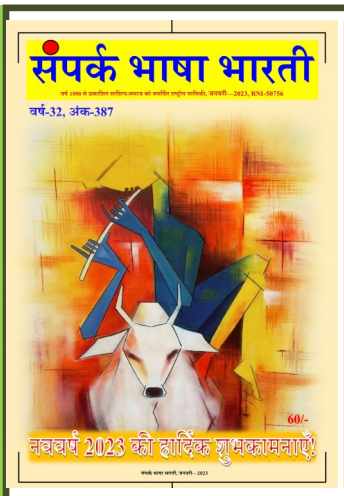

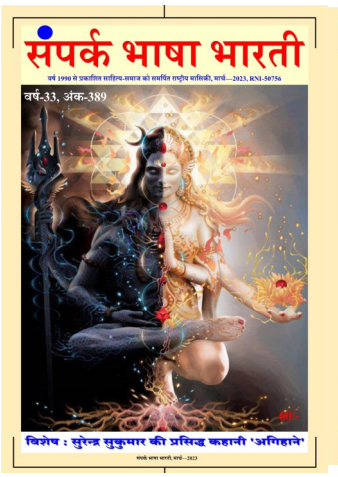

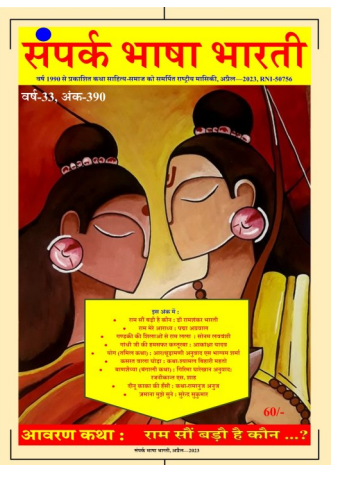

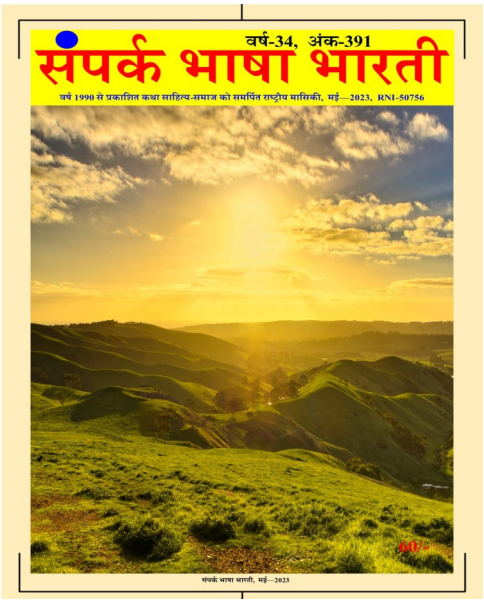

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com